

यूनियन धारा Union Dhara

जिल्द. 44, सं. 1 Vol.XXXXIV No.1, मुंबई जनवरी - मार्च, 2019



ऋण अनुश्रवण
Credit Monitoring



समीक्षा

REVIEW



BANK

STRESS
ASSETS

दबावग्रस्त आस्तियां



SLIPPAGE
स्लिपेज

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बँक
ऑफ इंडिया



Union Bank
of India

अनुक्रमिका Contents

यूनियन धारा UNION DHARA
जनवरी-मार्च 2019 January-March 2019

प्रकाशन तिथि : 13.05.2019

महाप्रबंधक (मा. सं.)
ब्रजेश्वर शर्मा
General Manager (HR)
Brajeshwar Sharma

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे
Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
अविनाश कुमार सिंह
के. पी. आचार्य
नितेश रंजन
राजेश कुमार

Editorial Advisors
Avinash Kumar Singh
K. P. Acharya
Nitesh Ranjan
Rajesh Kumar

Printed and published by Dr. Sulabha Kore
on behalf of Union Bank of India and
printed at JAYANT PRINTERY LLP
352-54, Murlidhar Temple Compound,
Near Thakurdwar Post Office,
J.S.S. Road, Mumbai-400002.
and published at Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - Dr. Sulabha Kore
E-mail : sulabhakore@unionbankofindia.com

Our Address : Union Dhara,
11th Floor, Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.

E-mail : uniondhara@unionbankofindia.com
Mob. No. 9820468919
Tel.: 22896595 / 22896545 / 22896590

| | | | |
|---|-------|--|-------|
| • परिदृश्य | 3 | • यथा मॉनिटरिंग तथा तकनीकी | 41 |
| • स्वागत/अलविदा/सायोनारा | 4 | • Legally Speaking | 42 |
| • महाप्रबंधक की डेस्क से... | 5-6 | • Importance of Timely... | 43 |
| • संपादकीय | 7 | • Kala Ghoda Festival | 44-45 |
| • साहित्य जगत से... | 8-9 | • अभावग्रस्त ऋण खातों में वसूली | 46 |
| • काव्यधारा | 10-11 | • सीएमआरडी वेब पोर्टल | 47 |
| • Effective credit monitoring in retail and MSME | 12-13 | • Why credit monitoring is need of the hour | 48 |
| • Credit monitoring/ प्रभावी ऋण अनुश्रवण | 14-15 | • Technology as a Game Changer in Credit Monitoring | 49 |
| • Credit monitoring/ Practical approach | 16-17 | • क्या ऋण अनुश्रवण... | 50-51 |
| • ऋण खाते का जीवन चक्र एवं ऋण अनुश्रवण के चरण | 18-20 | • Resolution of Stressed... | 51-52 |
| • Defaulters' List And Resolution Mechanism | 21 | • शुभमस्तु/शिखर की ओर/ Sportingly Yours | 53 |
| • Importance of timely monitoring | 22-23 | • Due Diligence | 54-55 |
| • CMRD Visit - A way to support Branches | 24-25 | • Face in UB Crowd | 56-57 |
| • बढ़ती दबावग्रस्त आस्ति/ मॉनिटरिंग नानी | 26 | • मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट | 58 |
| • What is Stressed Asset | 27 | • ऋण अनुश्रवण | 59 |
| • Future of Credit Monitoring | 28 | • सफलता की कहानी | 60-61 |
| • Match the Parameter | 29 | • प्रावधान | 62 |
| • Tools for effective Credit | 30 | • गुणवत्तापूर्ण आस्तियों में वृद्धि | 63 |
| • Loan Account - Life Cycle | 31 | • Credit Monitoring Need Of The Hour | 64-65 |
| • बैंक के तुलनपत्र में आस्ति गुणवत्ता पर ऋण | 32-33 | • UniOne Diary | 66 |
| • लाल संकेत खाते (आरएफए) | 34 | • संवाददाता सम्मेलन-2019 | 67 |
| • सीएमआरडी,कें.का.की गतिविधियां/पहल | 35 | • बालप्रतिभा | 68 |
| • What's New | 36-38 | • बधाई/हमें गर्व हैं/चरक का कोना | 69 |
| • सीएमआरडी वेब पोर्टल | | • Awards & Accolades/ पुरस्कार और सम्मान | 70-71 |
| • संभाव्य दबावग्रस्त खाता (पीएसए) | | • समाचार दर्शन | 72-83 |
| • सीएमआरडी पोर्टल पर उपलब्ध | | • सेवानिवृत्त जीवन से... | 84 |
| • सीएमआरडी वेब पोर्टल | | • प्रतियोगिता क्र. 149/परिणाम | 85 |
| • One time restructuring | 39 | • हेल्थ टिप्स/व्यंजन | 86 |
| • CMRD Web Portal/ Asset Quality | 40 | • आपकी पाती | 87 |
| | | • Back Cover | 88 |



इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at JAYANT PRINTERY L.L.P., Mumbai-400002.

परिदृश्य PERSPECTIVE



प्रिय यूनियनाइट्स,

भारतीय बैंकिंग अधिकतर आस्तियों पर आधारित कारोबार की मुख्य प्रवृत्ति है, पैसा उधार देना और समय के साथ उस पैसे को मूल और ब्याज के साथ किशतों में वसूलना. अतः सही ग्राहक चुनना, उचित रूप से उनमें व्यास जोखिम का आंकलन करना और ऋण अवधि के दौरान सकारात्मक रूप से उसका अनुश्रवण करना, अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिससे कि हम एक लाभदायी संस्था बने रह सकें.

हर संकट हमें सीखने, पुनः सीखने और बेहतरी के लिए तैयार करता है. यूनियन बैंक में हमने आस्ति प्रबंधन के क्षेत्र में, ऋण वितरण से लेकर ऋण के समाप्त होने तक की अपनी सोच में अभूतपूर्व बदलाव लाने का प्रयास किया है.

औद्योगिक वित्त शाखाओं, सरल, मिड कारपोरेट शाखाओं, यूएलपी और यूनियन समृद्धि केन्द्रों के जरिए ऋणों की प्रोसेसिंग के केंद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य संपूर्ण ऋण प्रक्रिया का मानकीकरण कर उसके जरिए गुणवत्ता को सुनिश्चित कर, उचित मूल्य जोखिम और समयबद्ध तरीके से सेवाएँ देना सुनिश्चित किया जाएगा. यह संभावित गलतियों के अनदेखे परिणामों से बचने में हमारी सहायता करेगा.

बैंकिंग के हर क्षेत्र में डिजिटलीकरण का उपयोग हो रहा है, विशेषतया हमने ऋणों के अनुश्रवण, समाधान एवं वसूली के प्रति अपने नजरिये को पुनः नियोजित किया है. अनुवर्ती कार्रवाई के नजरिये से लेकर ऋण अनुश्रवण अब सुनियोजित हो गया, जोकि ऋणावधि के दौरान प्रस्ताव प्राप्त करने, उनकी प्रोसेसिंग करने, दस्तावेजीकरण, संवितरण और एक्सपोजर के जीवनकाल के दौरान सेवा देने के जरिए प्रवाहित होता है. व्यापक रूप में ऋण अनुश्रवण और वसूली के लिए विशेषीकृत संरचना के साथ उन्नत तकनीकों का प्रयोग जैसे कि अनुश्रवण पोर्टल, आऊटबाऊंड कॉल सेंटर, वसूली एप और ओटीएस कैलकुलेटर आदि को जोड़ा गया.

संभावित दबावग्रस्त आस्तियों को पहचानने के लिए, ऋण का विशेष उल्लिखित खाते (एसएमए) में शामिल होने से 3 से 6 माह पहले और 6 से 12 माह में ऋण के गैर निष्पादित आस्तियों (एनपीए) में तब्दील होने से पहले बैंक ने प्रोन्नत नवोन्मेषी तकनीक का विकास किया है. उसी तर्ज पर क्षेत्रीय स्तर पर समाधान समिति (आर.सी.) के गठन के जरिए संपूर्ण समाधान तकनीक का भी निर्माण किया गया है. सिर्फ एक बार पुनः संरचना के लिए पात्र खातों के बारे में त्वरित निर्णय लेने में भी यह महत्वपूर्ण है. अनुश्रवण पोर्टल में 4 लाख से भी ज्यादा चूककर्ता ऋणियों के विभिन्न पैरामीटरों को शामिल करते हुए एक विस्तृत डाटाबेस उपलब्ध कराया गया है, जो सभी स्तरों पर शीघ्र निर्णय लेने में सहायक होगा. इसके अलावा प्रशासनिक कार्यालयों में विशेष रूप से अनुश्रवणकर्ता अधिकारियों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत भी की गई है.

मुझे खुशी है कि हमारी गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' इन कल्पनाओं, संरचनाओं और उनके कार्यान्वयन को विस्तृत रूप से कवर कर 'ऋण अनुश्रवण विशेषांक' प्रकाशित कर रहा है. इस विशेषांक के प्रकाशित करने हेतु यूनियन धारा टीम को सहयोग देने हेतु में संपूर्ण ऋण अनुश्रवण टीम का अभिनंदन करता हूँ व मुझे विश्वास है कि हमारे यूनियनाइट्स इस विशेषांक को उपयोगी पायेंगे और इससे जो जानकारी/ज्ञान पायेंगे, उसका उपयोग अपने दैनिक बैंकिंग कार्य में करेंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

राजकिरण रै जी
राजकिरण रै जी.

Dear Unionites,

Indian banking is mostly asset driven business. However, the very nature of business means we lend money upfront and then recover over time, with principle and interest flowing in instalments. Therefore, acquiring right customers, pricing the risks appropriately and monitoring proactively during the entirety of life cycle of exposure becomes essential to make our business a profitable enterprise.

Every crisis is an opportunity to learn, unlearn and renew for better. At Union Bank, we have taken a paradigm shift in our approach to asset management, right from origination through closure of a loan.

The centralisation of under writing through IFBs, SARALs, Mid-Corporate Branches and Union Samriddhi Kendras is aimed at standardising the entire processing of loans, thus ensuring we acquire quality, price risk appropriately and serve in timely manner. Most satisfyingly, it will help save us from unfortunate consequences of human error, on account of lack of awareness or paucity of time.

The Bank is also leveraging digital application across domains, especially re-jigging our approach to monitoring, resolution and recovery. From a follow-up based approach, monitoring has shifted to proactive one, which flows through origination, underwriting, documentation, disbursement and servicing during the life cycle of exposure. New tools like Monitoring Portal, Outbound Call Centre, Recovery App, and OTS Calculator, etc., are enjoined with specialized structures for monitoring and recovery across the organization.

The Bank has developed state-of-art technology for identifying potential stressed assets, 3 to 6 months prior to exposure surfacing as special mention account (SMA) and 6 to 12 months ahead of turning as nonperforming asset (NPA). Likewise, a fully envisaged resolution mechanism is in place through constitution of resolution committee at the Region level. This is a critical piece in expediting decisions, even for accounts qualifying for one time restructuring. The monitoring portal has comprehensive database on variety of parameters including list of 3.5 lakh defaulters to help our people make informed decisions at all levels.

I am happy to see our in-house magazine Union Dhara releasing a monitoring special issue covering the ideas, structures and their implementation in details. I compliment the entire team of monitoring for ably supporting the team Union Dhara in bringing out this issue. I am confident that our Unionites will find it quite useful and will use the learnings in their banking pursuits.

With best wishes,

राजकिरण रै जी
Rajkiran Rai G.

सुस्वागतम्

We Welcome our New Executive Director !



Shri Manas Ranjan Biswal has assumed charge as Executive Director of our Bank on 01.03.2019.

Shri Biswal, aged 56 years is a Graduate in Science and a Certified Associate of Indian Institute of Bankers (CAIIB). He joined Punjab National Bank (PNB) in 1985 as a Management Trainee and prior to his elevation as Executive Director of Union Bank of India, he was General Manager at the Corporate Office of the PNB heading the Resolution and NCLT Division.

Shri Biswal is a seasoned banker with over 33 years of rich experience in various administrative and functional capacities at Branches, Regional Offices, Zonal Offices and Corporate Office Level. He has also worked for more than 3 years as CEO of PNB's Dubai Branch and Middle East operations and as Zonal Head of PNB's Eastern Zone. At Corporate level, he has headed the Credit Monitoring and Review Division, Recovery Division, Resolution and NCLT Division of PNB.

अलविदा



Shri Raj Kamal Verma, Executive Director, retired from the services of our Bank on 28.02.2019 on attaining the age of superannuation. A grand function was organized on the day to bid a fond farewell to Shri Verma. In his parting message, Shri Verma expressed, "It has been a journey of lifelong learning Of celebrating achievements and tiding through adversities. As I reminisce, I am truly humbled by the warmth of love and affection I have found from each Unionite. I will treasure these memories in the depth of my heart. The Bank has built right strengths in balance-sheet through provisioning and capital infusion. We have the vision, we have the structure and we have skilled manpower to stay ahead of the competition. I extend my gratitude to each one of you."

Union Dhara wishes him a very happy and active retirement!

सायोनारा



Shri P. R. RAJAGOPAL
General Manager (CRLD)

was elevated as Executive Director of
Allahabad Bank w.e.f. 01.03.2019

Union Dhara wishes him
'All The Best' in his new assignment !!!

इस 'विशेष संस्करण' में ज्ञानवर्धक संदेश देने के लिए मैं अपनी पूरी टीम की ओर से हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री राजकिरण रै जी. का हृदय से धन्यवाद देता हूँ.

मैं बैंकिंग के सबसे महत्वपूर्ण और चर्चित पहलू अर्थात 'ऋण अनुश्रवण' पर 'विशेष संस्करण' को प्रकाशित करने हेतु 'यूनियन धारा' के संपादकीय मंडल को भी धन्यवाद देता हूँ.

हमारे बैंक के विभिन्न कर्मचारियों और सहयोगियों ने अपनी रचनात्मकता और विचारशील लेखों के जरिए अपना योगदान दिया है जो बहुत ही प्रशंसनीय है, यूनियन धारा की संपादक डॉ. सुलभा कोरे जी के साथ लेखों का चयन करते समय मुझे एहसास हुआ कि 'ऋण अनुश्रवण - समय की मांग' इस पंच लाइन को सही मायने में ज्यादातर यूनियनाइट्स ने हर स्तर पर खुद में समाहित कर लिया है.

जी हाँ, यह विचार करने की आवश्यकता है कि ऋण अनुश्रवण - समय की मांग क्यों है? आखिर ऐसा क्या हुआ है जिसके कारण सीएमआरडी वेब पोर्टल का निर्माण किया गया है, एमएसएमई, खुदरा और कृषि पोर्टफोलियो के लिए चूककर्ता सूची डाटाबेस, दबाव पूर्व-संकेत (ईएसएस) आधारित संभावित दबावग्रस्त खाते (पीएसए), ओवरड्यू नोटिस के लिए केंद्रीकृत कॉल सेंटर तथा डिस्पैच सेंटर, चूककर्ता उधारकर्ताओं के लिए बल्क एसएमएस तथा ई-मेल और लेकिन सबसे महत्वपूर्ण एवं अंतिम बैंक द्वारा 'रेसोल्यूशन कमेटी के माध्यम से रेसोल्यूशन तंत्र' को अपनाया गया है.

मैं आपके साथ एक वास्तविक घटना साझा कर रहा हूँ. एक बार एक कार्यशाला में मैंने प्रतिभागियों से पूछा - वर्तमान में हम किस प्रकार के विघटन को महसूस कर रहे हैं और उसका क्या प्रभाव है. प्रतिभागियों में से किसी एक ने फ्लिपकार्ट/अमेज़ोन/ग्रोफर्स/बिग बास्केट उत्तर दिया, तो दूसरे ने ओला/ऊबर, तो किसी ने जिओ/एयरटेल/सुपरडेलि/मिल्क बास्केट/डेलिनिंजा और किसी ने नेटफ्लिक्स/ज़ोमेटो. कुछ ही देर में, बहुत सारे जवाब मिले, हालांकि किसी ने भी बैंकिंग नहीं कहा, जिसकी मुझे उम्मीद थी. फिर मैंने सिर्फ इतना पूछा, यदि ऐसा है, तो कौन सा उद्योग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है. जी हाँ, तुरंत ही सभी को इस तथ्य का एहसास हुआ कि ये सभी व्यावसायिक क्षेत्र, बैंकिंग उद्योग के ही घटक हैं. हालांकि, यदि विघटन का प्रभाव उन पर पड़ा, चाहे सकारात्मक रूप से हो या नकारात्मक रूप से, तो उसका कई गुना अधिक प्रभाव सीधा बैंकों पर ही पड़ेगा.

साथियों, शायद आपके प्रश्नों का एक ही उत्तर है, इन सभी विघटनों के पीछे प्रौद्योगिकी ही प्रमुख कारक है. याद रखें, यदि इन व्यवसायों पर सकारात्मक प्रभाव होता है तो इसी व्यवसाय से जुड़े अन्यो पर नकारात्मक प्रभाव भी हो सकता है. इस तरह के विघटन का सामना करने और संभालने के लिए, बैंकिंग उद्योग के लिए प्रौद्योगिकी ही एक मात्र उत्तर भी है, जिसे यथाशीघ्र लागू करना आवश्यक है.

दूसरा कारण थोड़ा और भी दिलचस्प है. मैं आत्मचिंतन कर रहा था कि पिछले 5-6 वर्षों में बैंकिंग उद्योग कितना तेजी से बदला है. पहले एक



I, on behalf of my entire team, convey our heartfelt thanks and gratitude to MD & CEO Shri Rajkiran Rai G. for blessing this "Special Edition" with his words of wisdom.

I also thank the Editorial Board of Union Dhara for bringing this "Special Edition" on "Credit Monitoring", today's buzzword as well as the crux of present banking.

Many of our beloved colleagues and staff have contributed with creative and thoughtful articles. While reviewing the articles along with Editor Dr. Sulabha Kore, I could sense that the punch line - "Credit Monitoring - Need of the Hour"

has been imbibed in a true sense by many of the Unionites across the rank and file.

Some of us would still be thoughtful as why 'Credit Monitoring is the need of the hour!' What has happened that necessitated the advent of CMRD Web Portal, Defaulter's List Database, Potential Stress Accounts (PSA) based on Early Stress Signals (ESS) for MSME, Retail & Agriculture portfolio, Centralized Call Centre and Dispatch Centre for overdue Notices, Bulk SMS & Mails to defaulting Borrowers and last, but most important one, the adoption of "Resolution Mechanism through Resolution Committees" by the Bank.

Let me first share with you a real incident. In one of the Workshops, I asked participants - what disruptions are we noting at present and what is their impact? One of the participants answered Flipkart/Amazon/Grofers/Bigbasket, the other indicated Ola/Uber, someone pointed out Jio/Airtel, SuprDaily / Milkbasket / DailyNinja and the other Netflix/Zomato. In a while, came a number of answers. Surprisingly, no-one said, "Banking", which I expected. I then asked which industry is impacted most. Yes, immediately, there was realisation that all these sectors are the constituents of Banking Industry and that if disruption is impacting them, positively or negatively, the multiplied impact will be on Banks for sure.

Friends, trust above reference, reasons out probably all your queries. Technology is the key factor behind all these disruptions. Remember, if they are positively impacted, the others in same business are negatively impacted too. To cope up and handle such disruptions, the Banking Industry must embrace technological advancement, that too as early as possible.

Second reason is even more interesting. I was just introspecting how banking has traversed in past 5-6 years. Earlier a branch, which used to have 200-250 loan accounts, now has 400-500 loan accounts. Over next 10 to 15 years,

शाखा में जहां 200-250 ऋण खाते होते थे वहीं आज 400-500 ऋण खाते हैं. अगले 10 से 15 वर्षों में, शायद, जब भारत देश शीर्ष 3 विश्व अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा, तब जरा सोचिए कि शाखा द्वारा वहाँ किए जाने वाले खातों और कारोबार की संख्या क्या होगी. जी हाँ, इस समस्या का प्रौद्योगिकी ही एकमात्र उपाय है. इसमें कोई शक नहीं कि मानव की कुशाग्रबुद्धि और अभिव्यक्तिकरण का कोई विकल्प नहीं है, लेकिन अगर प्रौद्योगिकी के साथ इसका अनुपालन किया जाए, तो यह न केवल कायम रहेगा, बल्कि सर्वोत्तम के लिए भी स्पर्धा करेगा.

बैंकिंग उद्योग कठिनाइयों एवं विषम परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा है, हमारे बैंक द्वारा टूल्स को विकसित करने, उन्नत तकनीक का उपयोग करने, मानक संचालन प्रक्रिया, कार्यप्रणालियों का एक उत्साही प्रयास किया है ताकि भविष्य में दबावग्रस्त खाते या दबाव में जाने वाले खातों को शाखाओं/कार्यालयों को सूचित किया जा सके. केवल उदाहरण के लिए, हमारे बैंक में, हमने एसएमए-0 होने से पहले संभावित दबावग्रस्त खातों का पूर्वानुमान करने हेतु दबाव-पूर्व संकेतों की पहचान करने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण के आधार पर पूर्वानुमान मॉडल का प्रयोग किया है.

मुझे इस अवसर पर हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि दुष्यंत कुमार की निम्नलिखित पंक्तियाँ याद आ रही हैं.

**हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए, इस हिमालय से गंगा निकलनी चाहिए ।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए ।**

हां, हम सभी अपनी मातृ संगठन के हितधारक हैं एवं हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम इसे सुरक्षित एवं स्वस्थ रखें. इसके फलस्वरूप हम सुरक्षित एवं स्वस्थ रहेंगे. इसका सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ ऋण बही खाता है. किसी न किसी प्रकार कहीं न कहीं, इसके दयनीय स्थिति के लक्षण सामने आए हैं और इसका एक कारण विघटन या दूसरा कारण जानकारी न होना हो सकती है. टूल्स एवं प्रौद्योगिकी और कुछ केंद्रीयकृत उपकरणों का उपयोग, एक सशक्त ऋण निगरानी परिस्थिति तंत्र की नींव तैयार करने में मददगार साबित होगा. अंत में, ऐसे सतर्क उधारकर्ता के साथ जुड़ने के लिए शाखाओं की ओर से ऐसे छोटे-छोटे कार्रवाई पूरे कार्य में एक निर्णायक की भूमिका अदा करेगी.

एक पहल के रूप में-सुधारात्मक मॉनिटरिंग से निवारक मॉनिटरिंग में बदलाव की शुरुआत की गई है. जिसके कारण आने वाले समय में शाखाओं से समर्थन प्राप्त होगा. इसका मुख्य उद्देश्य बैंक के साथ-साथ कर्मचारियों के हितों की रक्षा को सुनिश्चित करना है. इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण क्रेडिट कारोबार को बढ़ाना है. जैसे एक कार में ब्रेकिंग सिस्टम को अधिक शक्तिशाली बनाया जाता है ताकि कार को अधिक तेजी से ठीक उसी तरह चलाया जा सके. ऋण अनुश्रवण को बैंक में इतना सशक्त बनाया गया है ताकि बैंक में गुणवत्तापूर्ण कारोबार सही समय में प्राप्त हो.

यह विशेषांक विभिन्न कारोबार, विशेष रूप से ऋण के विभिन्न पहलुओं एवं आयामों को समाहित करता है तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के सभी लेख आपको एक सकारात्मक सोच प्रदान करेंगे.

when India will rank among top 3 World Economies with Gross Domestic Product reaching past \$ 10 trillion, just imagine the volume of accounts and business that need to be handled by a branch. Scaling up manually is both cost inefficient and prone to costly mistakes in terms of quality and service efficiency. Technology can help. There is no doubt that the human acumen and articulation has no substitute, but if coupled with technology, it would not only sustain, but also provide competence for the top slot within the Industry.

Given all the hardships and odd circumstances the Banking Industry is witnessing today, an earnest attempt is made by our Bank to develop tools using advanced technology, Standard Operating Procedures, Methodologies so that only critical accounts, or accounts going to be critical in future, are alerted to Branches/Offices. Just to illustrate, in our Bank, we have used predictive model based upon regression analysis using identified Early Stress Signals to forecast Potential Stress Accounts before they turn to SMA-0.

I remember couplets of learned Hindi Poet Dushyant Kumar :-

Yes, we all are stakeholders of our mother Organisation and our responsibility is to keep it safe and healthy. In turn, actually, we will remain safe and healthy. The most important pillar is "the Loan Book". Somehow and somewhere, symptoms of weakness has surfaced in past. The technological disruptions may be one of the causes or it may be the oversight. The use of tools and technology and certain centralised initiatives, will go a long way to build up a modest credit monitoring ecosystem brick by brick. At the last mile, small actions on the part of branches to connect with such alerted borrower will play a decisive role in the whole game plan.

An initiative - "shift from Corrective Monitoring to Preventive Monitoring" is launched. Lot more support will come for Branches in times to come. The main intent is to safeguard Bank's as well as Staff interest for sure. The purpose is to generate quality credit business. Like in a car, braking systems are made powerful so that the car can run with more speed. Similar fashion, the Credit Monitoring is strengthened in our Bank so that you all get quality time to generate quality business for the Bank.

This Special Edition covers the various aspects and dimensions of doing business particularly Loan Book and I am confident that each of the article in the magazine will input a meaningful thought in you.

शुभकामनाओं के साथ With Best Compliments

आशीष पाण्डेय

आशीष पाण्डेय Asheesh Pandey

संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

ऋण देना (लेंडिंग), यह गतिविधि अर्थव्यवस्था के साथ-साथ बैंकिंग उद्योग की रीढ़ की हड्डी है। जब आप किसी को उधार देते हैं, तो आपका जोखिमभरी स्थिति में आ जाना जायज है और यह जोखिमभरी स्थिति ही सघन अनुश्रवण की मांग करती है। ऋण संवितरण का अत्यंत आवश्यक हिस्सा है अनुश्रवण और उस बारे में सावधानी बरतना अत्यंत जरूरी है। जैसा कि हरदम कहा जाता है कि 'सावधानी बरतना बुद्धिमानी है और बुद्धिमानी से सुरक्षा है।' अतः हमें बुद्धिमानी बरतनी है। अपने पैसों की सुरक्षा करना, आज का फंडा या यूँ कहिए बैंकिंग उद्योग का मूल मंत्र है। यदि उचित अनुश्रवण कर आप अपने पैसों को सुरक्षित रखते हैं, तो वह आपके अस्तित्व की सुरक्षा करेगा। वह आपकी प्रगति, लाभ और तदनुषंगी विकास की भी सुरक्षा करेगा। बैंकिंग के इस महत्वपूर्ण पहलू के मद्देनजर और वित्तीय क्षेत्र के आज के इस संगीन दौर को देखते हुए यूनियन धारा का 'ऋण अनुश्रवण' पर विशेषांक आपके हाथों में है। इस विशेषांक में हम अपने बैंक के विभिन्न ऋण परिदृश्यों को प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें इस क्षेत्र में नया क्या है, कौन सी तकनीक हम वर्तमान में इस्तेमाल कर रहे हैं, इसका पूरा लेखा जोखा होगा। यह अंक आपको ऋण अनुश्रवण से जुड़ी पूरी जानकारी, नयी संकल्पनाएं तथा ज्ञान देगा। इस जटिल विषय पर बेहतरीन सामग्री जुटाने हेतु अपने अथक प्रयासों से हमारी सहायता करने वाले तथा इस विषय में समर्थन करने वाले, श्री आशीष पांडेय, महाप्रबंधक, सीएमआरडी, कें.का. और उनकी टीम को मैं विशेष धन्यवाद देना चाहती हूँ।

दोस्तों, यूनियन धारा विभिन्न क्षेत्रों में, चाहे वह जीवन हो, बैंकिंग या पर्यटन हो या जीवन का अन्य कोई हिस्सा हो, हरदम आपको नयी जानकारी देने के लिए तैयार रहता है। जिसमें आपका योगदान आपके लेखन के साथ-साथ आपकी उपलब्धियाँ, सोच प्रक्रिया, छायाचित्र और गतिविधियों के साथ झलकता है। अपनी संस्था तथा पत्रिका के प्रति आपका यह प्यार आपके योगदान के जरिए दिखायी देता है और यही बात यूनियन धारा को बेहतरीन गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ाती रही है।

मैं आपके साथ एक महत्वपूर्ण बात शेयर करने जा रही हूँ कि बैंक की 100 साल की अविस्मरणीय यात्रा पर यूनियन धारा अपना 'विशेषांक' प्रकाशित करने जा रही है। बैंक की यह शताब्दी यात्रा आपको नई ऊंचाईयों और सफलता की ओर ले जाएगी। आप भी यूनियन धारा के इस अंक हेतु अपने सुझाव और योगदान देकर इस यात्रा का हिस्सा बनिए।

पढ़ते रहिए और यूनियन धारा का यह अंक आपको कैसा लगा, इस बारे में हमें अवगत कराइए।

शुभकामनाओं के साथ,

आपकी, Yours truly,



डॉ. सुलभा कोरे Dr. Sulabha Kore

EDITORIAL

Friends,

Lending activity is the backbone of the Banking Industry as well as the economy. When you lend to any entity you tend to get into a risky situation and risky situation always require close monitoring. Monitoring is an essential tool of loan disbursement and for that you have to take precautions. As is said 'Prudence is precaution, prudence is protection' so we have to be prudent. Protection of our money, this is the basic fundamentals of today rather it is the buzz word of Banking Industry. If you protect your money by monitoring it properly, it will protect your existence, it will protect your progress, profit and thus development. Keeping in view this important aspect of Banking, Union Dhara has come out with this special issue on Credit Monitoring, which is very crucial in today's financial sector. In this issue, we tried to project various tools & methods of Credit Monitoring of our Bank which will give you an overview of which tools are presently being used and we have tried to showcase what is new that we are doing in this field. This issue will be full of knowledge, new ideas and wisdom of Credit Monitoring. Special thanks to Mr. Asheesh Pandey, GM, CMRD, CO and his team for his support and contribution and his tireless efforts in helping us to bring out the best things of this complex topic.

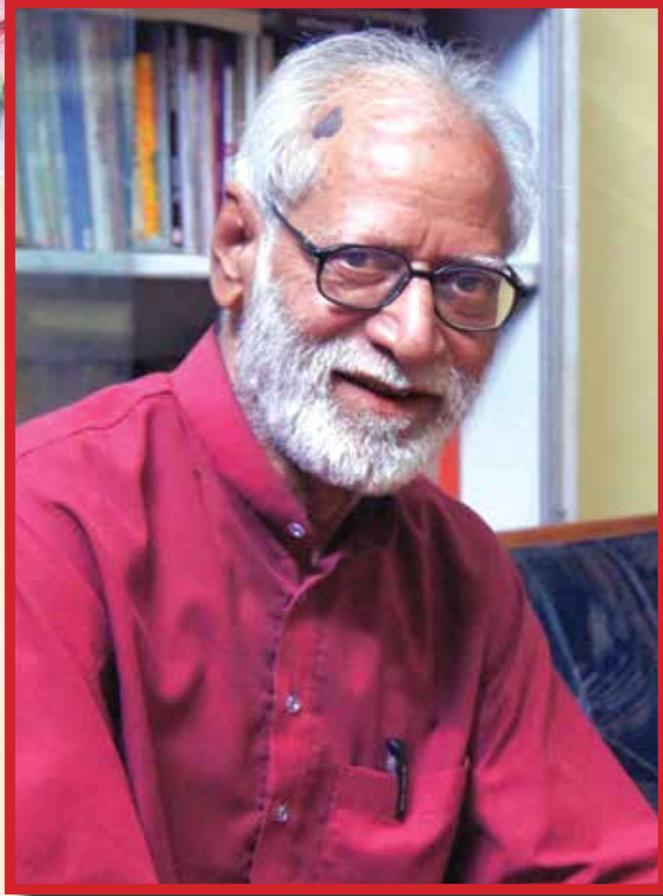
Friends, Union Dhara is always there to give you new inputs on various fields. It may be any walk of life, banking or tourism. You are sharing your contribution by way of your writings and by your achievements, thought process, photographs and activities. Your love for your institution and also for your magazine is reflected in your contribution which keeps Union Dhara going on with high quality.

I would like to share that we are coming out with special issue of Union Dhara on our Bank's remarkable journey of 100 years. It's an unblemished long journey which will take you to further heights, scales and success. Please be a part of this journey with your valuable suggestions and contribution to this issue of Union Dhara

Keep reading and also let me know how you like this issue.

With Best Compliments,

Yours truly,



किसी विशाल वृक्ष की प्रतिछाया में किसी अन्य वृक्ष का पनपना, वृद्धि करना एवं किसी भी क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाना, अपने आप में एक अलग, विशिष्ट चुनौती होती है। हम कह सकते हैं कि इसी प्रकार की एक अलग चुनौती का सामना करना पड़ा साठोत्तरी पीढ़ी के कहानीकार श्री काशीनाथ सिंह को। काशीनाथ अपनी अलग विचारधारा, सोच एवं रचनाधर्मिता हेतु जाने जानेवाले रचनाकार हैं। जिनका जीवन वाराणसी के काशी के इर्द गिर्द ही घूमता रहा है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार एवं परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हम देखते हैं कि हमारे रचनाकार काशीनाथ जी के व्यक्तित्व पर भी यह दृष्टिगोचर होता है।

जब हम बात करते हैं काशीनाथ जी की, तो हमारे सामने एक सहज, सरल एवं खुले विचारों वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व उभरता है। उन्हें देखकर जमीन से जुड़े व्यक्ति की बात सत्य प्रतीत होती है।

उनका जन्म चंदौली के जीयनपुर गाँव में 1937 ई. में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के ही स्कूल में हुई। बाद में उच्च शिक्षा

‘चार यार’ की धुरी काशीनाथ सिंह

हेतु वाराणसी चले गए। चूंकि यह समय स्वतंत्रता पूर्व का है तो आजादी की लड़ाई या कहें कि गुलाम भारत को आजाद कराने या गुलामी से संबन्धित विचारों का विरोध इनके विचारों में प्राप्त होता है। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक, परास्नातक(1959) और पी.एच.डी.(1963) की उपाधियाँ प्राप्त कीं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ही पहले वे हिंदी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण कार्यालय में सन् 1962 से 1964 तक शोध सहायक रहे। फिर सन् 1965 में वहीं उन्होंने अध्यापन कार्य शुरू किया और हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए 1997 में सेवानिवृत्त हुए।

इनकी सृजन यात्रा साठोत्तरी पीढ़ी के रचनाकार के रूप में प्रारम्भ हुई। इस पीढ़ी के सुप्रसिद्ध हुए ‘चार यार’ जिनके नाम हैं—रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन एवं काशीनाथ सिंह। इनकी पहली कहानी ‘संकट’ का प्रकाशन ‘कृति पत्रिका’ में हुआ था।

उनका प्रथम उपन्यास ‘अपना मोर्चा’ अपने समय की राजनीतिक एवं विश्वविद्यालय में भाषा के संघर्ष पर आधारित रचना है। सिंह को उस तैराक के रूप में देखा जाता है जो नदी की धारा के विरुद्ध अपना हाथ-पाँव मारता हुआ अपने जीवन पथ में आगे बढ़ता है। यह मोर्चा प्रतिरोध की उस मानसिकता का बहुमूल्य दस्तावेज है जिसे इस देश के युवा ने पहली बार अर्जित किया था। एक चेतन अँगड़ाई इतिहास की करवट बनी थी जब विश्वविद्यालय से छूटा हुआ भाषा का सवाल, पूरे सामाजिक-राजनीतिक ढाँचे का सवाल बन गया था और आन्दोलनों की लहरें जन-मानस का भिगोने लगी थीं।

हम क्यों पढ़ते हैं? यह विश्वविद्यालय क्यों? भाषा केवल एक लिपि ही क्यों, जीवन की भाषा क्यों नहीं? छात्रों, अध्यापकों, मजदूरों और किसानों के अपने-अपने सवाल अलग-अलग क्यों हैं? व्यवस्था उन्हें किस तरह भटका कर तोड़ती है? एक छोटी सी कृति में इन सारे सवालों को उछाला है काशीनाथ जी ने। इनके जवाबों के लिए लोग खुद अपनी आत्मा टटोलें, यह सार्थक आग्रह भी इस कृति का है।

जिन्दगी और जिन्दादिली से भरा एक अलग किस्म का उपन्यास है ‘काशी का अस्सी’। उपन्यास के पारंपरिक मान्य ढाँचों के आगे प्रश्न चिह्न। पिछले दस वर्षों से ‘अस्सी’ काशीनाथ की भी पहचान रहा है और बनारस की भी ! जब इस उपन्यास के कुछ अंश ‘कथा रिपोर्टाज’ के नाम से पत्रिका में छपे थे तो पाठकों और लेखकों में हलचल सी हुई थी। छोटे शहरों और कस्बों में उन अंक विशेषों के



लिए जैसे लूट-सी मची थी, फोटोस्टेट तक हुए थे, स्वयं पात्रों ने बवाल मचाए थे और मारपीट से लेकर कोर्ट-कचहरी की धमकियाँ तक दी थीं। उपन्यास आपके सामने है जिसमें पाँच कथाएँ हैं और उन सभी कथाओं का केन्द्र भी अस्सी है। हर कथा में स्थान भी वही, पात्र भी वे ही, अपने असली और वास्तविक नामों के साथ, अपनी बोली-बानी और लहजों के साथ! हर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर इन पात्रों की बेमुरव्वत और लड्डुमार टिप्पणियाँ काशी की उस देशज और लोकपरम्परा की याद दिलाती है, जिसके वारिस कबीर और भारतेन्दु थे। उपन्यास की भाषा उसकी जान है-देशपन और व्यंग्य-विनोद में सराबोर। साहित्य की 'मधुर मनोहर अति सुन्दर' वाणी शायद कहीं दिख जाय। सब मिलाकर काशी नाथ की नजरों में 'अस्सी' पिछले दस वर्षों से भारतीय समाज में पक रही राजनीतिक-सांस्कृतिक खिचड़ी की पहचान के लिए चावल का एक दाना भर है। 'काशी का अस्सी' के अंशों को प्रसिद्ध निर्देशक उषा गांगुली द्वारा रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया है और इसी उपन्यास पर चंद्रप्रकाश द्विवेदी द्वारा फीचर फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' का भी निर्माण किया जा चुका है।

हाल के दिनों में 'काशी का अस्सी' पर आधारित एक नाटक 'काशीनामा' भारत और विदेशों में 125 बार आयोजित किया गया है।

जब हम बात करते हैं 'रेहन पर रघू' की तो हमारे समक्ष यह दृश्य प्रस्तुत होता है। 'रेहन पर रघू' प्रख्यात कथाकार काशीनाथ सिंह की रचना-यात्रा का नव्य शिखर है। भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप संवेदना, सम्बन्ध और सामूहिकता की दुनिया में जो निर्मम विध्वंस हुआ है, तब्दीलियों का जो तूफान निर्मित हुआ है, उसका प्रामाणिक और गहन अंकन है इस उपन्यास में ! यह उपन्यास वस्तुतः गांव, शहर, अमेरिका तक के भूगोल में फैले हुए अकेले और निहत्थे पड़ते जा रहे हैं। समकालीन मनुष्य का बेजोड़ आख्यान है।

उपन्यास का केंद्रीय पात्र बहुत ही महत्वाकांक्षी, आक्रामक, हिंसक है कि मनुष्यता की तमाम आत्मीय कोमल अच्छी चीजें टूटने बिखरने, बर्बाद होने लगती हैं। 'रेहन पर रघू' नये युग की वास्तविकता की बहुस्तरीय गाथा है। इसमें उपभोक्तावाद की क्रूरताओं का विखंडन है ही, साथ में शोषित, प्रताड़ित जातियों के सकारात्मक उभार और नयी स्त्री की शक्ति एवं व्यथा का दक्ष चित्रांकन भी है। दरअसल 'रेहन पर रघू' में वास्तविकताओं, चरित्रों, उपकथाओं आदि का ऐसा सधा हुआ अकाट्य अन्तर्गुम्फन है जो अपने आप में पूर्ण रचना है। 2011 में उनके उपन्यास 'रेहन पर रघू' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इसके अलावा 'महुआ चरित' वर्ष 2012 में तथा 'उपसंहार' वर्ष 2014 में लिखा गया।

इनके कहानी-संग्रह निम्न हैं:- लोग बिस्तरों पर (1968), सुबह का डर (1975), आदमीनामा (1978), नयी तारीख (1979), कल की फटेहाल कहानियाँ (1980), प्रतिनिधि कहानियाँ (1984), सदी का सबसे बड़ा आदमी (1986), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (1994), कहनी उपखान (सम्पूर्ण कहानियाँ) (2003), संकलित कहानियाँ (2008), कविता की नयी तारीख (2010), खरोंच (2014)

उनके संस्मरण अपने आप में अद्वितीय स्थान रखते हैं। जो कि इस प्रकार हैं :- याद हो कि न याद हो (1992), आछे दिन पाछे गए (2004), घर का जोगी जोगड़ा (2006)

इसके अलावा इनकी शोध आलोचना भी है:- हिंदी में संयुक्त क्रियाएं (1976), आलोचना भी रचना है (1996), लेखक की छेड़छाड़ (2013)

इनके नाटक 'घोआस' है तथा इनके साक्षात्कार-'गपोड़ी से गपशप' (2013)।

काशीनाथ सिंह की कहानियों के ज्यादातर पात्र बुनियादी तौर पर ग्राम से निकले हुए ऐसे पात्र हैं जो शहर आए हैं और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह पात्र ग्रामीण जमीन पर खड़े हैं। उनके भीतर शहरी धूर्तता और बेईमानी नहीं आ पाई है। स्वयं काशीनाथ के व्यक्तित्व की खूबी सभी को भाती है, वह है उनका ठेठ ग्रामीण व्यक्तित्व। वे जमीन के आदमी हैं और आदमी से ही जिन्दगी को समझते हैं। काशी जी में किसी भी प्रकार का पेंच या घुमाव नहीं है। शहर में रहते हुए भी ग्रामीण संवेदना, भोलापन और सच्चाई बचाकर रख पाना और शहरी विकृतियों से अपने आप को बचाकर रखना बड़ी बात है। काशीनाथ पक्षी की तरह हैं, वृक्ष की तरह हैं जिसे प्रकृति, ग्राम्य परिवेश ने गढ़ा है। काशी में कृत्रिमता नहीं है।

श्वेता सिंह
क्षे.म.प्र.का., कोलकाता



काव्यधारा



सीएमआरडी... अब नए अवतार में

जोश, उत्साह और उमंग से, भरे हुए हैं सभी।
सीएमआरडी टीम की अब, तारीफ कर रहे हैं सभी।।
अब तक थी Mock पर निर्भरता,
अब SMA प्राथमिकता में है।
Stress कैसे कम हो बैंक का, अब सोचने लगे हैं सभी।।
काबिले तारीफ रही, CMRD Web Portal की हकीकत।
Call Centre का इंतजार, अब कर रहे हैं सभी।।
PS-, L-C Mock Run, CRILIC, SMA अब साथ हुए।
CMRD Portal में हर रिपोर्ट, अब देख सकते हैं सभी।।
जो अनभिज्ञ थे CMRD Portal से,
वो उपयोगी इसे मानने लगे।
दिन प्रतिदिन अब उपयोग इसका, करने लगे हैं सभी।।
पुराने तरीकों से काम करना, रास अब आता नहीं।
Technology की दुनियाँ में,
Technology अपनाने लगे हैं सभी।।
बिखरी थी सीएमआरडी टीम,
जानने लगे एक-दूजे को अब।
WHATSAPP से जुड़कर एक-दूसरे का,
ज्ञान बढ़ाने लगे हैं सभी।।
ख्याति न खराब हो, अब किसी भी Borrower की।
CRISIL पर भी पैनी नजर, डालने लगे हैं सभी।।
Stock Statement, Review, Renewal,
MCMR पर भी नजर पड़ी।
Technical Slippages, Defaulters List भी,
देखने लगे हैं सभी।।
परिणाम अब दिखने लगा,
Stress, Mock कम होने लगे।
महाप्रबंधक के मार्गदर्शन में जब से,
Monitoring कर रहे हैं सभी।।

दीपक कुमार
सीएमआरडी, के.का.



क्रेडिट मॉनिटरिंग का एक नया दौर

क्रेडिट-क्रेडिट करते करते,
आज मॉनिटरिंग पर आ गए हम!
बड़े लोन किए, छोटे भी,
काम सारे अच्छे कर गए हम!
मॉक में आए, क्रिलिक में भी,
SMA, PSA, भी दिखने लगे अभी!
अब तक थे कुछ लोगों पर निर्भर,
अब करते है मॉनिटरिंग सभी!
तितर बितर थे जो आज तक
अब एकजुट खड़े हैं सभी!
शाखा प्रबंधक को नहीं था मालूम,
अब वेब पोर्टल पर
काम करने लगे हैं सभी!
मिलकर लिया है हम सबने प्रण यही!
मॉनिटरिंग करेंगे सब सही-सही।

राकेश कुमार महतो
के.का., मुंबई



स्ट्रेस

स्ट्रेस - स्ट्रेस
क्या है स्ट्रेस ?

जिससे पूछो उसको स्ट्रेस
घर पर स्ट्रेस, ऑफिस में स्ट्रेस
अकाउंट अंडर स्ट्रेस तो मेंटल स्ट्रेस
पर क्या है स्ट्रेस ? क्यों है स्ट्रेस ?

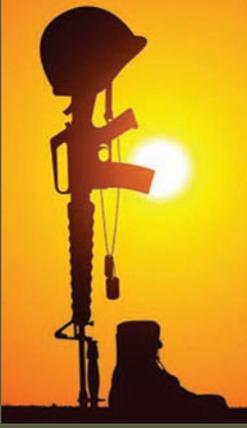
सोचें विचारें और समझें...
अगर जीवन को जियें तकादों से
नियमों और वादों से
तो काहे का स्ट्रेस..... कहाँ है स्ट्रेस ?

समय पर किशतों का भुगतान करें
CIBIL और CRISIL का भी ध्यान करें
दूर हो जाएगा अकाउंट का स्ट्रेस
उसके साथ ही मेंटल स्ट्रेस

तब चिंता मुक्त जीवन होगा, घर का स्ट्रेस
भी दूर होगा.....

सुषमा चांदना
क्षे.का., दिल्ली





पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए वीर जवानों को समर्पित

आसमान भी रोया था, धरती भी थर्रायी थी किसी को न मालूम था यारों किस घड़ी मौत ये आयी थी।

माँ का एक टक चेहरा था आँखों से बहते आँसू थे पुत्र थे उनके शहीद हुये जो मातृभूमि के नाते थे। पत्नी का बिलखना-चिल्लाना सीने में तीर चुभाता था एक मात्र सहारा था उनका वह भारत माँ का बेटा था।

बेटे के सिर से हाथ गया चलना वह जिनसे सीखा था कंधों का भी अब राज गया वह बैठ जहाँ जग देखा था। माँ की सुनी गोद हुई पत्नी का भी सिंदूर मिटा पिता के दिल में आह उठी पुत्र का हाथ भी छूट गया।

गर्व है इन परिवारों को अपनी उन संतानों पर मातृभूमि के लिए समर्पित हुए वीर बलिदानों पर। नेताओं क्यों बैठे हो बदला लो गद्दारों से गर खून में गर्मी बाकी है सर बिछा दो तुम तलवारों से।

बदला ले इस वार का तुम उन वीरों के सम्मान में पिता और पुत्र के सर मातृभक्ति का ताज रखो

हरी मोहन वर्मा
दावड शाखा, मेहसाणा



भूल गए हम, याद नहीं, उन सबने क्या गंवाया था

भूल गए हम, याद नहीं, उन सबने क्या गंवाया था आजादी की खातिर हँस के, अपना खून बहाया था परवाने थे, आशिक थे, कुछ पागल ही थे वो शायद लाख जखम सह कर भी जिन्होंने, मौत को गले लगाया था

खौफ नहीं था, ना कोई डर, आँखों में बस एक आग सी थी अपनी माँ, जननी के लिए, कुछ कर जाने की चाह सी थी मुश्किल है औरों की खातिर खुद का नाम मिटा लेना फिर भी सबने देश की खातिर अपना शीश नवाया था

भूल गए हम, याद नहीं, उन सबने क्या गंवाया था आजादी की खातिर हँस के, अपना खून बहाया था

सफ़रोशी की तमन्ना दिल में लिए चलते थे वो अपनी पागल चाह की उस आग में पलते थे वो जानते थे क्या मिलेगा चलके यूँ इस राह पर खत्म कर खुद को उन्होंने देश को जगाया था भूल गए हम, याद नहीं, उन सबने क्या गंवाया था आजादी की खातिर हँस के, अपना खून बहाया था

ना खुदा का ना ही रब का, वो भगत बस देश का एक सपना ही था उसका, सपना वह स्वदेश का आजादी दुल्हन थी उसकी, और मोहब्बत था वतन सुनता हूँ मरते हुए वो गर्व से मुस्काया था भूल गए हम, याद नहीं, उन सबने क्या गंवाया था आजादी की खातिर हँस के, अपना खून बहाया था

कपिल शर्मा
क्षे.का., मेहसाणा



विधाता

देखा है मैंने इंसान के रूप में विधाता अपनी ख्वाइशें भुलाकर, जो मेरी पहचान है बनाता मेरी हर ज़िद के आगे जो हर बार है झुक जाता है मेरा पिता, मेरे लिए मेरा अन्नदाता

तकलीफें अपनी हर किसी से है वो छुपाता मेरे सपने की किशतें, वो अपने पसीने से है चुकाता मैं भूखा ना रहूँ, इसलिए पानी से अपनी भूख है मिटाता खुद धूप में सुलगता रहता, और मुझे छाव में बिठाता देखा है मैंने इंसान के रूप में विधाता

सारी मुश्किलों से वो अकेला ही लड़ जाता फिर भी मेरे सामने यूँ फीका पड़ जाता राहों में मेरी वो रोशनी बन जाता मंज़िल तक मेरी, वही तो मेरा साथ निभाता देखा है मैंने इंसान के रूप में विधाता

दर्द में भी जो हर दम है मुस्कराता मेरे लिए मेरी हर खुशियां जो हैं मनाता देख तेरी मजबूरियां, मेरा भी मन भर आता मैं भी अंदर से बिखर बिखर जाता देखा है मैंने इंसान के रूप में विधाता

मेरी क्रीमत लगाते खुद कौड़ियों के दाम बिक जाता मेरी छवि संवारते - संवारते खुद मिट्टी में मिल जाता होता अगर मेरी किस्मत की डोर का वो दाता तो कहां कोई मेरी ज़िदगी की पतंग काट पाता देखा है मैंने इंसान के रूप में विधाता

हिरन मारोलीकर
बांद्रा (पूर्व) शाखा
क्षे.का., मुंबई(प.)





Effective Credit Monitoring in Retail & MSME

Introduction

Banking sector plays an important role in strengthening the economy of a nation. It is the backbone of any strong economy of a country. The country whose banking sector is very strong, contributes more in development. Strong bank means sound asset quality maintained by a bank. For maintaining the asset quality, the Bank has to monitor it properly and continuously. The bank whose monitoring system is not Sound, suffers a lot from so many side effects like poor asset quality, more NPA, more provisioning, reduction in profits, losing confidence of stakeholders, falling under PCA (Prompt Corrective Action) norms of RBI, imposing many restrictions, merger with strong bank etc. So effective credit monitoring is very important for all types of loans to maintain asset quality. Out of all the advances, Retail and MSME loan is a major chunk of advances.

Monitoring is done in three stages:

- i. Pre-sanction stage
- ii. During sanction stage and
- iii. Post disbursement stage

Effective credit monitoring in Retail and MSME

Retail portfolio: Retail products help us in creating diversified portfolio for the bank by covering a wide range of customers. Since most of the retail loans are linked to savings bank account, it is helpful in the growth of CASA portfolio. This portfolio has lot of cross selling potentials. Some of the retail products are Home loan, Mortgage loan, Personal loans, Vehicle loan, Education loan etc. Monitoring of the above loans is of great importance to maintain the quality of assets.

To understand monitoring in retail, let us take an example of home loan. Before considering a home loan proposal, the following steps are taken as part of monitoring:-

- a) Accept the completely filled Application form
- b) CIBIL report of all the parties of the loan application is to be generated and scrutinized.
- c) Genuineness of the ITRs, Form-16 (Salaried person) PAN, B/S and P & L A/c is to be established
- d) Actual calculation of maximum eligibility of loan based on the income (ITR) and other deductions including sustenance
- e) Legal advisor's 30 years search report with proper

- f) chain of transfer
- f) Proof of margin to be checked with the applicants before sanctioning the loan
- g) Proper valuation is to be ascertained by the empanelled valuer
- h) Supplementary search and valuation report is to be taken on completion of the project
- i) Genuineness of the builder/project is to be ascertained
- j) Mortgage formalities are to be completed with stamp duty applicable in the state
- k) Execution of security documents including signing of Letter of Guarantee by the Guarantor/s, if any with proper stamp duty
- l) Credit Process Audit (CPA), Vetting of documents from law officer/legal advisor are to be done before disbursement of loan, wherever applicable
- m) Stage-wise inspection and disbursement for property under construction is to be done to control misutilisation of funds
- n) Takeover norms are to be applied wherever necessary
- o) Special precautions are to be applied in case of loan to NRI customers
- p) Mandatory insurance of the house/Flat is on completion of construction with bank clause
- q) In case of composite loan (Purchase of plot & construction of house), Care should be taken for timely completion of house fixed by the bank otherwise commercial rate of interest will be applicable etc.

MSME Portfolio: MSME is an important component of priority sector advances and have larger share of total advance of the bank. It is also one of the largest employers after agriculture in the country. MSME is a very profitable venture for bank in terms of income generation if managed in performing status. Monitoring of MSME loan is important to keep the account healthy and performing.

Impact of monitoring in MSME can be understood through an example. Let us take an example,

If any businessman comes to us to avail one Cash Credit (H) and/or Term loan for business needs, the following steps are taken as part of monitoring. Monitoring is

- i. **Pre-Sanction stage:** The following steps are taken at pre-sanction stage
 - a) Get completely filled application form from the applicant

- b) Compliance of KYC norms and its verification for genuineness
- c) Obtain all financial papers and ITR and get is verified for Lits genuineness
- d) Scrutiny of current account maintained in our bank as well as other bank
- e) Inspection of the business unit
- f) Get the approvals & clearances certificate wherever applicable
- g) Completion of pre-sanction and due diligence of all the parties of the application
- h) Assess the loan considering all the financial parameters
- i) No Objection Certificate (NOC) from Banks or Financial Institutions in case of take-over accounts
- j) Obtaining Legal Opinion & Certificate of Induction of Promoter's margin

ii. During Sanction stage:

- a) Communication and acceptance of all terms and conditions of sanction
- b) Execution of security documents including signing of Letter of Guarantee by the Guarantor/s,
- c) Creation of Charge/Mortgage on Prime & collateral securities & Vetting of documents.
- e) Completion of Credit Process Audit (CPA) wherever applicable and also Legal audit if required.
- g) Strict compliance of all Terms and Conditions of sanction form part of pre-disbursement monitoring

iii. Post Disbursement stage: Banks to initiate steps to ensure proper end use of funds

- a) Scrutiny of Monthly and quarterly progress reports / operating statements of the borrower
- b) Regular inspection of borrower's assets charged to the lender's as security
- c) Periodical scrutiny of borrower's books of accounts and no-lien accounts maintained with other banks
- d) Periodical visits to the units is to be done
- e) System of periodical stock / receivable audit, in case of working capital finance and timely renewal of the exposure.
- f) Defective disbursement will not create a quality asset thereby compromising the interests of the Bank
- g) Insurance of Prime security (assets created out of bank's finance) and collateral security.

Monitoring Term Loan

- a) Obtaining of Performa invoices and its evaluation
- b) Disbursement of Term Loan together with promoter's margin by direct payment to suppliers/vendors.
- c) Due precaution to be taken if payment is made to sister concern/ related party's account while disbursement of Term Loan

- d) Arrangement for financing cost overrun, if any
- e) Impact of time overrun and cash generations consequent to such overrun.
- f) Certificates from various independent agencies like Architect /Contractor / Chartered Accountant (CA) for progress in project implementation.

Other monitoring points:

- Identify the problems faced by the borrower and explore the option of timely remedial measures like rescheduling/restructuring where the projections are not met and the actual performance varies by a wide margin
- Delve deep into why the borrower is finding it difficult to service interest on time, repay installments on due date, meet commitments of non-fund based limits in time and initiate proper remedial measures.
- Initiate quick and appropriate recovery measures in cases where 'Exit Option' is not feasible and where the interest of the Bank is under threat, in all such potentially NPA account

Monitoring of non fund based limits: Banks provide NFB(Non Fund Based) facilities mostly in the form of LCs (letter of credit) and BGs (Bank Guarantee).These are contingent in nature. These also should be monitored with same degree of prudence and diligence. In case of borrowers' inability to arrange the required funds, the bank has to pay the amount involved in LC. Monitoring of an LC limit thus involves continuous vigil on the operations of the related account. Monitoring of BGs also tends to protracted (prolonged for long period) as BGs are initially issued for a specific period subject to renewal and thereafter on expire again revolved.

Conclusion

For proper monitoring, various credit & monitoring related policies are to be followed. Thus if we keep proper and regular monitoring as mentioned above, there is no chance of the assets turning into stress assets. The main objective of monitoring is the disbursal of credit in conformity with laid down procedures, the safety of the amount lent is ensured, the account is conducted in the manner normally expected and the account continues as a performing asset. As retail and MSME is a major loan segment of banking industry, proper care should be taken starting from pre-sanction to final recovery of money lent along with interest. So continuous and rigorous monitoring is the need of the hour.

Ranjit Kumar
STC Bhubaneshwar





CREDIT MONITORING IS What to see and where?

INTRODUCTION : With liberalization, globalization and opening up of the economy, Indian Banking has become vulnerable to the spillover and contagion effects. The challenges of increased competition and profitable survival have necessitated maintaining high credit quality and controlling growth of stressed assets. During the last decade, in the wake of global slowdown, Indian economy has shown definite symptoms of slowdown and the growth rate has gone down significantly. Therefore, the challenge before the bank is dual, not only good quality assets are added but also quality of added assets is maintained. In this context, proper monitoring of credit in banks has assumed greater significance.

Credit Monitoring is an integral part of lending activity. Banks have a great responsibility to maintain the quality of the assets and to recover the interest and other dues in time. Though adequate precautions are taken during assessment and sanction of a loan, a banker has to be more vigilant after sanction of the loan. Unless early warning signals are captured, a bank may not be able to take proper remedial measures to arrest the slippages in the quality of the asset. Banks, need to put in place

a very sound and effective credit monitoring system to keep a watch on the borrower's account from various angles.

The success of credit monitoring largely depends on two aspects, namely the co-operation of the borrower clients in furnishing the required data and statement to the banks on time and the capacity and knowledge of the credit monitoring authorities to take timely decisions and corrective steps to keep the borrower accounts in good health.

Credit Monitoring : Monitoring of the credit portfolio and accounts is essential in order to maintain the quality of the credit portfolio of the bank. In line with the international practices, it is imperative for the banks to implement prudential norms of income recognition and assets classification.

The focus of the monitoring process is always to ensure the safety of funds lent and to check that the account is sanctioned as per terms and conditions of the bank. Credit monitoring is considered as an essential tool in today's market viability. Monitoring covers all the three stages namely :

1. Pre Disbursement Stage : It covers obtaining satisfactory credit reports from existing lenders, execution of the stipulated security documents including creation of collateral security / Mortgage as per terms of sanction, obtaining Letter of Guarantee from the guarantors, if any. The other formalities such as vetting of documents by legal advisors and ensuring disbursement by the other participating banks and FIs are also

required.

2. Disbursement Stage : During the disbursement, one should ensure the end use of funds by disbursing the amount in the right manner. Credit delivery in loan accounts is distinct from Overdraft and Cash Credit accounts. All disbursement should be related to actual / acceptable levels of performance of the business units and in line with the basic objective of safety of the bank's exposure in the credit assets. The disbursement should be commensurate with the progress of the project / Business activity, also takes into account the extent of margin brought in by the promoters up to the given point of time.

3. Post Disbursement Stage : This forms a substantial part of the monitoring function in the bank. Actual performance of the borrowers should be monitored by inviting operational data at regular intervals. The particulars furnished by the borrowers need to be compared with the projected performance provided before granting of loan. Periodical inspection and stock audit should be ensured. Analysis of the audited financials and review of the account, at least once in a year is the most integral part of Post disbursement monitoring. Timely identification of accounts showing symptoms of stress and putting them under watch category for constant monitoring is absolutely imperative.

Need for Credit Monitoring in present scenario : Monitoring of the borrower account on an ongoing basis will facilitate foreseeing the problems and taking corrective measures to meet the adverse impact. Effective

credit monitoring will ensure proper usage of loan funds and reduce the loan losses which will in turn maximize the returns to the banks. Credit monitoring is essential to keep account safe from fraud. It is essential that any suspicious activity be discovered early.

The growth of the economy depends upon the efficiency and stability of the banking sector. The most important factor which measures the health of the banking industry is Non Performing Assets. NPAs have direct impact on the financial performance of the banks i.e. their profitability. It denotes the efficiency with which a bank is optimizing its resources and therefore, serving an index to the degree of asset utilization and managerial effectiveness. Therefore, with proper and effective credit monitoring, we can curtail the chances of an asset becoming a Non Performing Asset.

Sincere monitoring in respect of (a) Verification of securities (b) Insurance cover (c) end-use of fund (d) review of stock statement (e) recovery of ad-hoc sanctions and (f) Frequency of over drawings in the account; may contribute to prevention of non performing accounts to some extent. In view of the limited contribution of the above monitoring items, few other variables like operation in the account and strategic standing of the firm should be included in the monitoring process. Along with these arrangements, it is necessary to create awareness on importance of credit monitoring and filling up of knowledge and skill gaps. Towards this end, we have to pay special attention to train and educate the customer and staff in related areas.

Dimple Kaur
R.O. Agra



प्रभावी ऋण अनुश्रवण के उपकरण (टूल्स)

बैंक द्वारा प्रदत्त ऋण को मानक श्रेणी में बनाये रखने के लिये, ऋण खाते को लगातार अनुश्रवण करने की आवश्यकता होती है। कोई भी ऋण, जिसे बैंक स्वीकृत करता है, उसमें विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देने के बावजूद भी एक सीमा तक जोखिम रहता ही है। यह आवश्यक है कि शाखा स्तर के कार्मिक-ऋण अनुश्रवण नीति, ऋण नीति, जोखिम प्रबंधन नीति एवं अन्य नीतियों से पूरी तरह परिचित हों। नोट मंजूर करते समय सभी नियम एवं शर्तों का पालन सुनिश्चित करें। ऋण निधियों का अंतिम उपयोग अनिवार्यतः मंजूरी नोट के अनुसार तथा वास्तविक उद्देश्य के लिये ही किया जाना सुनिश्चित करें। खाते में सुचारु लेन-देन न होने के कारण खाते अनर्जक आस्तियों के रूप में वर्गीकृत हो जाते हैं। खातों को मानक श्रेणी में बनाये रखने के लिये बैंक द्वारा कुछ अनुश्रवण टूल्स निर्धारित किए गये हैं, जिसका ध्यान रखकर खाते को मानक श्रेणी में बनाये रखा जा सकता है। ऋण खातों के प्रभावी अनुश्रवण के लिये कुछ महत्वपूर्ण अनुश्रवण टूल्स हैं-

* स्टॉक विवरण, बुक डेट विवरण, एमएसओडी, क्यूपीआर. ये सभी विवरण (जिन खातों में जो लागू हो) निश्चित/निर्धारित समय पर ग्राहक से प्राप्त करना चाहिए तथा इसकी नियमानुसार जाँच करनी चाहिए। स्टॉक विवरण, बुक डेट एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसके उचित ढंग से विश्लेषण करने पर खाते के कार्यनिष्पादन के संबंध में नियमित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

* सभी योग्य खातों में क्यू-4/एम-6 निरीक्षण रिपोर्ट, तकनीकी अधिकारी की निरीक्षण रिपोर्ट, स्टॉक ऑडिट, फैक्ट्री निरीक्षण रिपोर्ट के द्वारा भी खाते के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

* एमसीएमआर विवरण-सभी स्तरों पर अनुश्रवण के लिये यह एक महत्वपूर्ण साधन है। योग्य खातों का विवरण पूरी सूचना के साथ L-5 के माध्यम से भेजी जानी चाहिए एवं उसकी जाँच, मॉनिटरिंग अधिकारी के द्वारा की जानी चाहिए। मॉनिटरिंग अधिकारी के सुझाव/टिप्पणी को ध्यान में रखकर खाते का अनुश्रवण सुनिश्चित

किया जाना चाहिए।

* ऋण खातों का रिव्यू/रिन्यूवल एक महत्वपूर्ण अनुश्रवण टूल है। निश्चित अंतराल पर खाते की स्थिति का आंकलन करते हुए रिव्यू/रिन्यूवल करना चाहिये।

* लेखा परीक्षित, वित्तीय विवरण एवं अन्य वित्तीय विवरण एक महत्वपूर्ण अनुश्रवण टूल्स हैं, इसकी जाँच से खाते के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही यह पता चलता है कि खाते का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप हो रहा है या नहीं।

* विभिन्न लेखा परीक्षा रिपोर्ट के माध्यम से भी किसी खाते के संबंध में तत्काल सुधार के संकेत प्राप्त होते हैं। लेखा परीक्षा रिपोर्टों में जिन विसंगतियों के संबंध में अवगत कराया गया है, उसका सुधार/निदान सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

* ऋण खातों के अनुश्रवण में PSA एवं एसएमए-0,1,2 का विशेष महत्व है। जो खाते PSA या एसएमए-0,1,2 श्रेणी में वर्गीकृत हैं, उन खातों के अनुश्रवण पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता होती है। जिन खातों का सही तरीके से अनुश्रवण नहीं किया जाता वहाँ खाते अनर्जक आस्तियों के रूप में वर्गीकृत हो जाते हैं। अतः यदि खाते PSA या एसएमए-0,1,2 में परिलक्षित हो रहे हों तो उन खातों के अनुश्रवण पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।

ऋण अनुश्रवण एक अनवरत प्रक्रिया है। नियमित रूप से ग्राहक एवं उसके व्यापार के संबंध में जानकारी अवश्य प्राप्त करते रहना चाहिए। ऋण अनुश्रवण के सभी महत्वपूर्ण टूल्स का प्रयोग कर हम खातों को मानक श्रेणी में बनाये रख सकते हैं। यदि कुछ तात्कालिक/आकस्मिक कारणों से खाते में अनियमितता देखी जाती है, तो बैंक के नियमानुसार हमें सभी आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिए।

प्रवीण कुमार झा
क्षे.का, इंदौर





Credit Monitoring - a paradigm shift in resolving stressed assets

The basic objective of credit monitoring is to ensure that the assumptions made at the time of sanction are scrupulously followed and the quality of asset confirms generation of revenue to the bank and the borrower as well. This apart, there remains no diversion of physical & financial assets of the credit limit sanctioned/disbursed, that is, to prevent slippage, ensure complete end use of fund, increase productivity, profitability & operational efficiency of the unit for which bank funds are lent.

Credit monitoring starts with the initial step of identifying a potential borrower by way of proper due diligence, identification of proper risk mitigants including ascertainment of proper documentation and collaterals, market and industry report, scanning of financials, credit rating and reports, Govt. and regulators' policy/guidelines including adherence to the norms & standards of Board approved monitoring policy of Bank. Beyond sanction of a credit limit, follows the de-facto monitoring methods and processes during its disbursement stage like making fund available for actual utilization in creating assets, i.e. proper end use of fund and at every stage of disbursement of credit limit. The way of disbursement needs prudence of the banker in assessing and judging sources and application of fund of the borrower, share of contribution upfront, credentials of its suppliers, debtors & creditors...etc. Various credit limits like term loan (Short & Long), Cash Credit, Overdraft, Non Fund Based limits, MSME, Agril, Retail...etc require compliance of their respective terms of sanction and supervision by Bank at regular intervals. Here the real and effective need is to be watchful through a process of Credit Audit, review of credit limit-both at account & portfolio level, identification of early warning signals, flagging of accounts...etc. The reason for deviation from banker's standard assumption gets noticed out of various issues like loss of major customers, non-availability of prime raw material (import or inland) leading to stagnancy of production, adverse weather condition leading to failure of large agricultural projects, excess market borrowings, adverse market reports, devolvement of LCs, invocation of Guarantees etc.

While banks have devised/implemented a Board approved monitoring policy, we still find a gap to be bridged to prevent surging slippages and increased loan loss provisions. Needless to mention that RBI has categorically advised banks to identify special mentioned

accounts (SMA) under its subcategories as SMA-0, SMA-1 & SMA-2. In ordinary course of business, we come across symptoms like huge gap in sales/margin level vis-a-vis its projection and/or comparison to yester year, downward credit rating both internal & external, frequent request for overdrawing... are few of these types. Hence, it is incumbent upon a banker to be alert on a criss-cross check through adoption of various monitoring TOOLS like perusing stock/BD statements, QPR/ QIS, MSOD, factory Visit Report, Stock Audit remarks, quarterly & annual Audited financial statements, minutes of Consortium Meetings, market & media information and so on.... It's a fact that monitoring credit limits- both at account & portfolio level- is an integral part of lending activity of banks in maintaining the quality of assets and recover the interest in time, save capital & reduce loan loss provisions. Hence, it's of paramount importance to capture EWS so that timely and adequate remedial measures can be taken.

The major shifts in monitoring theory & practice of bankers have tilted towards:

- Objective evaluation of economic value of a client-no matter how long such connections do we have. Old is not gold always in commercial relationship.
- Creation of a dashboard to identify new limits, renewals, type of stocks/WIP/Receivables and its aging, security, margin, receiving inputs from Branches on irregularities & observation, automated system of reminder for remedial measures at each stage/ hierarchy of bank....etc. creation of a dedicated analytical platform will only help to initiate timely decisions/ actions.
- Need of an advanced monitoring approach-completely different from a traditional one so that there can be adequate brake to GNPA level.
- A complete move to a digital monitoring system which can capture EWS information in advance, collect & collate data from various sources and help quicker decision making. This will help controlling the probability of default (PD) and put the bank even to have a check on a specific portfolio of customers. It will also arrange for timely perfection of collateral assets & thereby reduce loss given default (LGD). Board of Banks can get help from MIS to redesign and redraft credit policy and decisions on various sectoral deployment of credit, redefine quickly

on risk mitigants even quickly securitize assets having EWS and having remote revival possibilities, identify risky portfolio/ segment in market...etc

- A complete segmental monitoring for all segments like Large Borrowers, Retail, Agriculture, SME & others is a necessity which can only be adopted in resolving stressed assets.
- Data collected from various sources like CBS statements, financial statements, market information, credit bureau information...etc will help to perceive bank's exposure to various sectors, various geographies and various segments, pricing of product, product mix, product design and evaluation.
- Bank's data warehouse will need adequate capacity building to handle AI or ML algorithms so that automated process and needful feedback is favored to bank's monitoring desk to arrive at necessary steps. Hence bank should have a long term planning for a pool of officers of expertise to be deployed at least in credit delivery & monitoring division of its Corporate Centre.

However, Banks ultimately need to remain strictly alert during pre & post sanction of credit limits and its due diligence. Checking borrowers' interest through a process of forensic audit can never be ruled out. Simultaneously, Banks need to invest in technology up-gradation, enhance internal skill-sets, formulate a completely separate channel for monitoring, establish a team to work on market intelligence of borrowers and their business operations, establishing linkages to elicit information from RoC, Credit Beareau etc... are some of the paradigm shifts banks are to undertake. It is of prime importance to evaluate transactional data (account related) with regulatory & external information like Balance sheet, Audit Reports etc so that early detection takes place and an effective mitigation of credit risk is arranged.

To conclude, Banks with sound credit monitoring standards & practices can have higher risk bearing capacity, higher Return on Capital (ROC) & Assets (ROA) and they can compete ahead of others with better pricing; leave apart reducing their capital demand and reduced level of loan loss provisions. These banks will create maximum credit to the economy and increase a lot of gainful employment opportunities for people. Thus need of the hour for the bank is to increase their RISK INSIGHTS about the borrowers.



P. C. Panigrahi
FID, C.O.



CREDIT MONITORING

PRACTICAL APPROACH

With the introduction of new concept of incipient stress prevalent in the standard assets, guidelines were flouted to effectively monitor these accounts closely. It is evident that unless corrective measures are undertaken the asset will go beyond the control and herculian efforts to be made for upgrading the account.

The bank is passing through a phase where the slippage is becoming a burden on the profitability. Any account slipped to NPA will cease to generate income to the bank besides the account attracts certain provision. With this background and also to maintain quality assets, we have identified the top 20 accounts of the zone which are critical and may pose a threat if corrective measures are not adopted. These accounts were scrupulously monitored with 360 degrees focus and the officials from the field to FGMO were actively involved to keep the account free from stress.

With the positive signals coming from the field, we have extended to study Top 20 stress accounts in each region under our jurisdiction.

Since the focus is on few accounts but involving huge amounts, our efforts were rewarded and case specific action was taken to a logical end.

Similar to this approach, my Regional heads have sensitized the field to have a close monitoring with the top 100 account of each REGION.

The above strategies have paid substantial dividend, as the zone with around 41% stressed assets as on 30.09.2018 without IFB have been curtailed to 12% February/March 19

It should be our endeavor to reduce the stress level in stressed assets and march ahead with extra zeal and enthusiasm.

We attribute the success has originated from the field due to the sincere involvement, extended by RO and FGMO. In this endeavor we wish to state that the support extended by Central office in terms of tools / technology/ Data Analysis etc. is praise worthy.



Sanjay Sharma
FGMO Delhi



ऋण खातों का जीवन चक्र एवं ऋण अनुश्रवण के चरण

पहले लोग बचत करते थे, फिर उसका उपभोग विभिन्न जरूरतों को पूर्ण करने के लिए करते थे. बैंकों से ऋण लेने की प्रक्रिया भी आसान नहीं थी, न ही हर किसी के लिए ऋण की सुविधा उपलब्ध थी. वर्तमान में, जीवन शैली में बहुत परिवर्तन आ गया है. इस परिवर्तन में मीडिया की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है. मीडिया ने लोगों को अपनी जरूरतों/इच्छाओं की पूर्ति के लिए इंतजार करने की आदत को बदल देने के लिए जैसे हिपनोटाइज़ कर दिया है. अब लोग अपनी जरूरतों की पूर्ति अपनी बचत से नहीं करते, बल्कि हर जरूरत के लिए ऋण की सुविधा उपलब्ध हो गई हैं. इस व्यापार में सरकारी एवं गैर सरकारी आदि अनेक वित्तीय संस्थाएं जुड़ी हुई हैं. हर वस्तु आपको थोड़े से डाउन पेमेंट पर उपलब्ध हैं, शेष किशतों में चुकाना हैं. बैंकों को भी अपने प्रोडक्ट्स, मार्केट की आवश्यकता के अनुसार डिजाइन करने पड़ रहे हैं. आज का मार्केट रिटेल का मार्केट हो गया हैं. ऋण की राशि भी सीमित रहती हैं, ब्याज दर आकर्षक होता है, भुगतान की अवधि भी कम होती हैं, सबसे बड़ी बात एनपीए होने की संभावना भी कम ही रहती हैं.

ऋण खातों का जीवन चक्र, कार्य, समयावधि पर निर्भर करता है ऋण का प्रस्ताव प्राप्त होने से ऋण खाता, पूरी तरह समायोजित होने तक का समय, तीन माह से लेकर 30 वर्ष तक का हो सकता हैं एवं इस पूरे जीवन चक्र के दौरान मॉनिटरिंग या कहा जाए कड़ी नजर रखना आवश्यक हो गया है. मॉनिटरिंग हर स्तर पर आवश्यक है, पूर्व में लोग सम्मान के प्रति अधिक जागरूक रहते थे कि समाज में प्रतिष्ठा पर कोई आंच नहीं आए, चाहे घर में खाने के लिए अन्न भी ना हो

तो स्वीकार था. लेकिन आज पैसा महत्वपूर्ण हो गया है, पैसा है तो प्रतिष्ठा है, इसलिए दिनों दिन एनपीए का स्तर नई ऊंचाइयों को छू रहा है. सरकारी क्षेत्र के बैंकों के लिए परेशानी ज्यादा बढ़ गई है, क्योंकि वसूली के लिए उनके नियम गैर सरकारी संस्थाओं की तरह कठोर नहीं हैं. इस परिस्थिति से निपटने के लिए बैंकों द्वारा मॉनिटरिंग के महत्व को महसूस किया गया एवं इसके लिए उच्च कार्यालय द्वारा अलग विभाग बना कर बदलती परिस्थितियों के अनुसार, नित नए नियम एवं दिशानिर्देश ग्राउंड लेवल पर कार्य करने वालों के लिए जारी किए जाते हैं, ताकि क्रेडिट पोर्टफोलियो की गुणवत्ता को उच्च स्तर का बनाये रखा जा सके. ऋण लेना एवं ऋण देना, दोनों पार्टियों के लिए लाभदायक होता हैं, परंतु यह संबंध ऋण खाते के जीवन तक सही बना रहे उसके लिए दोनों पक्षों को सतर्क एवं तत्पर रहना आवश्यक है. आइए, इसे हम चरणबद्ध तरीके से समझते हैं.

1. प्रथम चरण : आवेदक द्वारा ऋण आवेदन

आवेदक का प्रारम्भिक साक्षात्कार, उसकी पूरी जानकारी, आवेदन से संबन्धित सभी की सिबिल रिपोर्ट इत्यादि के आधार पर अगर आवेदन संतोषजनक हो तो उपयुक्त योजनानुसार, आवेदन की शर्तों-नियमों की जानकारी, आवेदन फॉर्म एवं उसके साथ प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेजों की जानकारी आवेदक को देना.

2. द्वितीय चरण :

आवेदक द्वारा योजना का आवेदन फॉर्म पूर्ण जानकारी के साथ आवेदक/सह आवेदक/ जमानतदार/सभी डायरेक्टर/ट्रस्टी/पार्टनर

आदि जो भी ऋण आवेदन से जुड़े हों, के फोटो के साथ, स्व सत्यापित के.वाय.सी. दस्तावेजों, तीन वर्षों के आयकर रिटर्न, वित्तीय प्रपत्रों एवं सभी की क्रेडिट इन्फॉर्मेशन रिपोर्ट, ऋण योजना से संबंधित सभी दस्तावेज, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, व्यापारिक प्रतिष्ठान से संबंधित निर्धारित लाइसेंस, तीन वर्षों की वित्तीय प्रपत्र, देनदार/ लेनदार के संबंध में जानकारी, प्रतिभूतियों से जुड़े दस्तावेज की प्रस्तुति, व्यापार के संबंध में अन्य महत्वपूर्ण जानकारी. रिटेल ऋण- आवेदक के निवास/कार्य स्थल एवं अगर मकान बनाने/ खरीदने के लिए आवेदन हो तो उसका निरीक्षण एवं मार्केट रिपोर्ट तथा संपत्ति के मूल्य का आकलन और उस पर किसी अन्य का कोई प्रभार तो नहीं हैं/किराएदार या अन्य किसी के कब्जे में तो नहीं है आदि महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करना. आवेदक के परिवार से मुलाकात एवं आवेदक की पुनर्भुगतान क्षमता और ऋण चुकाने की इच्छा का सही आकलन. व्यापार हेतु ऋण-आवेदक की योग्यता का आकलन, व्यापार स्थल का निरीक्षण तथा मार्केट रिपोर्ट व्यापार और आवेदक के संबंध में जानकारी. मैनुफैक्चरिंग यूनिट के बारे में जानकारी, कर्मचारियों की संख्या, उनकी योग्यता, आवेदक एवं अन्य टेक्निशियन आदि के अनुभव के बारे में सभी जानकारी का होना आवश्यक है. प्रोजेक्ट में लगने वाले फंड एवं उसके व्यवस्था के संबंध में जानकारी, आपदा मॅनेजमेंट के बारे में जानकारी. योजना के अनुसार मार्जिन का इंतजाम कहाँ से और कैसे किया जाएगा? मशीनें कहाँ से खरीदी जाएंगी, उनकी क्षमता, आदि के बारे में तकनीकी अधिकारी द्वारा निरीक्षण एवं विस्तृत रिपोर्ट का आकलन.

3. तीसरा चरण : ऋण आवेदन की प्रोसेसिंग

संबन्धित बैंक से क्रेडिट इन्फॉर्मेशन प्राप्त करना, मार्केट रिपोर्ट, एवं अगर ऋण व्यापार आदि के लिए लिया जा रहा है तो व्यवसायिक एजेंसियों द्वारा एकत्रित डाटा/कंपनी सर्च पोर्टल/आरबीआई द्वारा जारी चूककर्ताओं की सूची की जांच. सीएमआरडी वेब पोर्टल में डिफॉल्टर्स सूची, प्रतिभूतियों पर वकील द्वारा दी गई सूचीबद्ध सर्च रिपोर्ट का विश्लेषण, उसमें कोई भी नकारात्मक टिप्पणी तो नहीं हैं. वेल्यूएशन रिपोर्ट के अनुसार संपत्ति का मार्केट मूल्य/गाइडलाइन के अनुसार ही हैं, उसे अधिक नहीं दिखाया गया है. फैक्टरी/मशीनों का मूल्यांकन उचित है. सहयोगी संस्थाओं के संबंध में जानकारी एवं उनके भी बैंक खातों का निरीक्षण बैंक स्टेटमेंट की जांच-चेक रिटर्न/फंड डायवर्जन आदि तो नहीं दिख रहा है. खाता एक से अधिक बैंकों में तो नहीं संचालित किया जा रहा है. इंटर फर्म ट्रांजेक्शन तो नहीं किए जाते, देनदार और लेनदार के साथ किस तरह के संबंध हैं एवं चुकाने की समयावधि में अनुशासन, अगर पूर्व में किसी अन्य

बैंक के साथ संबंध थे तो वो कैसे थे एवं उसे छोड़ने के पीछे क्या कारण हैं. पूर्व बैंक से क्रेडिट इन्फॉर्मेशन रिपोर्ट प्राप्त करना एवं उसका विश्लेषण. यह सुनिश्चित करता है कि आवेदक का नाम आरबीआई के चूककर्ता ग्राहकों की सूची में तो नहीं है. जो संपत्ति प्रतिभूति के रूप में बैंक को दी जा रही है वो सभी प्रकार के प्रभारों से मुक्त है. रिस्क वेटेज की जांच एवं उसके आधार पर ब्याज की गणना करना.

4. चतुर्थ चरण :

ऋण सीमा स्वीकृति उपरांत, आवेदक/सह आवेदक/जमानतदार आदि सभी पक्षों को स्वीकृति एवं उसकी शर्तों की जानकारी एवं उनकी स्वीकृति प्राप्त करके निर्धारित दस्तावेज के साथ तय स्टम्प ड्यूटी के साथ निष्पादित करवाना. ऋण स्वीकृति की शर्तों एवं नियमों का पालन. सीपीए/वेटिंग आदि औपचारिकता पूरी करना. सर्च रिपोर्ट में निर्धारित संपत्ति से जुड़े सभी दस्तावेज प्राप्त करके मॉर्टगेंज ड्रा करना. CERS-I में चार्ज का रजिस्ट्रेशन. कंपनी के केस में ROC में चार्ज लिखवाना. प्रतिभूतियों का इंश्योरेंस करवाना.

5. पंचम चरण :

स्वीकृति की शर्तों के अनुसार निर्धारित मार्जिन के अनुसार ऋण का वितरण. ऋण वितरण के उपरांत समय दर समय निरीक्षण कर ऋण का उचित उपयोग सुनिश्चित करना.

6. छठवां चरण :

खाते का नियमित संचालन. ब्याज/किशतों एवं अन्य प्रभार का समय पर भुगतान. रनिंग सुविधा में सभी सेल्स एवं परचेज ट्रांजेक्शन बैंक खाते के माध्यम से ही करना. मियादी ऋण के केस में भी समय-समय पर बैंक के चार्ज में रखी प्रतिभूति का निरीक्षण एवं ग्राहक से संपर्क बनाए रखना. नियमित DBC लेना व प्रतिभूतियों का इंश्योरेंस करवाना. रनिंग सुविधा के मामले में नियमित निरीक्षण करना एवं प्राथमिक प्रतिभूति, जो कि ग्राहक के कब्जे में होती है, के स्तर का मासिक विवरण एवं देनदार एवं लेनदार, माह के दौरान खरीदे/बेचे गए माल की जानकारी/देनदार/लेनदार के दिनांकनुसार सूची प्राप्त कर उसके आधार पर डीपी रिलीज करना. ग्राहक द्वारा निर्धारित मासिक/त्रैमासिक विवरण समय पर प्रस्तुत किए जाएं, सुनिश्चित करना. सभी साख सुविधाओं का ग्राहक की जोखिम रेटिंग के आधार पर हर वर्ष या अधिकतम 18 महीने में नवीनीकरण करना आवश्यक होता है. स्टॉक ऑडिट-हर वर्ष प्रोप्रायटर एवं पार्टनरशिप के खातों में ₹ 3.00 करोड़ से अधिक एवं अन्य में ₹ 5.00 करोड़ से अधिक की नकद साख सुविधा के खातों में स्टॉक ऑडिट करवाना आवश्यक होता है. ताकि पता लग सके कि स्टॉक का मूल्यांकन

उचित किया जा रहा है एवं प्राथमिक प्रतिभूतियां ऋण सुविधा के अनुरूप हैं एवं उनमें किसी प्रकार का डायल्यूशन नहीं है. खाते के नवीनीकरण के समय, सभी मूल जानकारी पुनः एकत्र की जाती हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ऋण सुविधा का उपयोग उचित तरह से हो रहा है, फंड का डायवर्जन तो नहीं हो रहा. अगर कहीं भी कोई चेतावनी सूचक चिन्ह नजर आते हैं तो, अविलंब उनका समाधान करवाया जाता है, ताकि वित्तीय संस्था के हितों की रक्षा हो सके, एवं भविष्य में खाता दबावग्रस्त या एनपीए संवर्ग में वर्गीकृत ना हो. वित्तीय वर्ष की समाप्ति के उपरांत वर्ष से संबन्धित प्रपत्र नियमित ग्राहक से जमा करवाना, एवं खाते में टर्न ओवर बैंक द्वारा accepted sales के अनुरूप हो, उससे कम होने की दशा में ग्राहक से मिलकर यह जानना, कि ऐसा क्यों हो रहा है एवं सेल्स/निर्माण के लक्ष्य प्राप्ति के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं या उनमें कोई कमी है, या कोई अन्य गंभीर समस्या है तो उससे निपटने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं. मैन्यूफेक्चरिंग यूनिट आदि के केस में अगर दबावग्रस्त के लक्षण दिखाई दे रहे हैं तो उस पर समय पर ध्यान देना. अपनी स्ट्रेस्ट एसेट पॉलिसी के तहत समाधान ढूंढना.

7. सातवां चरण : मियादी ऋण के केस में खाते का समायोजन

उचित मॉनिटरिंग की जाए तो रिंग खाते सबसे अधिक रेवेन्यू जनरेट करते हैं एवं संबंध लंबे समय तक चलते हैं.

मॉनिटरिंग सबसे महत्वपूर्ण हो गया है एवं बैंक द्वारा भी ड्यू डिलिजेंस आदि पर बहुत महत्व दिया जाता है, ग्राहक का चुनाव सही करना, ऋण सीमा उसकी आवश्यकता को समझ कर सारे वित्तीय प्रपत्रों, बिक्री कर/जीएसटी/संपत्ति कर/आयकर, बैंक खातों की छानबीन करके, निर्धारित करना एवं स्वीकृति सूचना की शर्तों का अनुपालन करना एवं करवाना तथा उसके निर्देशानुसार वितरण करना, शाखा द्वारा ग्राहक के साथ लगातार संपर्क रखना, ट्रांजेक्शन पर नजर रखना, निर्धारित मासिक/त्रैमासिक आदि की समय पर प्रस्तुति एवं सिस्टम में अपडेशन आदि वितरण उपरांत ऋण राशि के उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए निरीक्षण, प्रतिभूतियों का इंश्योरेंस, नकद साख के खातों में हर तीन महीने में स्टॉक का निरीक्षण एवं सभी खातों में हर वर्ष संपत्ति का निरीक्षण.

उचित मानिटरिंग ऋण सुविधा के आरंभ से खाते को अच्छा बनाए रखने के लिए आवश्यक है.

रश्मि बाला गुप्ता
क्षे. का. इंदौर



MESSAGE FROM CREDIT MONITORING & RESTRUCTURING DEPARTMENT, C.O.

Do you?

- ▶ Know the Stressed Asset Position of your Branch/RO/FGMO?
- ▶ Visit CMRD Web Portal daily?
- ▶ Reduce the Stressed Asset Position of your Branch/Office?
- ▶ Undertake timely Review/Renewal of Loan Accounts?
- ▶ Contact your stressed borrowers daily?
- ▶ Submit MCMR, M-27, F-1, M-6 etc. on time?
- ▶ Reply the audit reports in time?
- ▶ Scrutinise the borrower's account operations?
- ▶ Ensure timely submission of stock statements, Insurance by the customers?

MISSION SWATCHH ASSET

Let's adopt our Mission as 'Mission Swatchh Asset' and kick off the project 'Knock the Mock'. We are circulating 'Potential Stress Accounts' (PSA) Data for MSME (Rs. 10.00 lakh & above), Retail (Rs. 5.00 lakh & above) and Agriculture (Rs. 50000/- & above only CCAGR) based upon identified 'Early Stress Signals'. There is an urgent need to work upon these 'Potential Stress Accounts' to avoid such accounts moving to SMA Status.

SUPPORT FROM CMRD, CO

Follow-up through Call Centre: Our department has started follow-up with stressed borrowers pertaining to Retail & MSME segment having outstanding between Rs. 5.00 lakh to Rs. 5.00 crore. Further, we are going to include PSA as well as Credit Card borrowers also.

Centralised Dispatch of Overdue Notices: We have started sending Overdue Notices to defaulting borrowers.

Sending Overdue Notices through e-mail: We have also started sending overdue notices to defaulting borrowers on their registered e-mail addresses.

Sending Alerts to Borrowers through SMS: The department has started supporting the field functionaries by sending SMS to the borrowers on pending review renewals, submission of stock statements and deposit of overdues in loan accounts.



Defaulters' List And Resolution Mechanism - Benefits for Staff

'Credit Monitoring - The Need of the hour!' the punch-line of the Department, is actually leading to development of new tools with advanced technology/Data Analysis, which is expected to strengthen Credit Monitoring System of the Banks. Obviously, all these with the efforts of staff at Branch/ Office will keep the "loan book of the Bank" healthy.

Being the Head of Human Resource Function of the Bank, I was also critically examining the initiatives taken by the Credit Monitoring Department and introduction of tools/ technology in Credit Monitoring. Certain initiatives like Centralized Outbound Call Centre for Retail and MSME, Centralized Overdue Notices Dispatch Centre, Bulk SMS and mail to SMA Borrowers, SMS reminders to Borrowers for Stock Statement and Review/Renewal is certainly going to support field functionaries from backend. I understand Potential Stress Accounts (PSA) based upon Early Stress Signals (ESS), is an alert System Informing the Branches/ offices the Accounts having 'Incipient Weakness', much before SMA-O.

As Head of the Human resource function of the Bank, I observed from various disciplinary proceedings related to Credit Sanction / disbursements that many of the staff names appear due to improper due diligence, end use of funds and improper Individual Delegation for resolving structured assets.

On these counts, I am happy to note that the department has launched 2 unique and notable tools for the field functionaries. One is "Defaulters List" and other being adoption of "Resolution Mechanism" for resolving stressed accounts.

I understand, under Defaulters list, Department has manually created Defaulters' database of 4.25 lakhs Entities/Individuals, collated from RBI, SEBI, Excise, Central Fraud Registry (CFR), CIBIL, Serious Fraud Investigation Organization (SFIO), Employee Provident Fund Organization (EPFO), Income Tax and Ministry of Corporate Affairs (MCA), which includes amongst other Shell Companies, Dormant Companies/ LLP, Defaulting Companies/LLP's with MCA etc. It also includes Caution Notices issued by Regulatory and Enforcement Agencies. I am sure, if all our staff use this database for:

- Sanction/ Disbursements of loan
- Opening SB/CD Account
- Opening LC/BG/Bills- for checking Beneficiaries
- Sending/Remitting RTGS/ NEFT/DD etc. of comparatively bigger amount, as compared to limit.

will save themselves and the Bank from any untoward incidences. I am told this list is updated on a monthly basis.

It gives me belief that Department has thoroughly scanned cases which turned to SMA, NPA and Fraud and analyzed the reasons and as a learning, introduced such an easy and convenient due diligence tool, which is available to each and every Staff of Bank at his/her PC.

The other option is the adoption of Resolution Mechanism by the Bank. Taking a decision, on a loan Account which is under- "Financial Difficulty" Or a Stress (SMA) is a challenging task with entails risk of account getting rehabilitated or turning NPA. Because of this risk, most of the time the decisions are not taken at all. Thus allowing the Account to turn to NPA

resulting into economic life of asset, financed by banks getting waste.

In case the decision is taken, the risk is attached on course of action to be taken to rehabilitate an account, which requires proper awareness, assessment and articulation with facts and figures. I am happy that the department has vide its policy on "Resolution of Stressed Assets" has adopted "Resolution Mechanism" for every amount which is of ₹ 10 lakhs and above. I understand that this mechanism is supported by Structure of Resolution Committees at all RO's, FGMO's and CO. Further, all the eligible accounts, for such Resolution, are identified centrally by CMRD, CO and provided to each Branch/Office, through CMRD portal. Also, I understand proper formats and Standard Operating Procedures (SOP's) are developed and are part of Policy itself. I believe, such Resolution Committee will add "Collective Wisdom" on a matter of "Rehabilitation" or "Exit"- option, depending upon the case. Certainly, this mechanism allows Branch Heads and / or Credit Officers, to resolve any stressed account in a scientific & methodological manner, supported with technical / risk inputs, wherever required.

The above two tools in my view, are really brought out to safeguard Bank's interest, no doubt, but more so, to safeguards Staff Interest, if used prudently. On the other hand, the above is also customer centric in timely safeguarding them and the economic life of their assets.



Brajeshwar Sharma
HRMD, CO



Importance of timely monitoring of loan portfolio

Asset quality is the most important indicator of a Bank's overall condition. It reflects the efficacy of Bank's Credit Risk Management and the Recovery environment. Poor Asset quality is a statistically significant predictor of insolvency and failing Banking Institutions. Therefore, at the aggregate level, deterioration in asset quality leading to high level of NPAs, not only impacts the functional efficiency but also the ability of the Financial Institutions to recycle the anible resources.

1. Specific plan of action to Ensure safety of the money lent by the Bank

- a. Periodical monitoring of the actual performance of the borrower vis-a-vis the projections accepted at the time of sanction. This will include Sales, Operating Profits, Inventory, Debtors level, Cash Flow, Debt Equity Ratio (DER, Debt ~ Service Coverage Ratio (DSCR), and Break Even Point (BEP) etc.
- b. Identify the problems faced by the borrower and explore the option of timely remedial measures like rescheduling/restructuring where the projections are not

met and the actual performance varies by a wide margin but after interaction with the borrower on a regular basis to have a better understanding of the day-to-day operations, specific problems faced by the unit, the market trend and the performance of the borrower.

- c. Explore the 'Exit Option', wherever feasible, if assistance to the unit cannot be continued in the long run and if it is felt that it will jeopardize the interest of the Bank. Initiate quick and appropriate recovery measures in cases where 'Exit Option' is not feasible and where the interest of the Bank is under threat, in all such potentially NPA accounts.

2. Stages of Monitoring: The monitoring function will commence immediately on sanction of a credit limit. This involves three different stages as under:

a. Pre - Disbursement: Analysis of following parameters is required at pre disbursement stage of loan:-

Status report, No Objection Certificate (NOC) from Banks or

Financial Institutions in case of take-over accounts, Personal visit to such Institutions for a detailed dialogue, Pre-disbursement Inspection of the unit, acceptance of terms of sanction, Execution of security documents & Vetting, Obtaining of Legal Opinion, Creation of Charge/Mortgage on securities (both prime and collateral), Inspection of the unit, Induction of Promoter's margin, of Credit Process Audit (CPA) and strict compliance of all Terms and Conditions of sanction form part of pre-disbursement monitoring.

b. During Disbursement : Various precautions are to be taken during disbursement of loan

Disbursement of limits by the Bank is subject to fulfillment of various commitments on the part of the borrower asset out in the proposal and sanction letter. Mode of disbursement is important for creation of quality assets. Proper care should be taken during disbursement about mode of disbursement. Defective mode of disbursement will not create a quality asset. Monitoring of disbursement is very important especially to ensure proper end use of funds.

c. Post Disbursement : After disbursement of loan, the banker has to provide all post sale services in time upto recovery of entire money alongwith interest

The performance of the unit and operations in the account should be compared, from time to time, with the projected level of activity originally submitted by the borrower. The operations are to be watched by the Branch so that end-use of the funds is ensured. All debits, during the first two months and or upto the full utilization of the limits, shall be specifically authorized by the Branch Head and in his absence by the second official in command. It is his duty to ensure proper end use of funds at all times. Some of the monitoring tools that are available at post disbursement are:

- i. Compiling of Post Sanction inspection report
- ii. Tracking of movement of stocks and rejection of stock
- iii. Ensuring that Sales are in line with projections & Monitoring the realization of debtors
- iv. Verification of books and other records such as invoices, books of accounts, stores records, registers etc., and avoiding unrelated debits to the account

d. Other precautions are: Keeping a tab on large cash withdrawals, Keeping eye on account operations Scrutiny of control returns like Stock Statements / Book Debts statements / QPR/ MSOD Periodic inspection of the Unit and Verification of the assets and securities charged to the Bank Reports of Independent Audit Agencies (Stock Audit Report, Concurrent Audit Report etc.,) Timely review of credit facilities Scrutiny of Audit Report & Financial Statements Submission of

Monthly Credit Monitoring Reports (MCMRs) Prompt and timely recovery of interest / installment / overdue Frequent requests for excess or modification in terms and conditions of sanction and alertness to various external and market information regarding borrower can prevent the account falling in stress.

3. Preventive Measures : Maintaining the health of the account in good order can be ensured if preventive measures are taken well in advance which are.

a. Timely Review of the account : All accounts (fund based and non-fund based) are to be reviewed at periodical intervals depending upon the rating of the borrowers. Timely review of the account is vital as a thorough analysis of the account is made and it will enable the Bank to take suitable steps at the right time. Continuing the limits after its expiry tantamounts to unauthorized extension of the facilities to the borrower and the officials concerned are responsible for any adverse developments in the account after expiry. Non-renewal of the account also results in the account falling under the technical stress category and this should be avoided. Hence, review of the account has to take place on or before due date. In case of genuine difficulties branches or administrative offices may consider short review of such accounts. In any case, it should be ensured that no account remains pending for review at any level. The Sanctioning Authority may take a view with regard to renewal of limits or otherwise even if the account is having overdue.

b. Timely Restructuring of the Account :

i) Business runs on many assumptions and sometimes the realities do not match. There may be cases of

genuine difficulties faced by the borrowers resulting in failure to meet the commitments on time and as per projections. This will result in the account going down in quality. Prompt pro-active measures will certainly help the borrowers to come out of the difficulties. Therefore, capturing of Early Warning Signals well in advance and identification of weakness' on time is crucial. Assessment of the potential of revival may be done on the basis of Techno Economic Viability (TEV) study. Restructuring should be attempted after an objective assessment of the viability and the promoter's intention and when the Bank is convinced of turnaround within a prescribed time frame. In respect of totally unviable units as decided by the Bank/ Consortium, it is better to take steps to recover the dues of the Bank and if necessary, resort to disposal of the security, through legal means, to recover whatever is possible before the security further deteriorates.

4. Conclusion : It is a challenging task for the bank to keep the loan accounts in standard category and for this purpose continuous monitoring of accounts is necessary. Most of the banks have installed multiple monitoring mechanism and inspection at different levels starting from branches to controlling offices along with different categories of auditing. Weakness in appraisal and untimely monitoring have been identified as major reasons for the accounts turning into NPA. RBI has time to time studied and reported the lapses as deficiencies of branches to carry out monitoring of accounts in time.

Dibakar Lenka
STC Bhubaneswar





CMRD Visit - A way to support Branches in maintaining healthy loan book

CMRD visit to the Branch plays an important role and is an effective monitoring tool for the controlling offices. Periodic visit to the Branch helps to keep constant vigil on the Branch. CMRD Visit Report, inter alia, contains overall functioning of credit at the Branch, Number of loans sanctioned with amount, adherence to the laid down guidelines, deficiencies and irregularities found in loan processing, sanction, disbursement and documentation etc. This can be viewed as an opportunity to evaluate the stressed assets of the Branch and administer the level of compliance as regards submission of various credit related statements to the controlling office(s) at prescribed periodicity. This helps in taking corrective action, if warranted, at the very right time.

Following factors are supposed to be taken care while conducting CMRD visit to the Branch:

| SN | Parameters | Details/Remarks/Role of CMRD visiting official(s) |
|----|---|---|
| a | Spurt in advances/ New loans sanctioned during the period under visit | <ul style="list-style-type: none"> • Whether Branch has submitted these statements as per the prescribed periodicity viz., monthly for M-27, fortnightly for F-1 statements & quarterly for QPR and within stipulated time frame. • Whether all sanctions under the delegated authority of the Branch Head are reported in M-27 statements. • Whether Branch has allowed continuous and indiscriminate excesses in loan accounts. • Whether all excesses given in the accounts are reported through F-1 statement. Whether these excesses are adjusted. • What measures have been undertaken by the Branch for adjustment of the excesses, if any. |
| b | Submission of M-27, F-1 & QPR statements: | <ul style="list-style-type: none"> • Whether Branch has submitted these statements as per the prescribed periodicity viz., monthly for M-27, fortnightly for F-1 statements and quarterly for QPR and within stipulated time frame. • Whether all sanctions under the delegated authority of the Branch Head are reported in M-27 statements. • Whether Branch has allowed continuous and indiscriminate excesses in loan accounts. • Whether all excesses given in the accounts are reported through F-1 statement. Whether these excesses are adjusted. • What measures have been undertaken by the Branch for adjustment of the excesses, if any. |
| c | Details of accounts in Potential Stress Accounts (PSA) category: | <ul style="list-style-type: none"> • To know whether Branch is aware about these accounts, as provided by CMRD, CO, every month. through CMRD web portal. • Whether these accounts are taken to Resolution committee (RC) at RO for implementing possible resolution. • What action has been initiated by the Branch for moderation of incipient weakness. |
| d | Details of accounts in Special Mention Accounts (SMA) category: | <ul style="list-style-type: none"> • To know whether Branch is aware about these accounts, as provided by CMRD, CO, every month. • Whether Branch is following up with the borrowers for curtailment of stressed assets taking into account reasons of stress observed in the account. • Particularly, to arrest the account in SMA0 category, whether Branch has initiated any corrective measures. |

| | | |
|---|--|---|
| | | <ul style="list-style-type: none"> To meet the top stressed borrowers and making them aware about the revised guidelines of RBI about stressed assets and its implications on them. |
| e | Details of accounts in mock NPAs' list: | <ul style="list-style-type: none"> Whether Branch is rigorously pursuing the Borrowers for early recovery in these accounts. Whether Branch has reported any likely slippages to RO. To suggest/meet the borrowers in some of the critical cases. |
| f | Pending position of review/renewal of borrowal accounts: | <ul style="list-style-type: none"> To know what is the latest age-wise position of pending review/ renewal of loan accounts of the Branch at various levels viz., Branch/RO/ZO/CO. What are the reasons of pendency. Whether Branch is particular about timely disposal of review/ renewal. |
| g | Status of Legal Audit Compliance (LAC): | <ul style="list-style-type: none"> Whether legal audit (LA) has been carried out in all eligible cases as directed in extant guidelines. What are the reasons of pendency, if any. Whether LA reports are received wherever it has been carried out. If this reads about any deficiency? Whether deficiencies, if any, have been rectified. If not, what course of action has been initiated to protect the interest of the Bank. |
| h | Credit Process Audit (CPA) | <ul style="list-style-type: none"> Whether CPA has been carried out in all eligible cases, mandatorily before disbursement. If not, whether specific approval from the competent authority has been sought for the same. Whether CPA report is qualified. If yes, whether deficiencies rectified. |
| i | Submission of Monthly Credit Monitoring Reports (MCMR): | <ul style="list-style-type: none"> Whether MCMRs in respect of all eligible accounts have been submitted to the concerned monitoring officer as per the set cut-off limit before time frame. Whether deficiencies pointed out in previous MCMR(s) have been rectified. |
| j | Submission of stock statements in all eligible accounts: | <ul style="list-style-type: none"> Whether Branch has timely obtained stock statements in all eligible running accounts. What are the reasons of pendency, if any. Whether Branch has conducted inspection of securities as per prescribed periodicity and report thereof (M6) is submitted to RO. |
| k | Compliance of sanction terms: | <ul style="list-style-type: none"> Whether Branch has complied with sanction terms. Whether compliance certificate in respect of sanctions is sent to the sanctioning authority concerned. |
| l | Maintenance of proper records of loan accounts: | <ul style="list-style-type: none"> Whether Branch has maintained proper record of loan/security documents. Whether appropriate up keeping of loan files is done. Whether loan files are kept in the custody of the competent authority. |
| m | Gold loans | <ul style="list-style-type: none"> Whether engagement of gold appraiser is in force, Gold packets are packed and sealed, Gold packets are properly stacked/arranged in gold/cash safe, Gold loan register is maintained, Balance of Gold packets matches with outstanding gold loan accounts, Gold loans are sanctioned as per extant guidelines with due precaution. |

CMRD visit is basically a support system for the branches/offices. The visiting officials support & guide the branches/offices to de-stress the stressed portfolio.

As detailed hereinabove, CMRD visit, extending over various parameters, puts a timely check on unwanted/detrimental issues and helps not only to protect the interest of the Bank but also to keep a healthy loan portfolio.

A fair CMRD visit report reflects the true picture of the credit functionality of the Branch or a Resien.

Nitin Gosavi
R.O., Baroda



बढ़ती दबावग्रस्त आस्ति, बन रही है त्रासदी

बैंक में दिन प्रतिदिन बढ़ती दबावग्रस्त आस्ति और मॉकरन हमारे जीवन पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। मॉकरन का अर्थ है हर महीने एक नया चैलेंज। हर किसी का हर चीज को देखने का अपना-अपना नजरिया होता है। हम इसको चैलेंज के तौर पर देखते हैं। हर महीने शुरू होने वाला यह खेल कभी ना खत्म होने वाला प्रतीत होता है। हाँ, यह जरूर है कि हम इसे कम कर सकते हैं। कम करने के लिए मेहनत और लगन तो जरूरी है पर हम अगर स्मार्ट तरीके से काम करें तो मेहनत कम लगेगी। स्मार्ट का मतलब मॉनिटरिंग की गंभीरता को समझते हुए एस.एम.ए., समय पर आस्तियों का रिव्यू/रिन्यूअल और समय पर स्टॉक विवरण को फीड करने से है। बहुत बार ऐसा होता है कि बहुत सी शाखाओं की मॉकरन की सूची बहुत लम्बी होती है पर उतने ही स्मूथ तरीके से निकाल दिया जाता है। ऐसे शाखा प्रबंधकों को सलाम। मेरा यह भी मानना है कि ऐसे शाखा प्रबंधकों का ज्यादातर समय और ऊर्जा मॉकरन पर ही व्यर्थ होता है। इन्हें जरूरत है कि थोड़ा प्रयास मॉकरन की सूची छोटी करने में करना चाहिए। बैंकिंग क्षेत्र पर दिन प्रतिदिन बढ़ते मॉकरन के दबाव को कम करने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।

समय पर एस एम ए सूची का अवलोकन.

समय पर आस्तियों का रिन्यूअल.

समय पर स्टॉक विवरण फीड करना.

मॉनिटरिंग की विभिन्न रिपोर्ट्स समय पर भेजना.

अगर हम इन बातों पर ध्यान दें तो निश्चित ही हमारा मॉकरन कम होगा। ग्राहकों का खाता ओवरड्यू होने पर तुरंत सम्पर्क करें। अपनी हर कार्यवाही का रिकॉर्ड व्यवस्थित करें। हर कार्यवाही जैसे ओवरड्यू नोटिस आदि लिखित में देना, ग्राहकों पर ऋण के प्रति गंभीर करता है। आपकी शाखा के क्षेत्र में आपकी इमेज को प्रभावित बनाने में सहयोग करता है। ऋण की रिपेमेंट की तारीख भी मॉकरन को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए रिपेमेंट तारीख और ब्याज की तारीख को सिस्टम में फीड करते वक्त ध्यान दें। सभी नये खुले खाते और पुराने खातों को बचत खाते से लिंक करें। सभी खातों को नैच या ई. सी. एस. जोड़ना भी मॉकरन को कम करेगा। यह सब बातें हमारे बैंक को नयी दिशा देगा। मेरा यह मानना है कि शाखा में दबावग्रस्त आस्तियां जितनी कम होगी उतना ही हमारा व्यक्तिगत तनाव भी कम होगा। इसलिए दबावग्रस्त खातों का अनुश्रवण हमारे बैंक के साथ हमारा भी तनाव कम करेगा और हम बेहतर प्रोफेशनल जिंदगी के साथ बेहतर व्यक्तिगत जीवन भी बना सकते हैं।

राकेश कुमार
क्षे.का, करनाल



मॉनिटरिंग नानी

यूनियन गांव में मॉनिटरिंग नानी नाम की मुखिया रहती है। मॉनिटरिंग नानी पूरे गांव का ख्याल रखती है और गांव के हर क्रियाकलापों पर इनकी नजर रहती है क्योंकि इनका मानना है कि 'नजर हटी दुर्घटना घटी'। मॉनिटरिंग नानी का एक बच्चा भी है जिसका नाम खाता है। नानी अपने बच्चे को बहुत प्यार करती है। नानी इस बच्चे में अपना भविष्य देखती है। बहुत सारे कार्य और गांव के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के कारण नानी बहुत व्यस्त रहने लगी थी। एक दिन नानी का बच्चा बीमार हो गया। नानी ने वक्त निकालकर उसे डॉ. CMRD को दिखाया। तब डॉ. ने सारी जांच करके बताया कि इन्हें मॉकरन नाम की बीमारी हुई है। नानी ने इस बीमारी के बारे में डॉ. साहब से पूछा तो डॉ. साहब ने बताया कि नानी इस बीमारी का कारण मॉनिटरिंग की लापरवाही है और इसका पहला लक्षण PSA होता है। नानी ने पूछा, PSA के बारे में बतायें। डॉ. साहब ने कहा कि PSA का मतलब potential stress assets होता है जिसे पहले EWS के नाम से भी जाना जाता था। जब इसको अनदेखा किया जाता है तो यह बीमारी और भी बढ़ती जाती है। जब यह बीमारी एक से तीस दिन के बीच की होती है तो इसको SMA-0 बोलते हैं। अगर इस स्टेज पर भी इलाज नहीं हुआ तो बीमारी 31 दिनों के बाद यह बीमारी और ज्यादा बढ़ जाती है जिसे SMA-01 कहते हैं। नानी की उत्सुकता और बढ़ी तो डाक्टर साहब ने बताया कि 61 वें दिन के बाद यह बीमारी SMA-02 की स्टेज पर आती है और फिर 61 वें दिन इस बीमारी को मॉकरन भी कहते हैं। नानी को जानकार बड़ा दुख हुआ कि मैं सारे गांव का ख्याल रखती हूँ और मैं अपने ही बच्चे पर ध्यान नहीं दे पाई। डॉ. साहब नानी को तकलीफ में देखकर बोले, "मॉनिटरिंग नानी आप परेशान ना हों। अभी इसका इलाज कर देते हैं लेकिन आप आगे से लापरवाही ना करना।" डाक्टर साहब ने नानी को ओवरड्यू नाम की पर्ची लिखी और मॉनिटरिंग नानी के बच्चे को ECS और NACH नाम का टीका लगाया और ग्लूकोज में थोड़ा Stock Statement डाला। बाद में नानी को बताया कि समय-समय पर Review करते रहना। कोई कोताही मत करना, वरना आपका बच्चा NPA हो जायेगा जो एक तरह का कोमा है। डॉक्टर साहब की बातों को मॉनिटरिंग नानी ने बड़े ध्यान से सुना और डॉक्टर साहब को आगे से कोई भी लापरवाही ना करने का आश्वासन दिया। कुछ समय में नानी का बेटा 'खाता' बिल्कुल सही हो गया और अच्छे से चलने लगा और मॉनिटरिंग नानी अपने बच्चे के साथ खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करने लगीं।

पवन कुमार
क्षे.का, करनाल



What is Stressed Asset

Financial and Technical Default A different perspective

Stressed assets are the assets exposed to default. They are susceptible to deterioration of asset quality. In a shorter time. Stressed assets are getting increased attention as the trend of deteriorating asset quality has emerged as a big financial/Credit risk for the Indian Banking sector. Stressed assets is a vital indicator of the health of the Banking system. Level of these assets indicates how much of the loans taken by the borrowers are being repaid in the form of interest and principal as per the prescribed repayment schedule

Stressed assets are embedded with numerous stress indicators, some of them are financial and some are technical.

Financial Defaults:

Financial defaults are attributed to some of the following financial difficulties.

- * Irregularities in cash credit/overdraft accounts such as inability to maintain stipulated margin or drawings exceeding sanctioned limits/drawing powers, periodic interest debited remaining unrealised.
- * Failure/anticipated failure to make timely payment of instalments of principal and interest on term loans.
- * Delay in meeting commitments towards payments of installments due, crystallized liabilities under LC/BGs etc.
- * Excessive leverage.
- * Inability to adhere to financial loan covenants.
- * Failure to pay statutory liabilities, non- payment of bills to operational creditors, etc.
- * Non-submission or undue delay in submission or submission of incorrect stock statements and other control statements, delay in publication of financial statements and adversely qualified financial statements.
- * Steep decline in production figures, downward trends in sales and fall in profits, margin erosion etc
- * Elongation of working capital cycle, excessive inventory build-up.
- * Significant delay in project implementation.
- * Downward migration of internal/external ratings/ rating outlook.

Technical Defaults:

Following are the some events that would be referred as technical default

- * Non-submission of stock statement
- * Non-renewal of limit after expiry.
- * NSC/TD security value more than loan outstanding.

As per revised guidelines, Banks are instructed to identify incipient stress in loan accounts, immediately on default, by classifying stressed assets as Special Mention Accounts (SMA) as per the following categories:

| | SMA Sub-categories |
|--|--------------------|
| Basis for classification Principal or interest payment or any other amount wholly or partly overdue between | SMA-0 |
| | 1-30 days |
| | SMA-1 |
| | 31-60 days |
| | SMA-2 |
| | 61-90 days |

Default means non-payment of debt when whole or any part or instalment of the amount of debt has become due and payable and is not repaid by the debtor or the corporate debtor, as the case may be.

For revolving facilities like cash credit, default would also mean, without prejudice to the above, the outstanding balance remaining continuously in excess of the sanctioned limit or drawing power, whichever is lower, for more than 30 days.

One major and noticeable difference in the categorization of stresses assets is regarding SMA-0 category. Earlier, financial default up to 30 days was not counted under SMA-0, which now starts from the first day of default. In short, one day financial default puts the account under stressed assets' category. E.g. If the due date of repayment in the account is 28.02.2019, and it is paid on 01.03.2019 may be by transfer/cash or through standing instruction, this will not only be considered as financial default figuring the account in stressed assets (SMA-0) category but also worsen the credit history of the borrower.

To summarize, both the financial as well as technical defaults are responsible for the deterioration in assets quality; however, only financial default is taken into account for treating that account under stressed assets category for classification/reporting purpose. Still, technical default plays equally important role in deciding the prospective of the account and needs to be timely and simultaneously attended to.



Rajiv Kumar Jha
R.o. Baroda



Future of Credit Monitoring-Resolving stressed assets

In the present scenario, the Banking System is passing through a turbulent phase with various challenges of NPA, Frauds, Cybercrimes etc. Some Banks have virtually perished while some are struggling to come out of Red. Amongst stiff competition, the survival and growth has now become a big challenge. To add to the woes, constant increase in NPA is the major factor which creates a dent in the financial strength of the Bank. The entire Banking industry is now focusing on tackling this problem and Recovery is treated as one of the rein which can regulate this. **But is it wise to focus on NPA Recovery alone?**

It is well said, "Prevention is Better than Cure"

In our race to be one amongst the Best we are forced to concentrate on top line growth resulting in the upward movement in cost of deposits and downward movement in yield on advances which ends up in margin pressures. In our efforts to expand

our credit growth, healthy credit portfolio assumes great importance as it is very much essential to maintain the assets financed are in good quality so that the yield on the same continues without creating imbalance in our Balance sheet to ensure this, Credit Monitoring plays a pivot role. Monitoring does not restrict itself to a set of advance or for a particular stage of advance. It is a continuous process. Right from Pre-sanction till closure of the loan, monitoring is indispensable. In our efforts to curb the NPA, we are constantly trying to 'save the account' at the time when a stage has reached where the revival becomes a question i.e. when the account crosses more than 60 days remaining under Stress. Thus our quality time is spent in arresting the slippage.

Also, IND-AS implementation is round the corner. Once implemented, it will require increased provisioning for Stressed Assets as well, thereby

eating away the precious Profit of the Bank. In order to face this challenge, our Bank under the able leadership of our worthy Executives have given the directives wherein thrust is given on tackling not only the Stressed Assets, but also a step forward which is "Potential Stressed Assets"-Accounts which are likely to appear in Stress. **Now the drive is to "Nip in the Bud" viz. identify the stress signals at the initial level itself so that timely corrective action can be taken. Increased efforts in monitoring at SMA '0' level can put a check in the movement of the assets to stress. The focus has therefore shifted from "Saving the Stressed account from Slippage" to "Preventing the account from slipping to Stress level".** The future of Banking will definitely be shaped by the strength to retain the interest bearing assets in Stress-free



H S Kalpana
CMRD, Bengaluru

Match the Parameter (A) with Parameter (B)

| Sl.No. | Parameter (A) | Parameter (B) |
|--------|--|---|
| 1 | Monthly Credit Monitoring Reports (MCMR). | Early Warning Signals (EWS). |
| 2 | Stock Audit. | SMA - 0 |
| 3 | Asset Quality Committee Meeting (AQMC). | Standard. |
| 4 | Potential Stress Accounts (PSA). | Borrowal accounts with Aggregate Exposure Rs. 250 crore and above and exposures of specialized nature. |
| 5 | Credit Process Audit (All Loans except retail). | A source for due diligence. |
| 6 | Increase in frequency of overdrafts in current accounts. | 7th of succeeding month. |
| 7 | Actual sales / operating profits falling short of projections accepted for loan sanction by 40% or more. | SMA - 0 |
| 8 | Branch submits renewal proposal within 45 days from expiry of limits to the sanctioning authority. | Top 100 stressed accounts. |
| 9 | Agencies for Specialized Monitoring (ASM). | Loan of Rs. 1 Crore and above. |
| 10 | CMRD Web portal. | Accounts with working capital limits, both Funds based and Non fund based, of Rs. 3.00 Crore in case of Proprietary / partnership accounts. |
| 11 | Mission Swatch Asset (MSA). | All accounts having Aggregate Exposure of Rs. 5.00 crore and above. |
| 12 | CRILC. | Early Warning Signals (EWS) under RFA |
| 13 | Legal Audit Compliance (LAC). | The aggregate exposure including non-fund based facilities of banks and NBFCs to the borrowers does not exceed Rs. 25 crores as on 01.01.2019 |
| 14 | Red Flagging of Account (RFA). | To be repaid in maximum of three years with moratorium of 12 months. |
| 15 | Same Collateral charged to number of lenders. | Greater than 1.25 within 5 years period in which the unit should become viable. |
| 16 | Periodicity of conducting Legal Audit – An Account with exposure of 50 crores. | Defaults of one day in big accounts of total limit of Rs. 5.00 crore and above. |
| 17 | Eligible units for MSME Restructuring. | Once in 5 years |
| 18 | MSME restructuring – FITL. | To be repaid in maximum of five years with moratorium of 12 months. |
| 19 | MSME Restructuring – WCTL. | Accounts with Aggregate Exposure of Rs. 50 crores and above irrespective of lending arrangement. |
| 20 | MSME Restructuring – Current Ratio. | Kicked off the project Knock the Mock. |

You will get answers of these parameters in this issue only. Please try your search Engine.

U Sethupitchai
R.O. Madurai





Tools for effective Credit Monitoring Important aspects in curtailing NPA

NPA (Non performing assets)- the biggest threat and a serious concern to the Indian banking industry. It can be curtailed with positive mindset of customers, teamwork of bankers and proper monitoring of advance portfolio. So, Credit monitoring is the essential and integral part of credit dispersation. In this regard, our Union Bank of India is always one step ahead of its competitors to sustain and promote growth in Indian economy.

Credit monitoring is a continuous effort towards reducing NPA. Now a days it is becoming a very challenging task for bankers. There are several monitoring tools used in our bank as weapons to fight the NPA Me race.

“Monitoring begins at branch”- when borrower applies for a loan at branch, process of credit monitoring starts.

From this initial stage, various tools are used to maintain the good health of the loan and the process continues till the loan is fully repaid. Some monitoring tools are loan specific but there are several effective tools used to monitor all borrowal accounts at both branch level and controlling office.

Some effective monitoring tools are-

* **Instruction Circulars & Policies:** Important policies & circulars regarding advance to be carefully followed before doing any process of advance and also during monitoring.

* **Due diligence & Inspection Report:**

Surprise visits to borrower's house and unit and due diligence of borrower helps us to select quality proposals. By proper due diligence income source of borrower, his intention to repay the loan can be assumed. After disbursement, to ensure the end use i.e to ascertain creation of asset, to check position of stock, time to time follow up inspection plays a vital role in effective monitoring.

* **Search & other Reports:** Search reports of property, legal reports, valuation reports etc to be carefully studied for processing of loan.

* **Credit Rating (internal/external):** Credit rating is an important tool to assess the credit risk.

* **CIBIL Report/CRISIL report:** CIBIL (Credit Information Bureau India Limited) maintain credit history or credit information of an individual or company and provide a score. CRISIL rating is also used to assess the lending decision to company.

* **RBI Default List/ECGC:** List of RBI default or Export Credit Guarantee Corporation of India Ltd, guide us and protects us from the credit risk by providing information on borrower.

* **Account Statement/Financial Papers/ITR:** Proper scrutiny of saving/current/loan account statement, financial papers, income tax return helps to understand the health of the borrowal account.

* **Vetting of document:** Execution of careful examination of documents to

be done in all the accounts above Rs. 2 lacs before disbursement to create asset quality.

Defaulter's List in CMRD Portal: CMRD Portal contain Data of more than 4.25 lakh defaulters, which is a good source of Due-diligence as well.

Credit Process Audit: CPA is another important process before disbursement which is mandatory in retail, if limit is Rs. 10 lacs & above in rural & semi urban branch and Rs. 50 lacs & above in urban & metro branch. For all other loans of limit Rs. 1 crore and above, CPA is mandatory.

* **Stock/Book Debt/Statement/QPR/MSOD:** Time to time scrutiny of stock, book debt statement, Quarterly performance report and Monthly Select Operational Data collected from borrower helps to save the loan from stressed account.

* **Audit report:** Reports of Regular audit, Statutory audit, Concurrent audit makes us understand the status of the loan from various point of view.

* **M27/F1 (Monthly Statement):** Submission and scrutiny of Monthly statement of delegated authority and F-1 statements shows the irregularities of loan account.

* **MCMR:** Monthly Credit Monitoring report is a very effective monitoring tool which is submitted through LAS and used to closely monitor the irregularities by Branch Head (limit upto Rs. 50 lacs) or Regional Office (limit above Rs. 50 lacs to 2.00 crore)

or FGMO (limit above 2 crore to 5 crore) or Central Office (limit above 5 crore).

* **CMRD Visit:** Visit by controlling offices is very important to inspect the quality of advance and to alert the branches about suspected loan accounts.

* **Potential stress Assets :** PSA data is required to identify the deficiencies and suspicious behavior of the loan account by indicating different colour. Green colour indicates healthy account, yellow-little discrepancy in limit of small amount, orange-little discrepancy in limit of huge amount.

* **AQMC:** Asset quality management committee meeting is held at controlling office to critically analyze the stressed accounts and improve the health of the stressed accounts.

* **Stress Asset (SMA):** Stressed accounts are categorized as SMA-0 (1-30 days), SMA-1 (31 for to 60 days) and SMA-2 (overdue for 61 to 89 days). To control the deterioration of quality of all these stressed accounts, proper monitoring is needed at each stage.

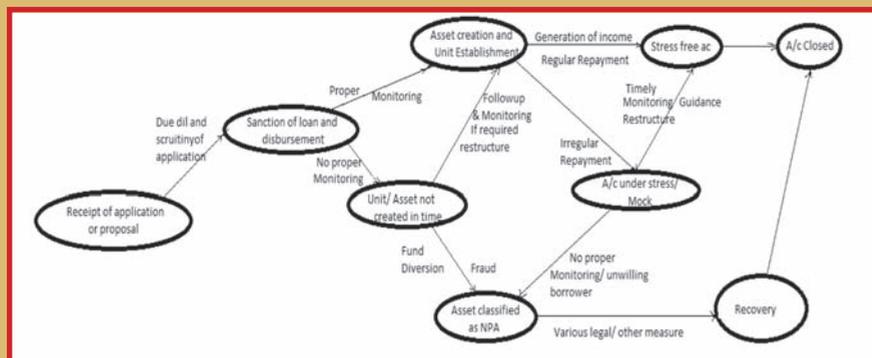
* **Timely review of account:** Timely review of loan accounts is most important to identify the weakness of the account and to reduce the stress portfolio.

All assets can be considered as two sided coins-good or bad. Our motto is to create more and more good assets. After sanctioning the loan, proper follow up should be done at every stage to mitigate the risk of deterioration of asset quality. As we all know that 'prevention is better than cure', we have to be more careful about customer's intention and banking norms. Only then we bankers, can hit proper surgical strike against the NPA, the enemy of our economy.

Madhumita Mondal
R.O. Howrah



LOAN ACCOUNT - LIFE CYCLE & MONITORING ASPETS



Monitoring is nothing but regular systematic observation, check up and review. In case of our health, we visit the doctor and he refers certain test, diagnose the problem and writes prescription to improve our health. In the same way Monitoring is very important for identifying stress and get it resolved to maintain good health of a loan account.

A loan account passes through different stages of its life cycle. At the very beginning, a loan applicant comes with his requirement and submits us the loan application/proposal. It is said that well begun is half done. If we understand the requirement of the applicant, scrutinize the loan application thoroughly, make proper due diligence (not only of borrowers/promoters, but for the guarantors and buyers, suppliers also), understand the project, its viability, sustainability and suitability will help us in choosing the right proposal.

Once the proposal is sanctioned, monitoring on the part of compliance of sanction terms, documentation and disbursement is required for proper use of loan funds and creation of profitable asset.

Once the unit is established or asset is created post disbursement, there are various tools available for effective monitoring of health of the accounts. Some of such tools are M-27,F-1, Account Statement Scrutiny cheque returns, frequent request for OD, reduction in DP, Stock and Book Debt Statement, MMR, Q-4, Audit Observations, Stress data, Mock Run, Regular inspection of the unit with

primary and collateral securities, financial statements of the borrower/unit, market information.

Monitoring Officers needs to keep his eyes, ear and nose open to see, hear and smell any adversity or development in the company, promoter/borrower, its guarantors, suppliers, buyers, change in the management, technological change, government regulations changes, geopolitical changes etc for effective monitoring of the account.

In case we find any inherent stress or adversity in the account, the same should be immediately reported to higher authority for prompt resolution. We need to discuss and understand problems faced by the borrower and find its solution. Here comes the role of restructuring. If we find the problems genuine and manageable, as per requirement of the borrower acceptable to bank, we can restructure the account to help it overcome the problem. In case we find that the problem is very serious in nature and cannot be resolved, we should opt for the exit route from the account which is recovery as well.

At any stage, effective monitoring is very important for maintaining healthy asset portfolio of the Bank. Fortunately, we Unionites are very lucky and thankful to have all the advanced monitoring tools under one Roof "CMRD Web Portal", probably the only bank in the industry.

Amit Parekh
R.O. Rajkot





Banking

बैंक के तुलनपत्र में आस्ति गुणवत्ता पर ऋण बही की गुणवत्ता का प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व में वित्त एक ऐसा सर्वमान्य सूत्र है जो विभिन्न क्षेत्रों को साथ लाता है तथा किसी देश के आर्थिक विकास में उत्प्रेरक के रूप में काम करता है। महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वांछित वित्तीय साधन उपलब्ध कराने में बैंकिंग क्षेत्र की अहम भूमिका है। इसलिए बैंकिंग को अर्थ व्यवस्था की 'रीढ़ की हड्डी' कहा जाता है। उभरती हुए अर्थव्यवस्था में बैंक एक वित्तीय बिचौलिया मात्र नहीं है अपितु अतिरिक्त जिम्मेदारियों के साथ सरकार के सामाजिक एजेंडों को भी बखूबी आगे बढ़ा रहा है। बैंकिंग उद्योग का विकास सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास से बहुत ही बारीकी से जुड़ा हुआ है।

किसी भी बैंक का अस्तित्व एवं विकास, बैंक के तुलन पत्र के आकार एवं आस्तियों के गुणवत्ता पर निर्भर करता है क्योंकि आस्तियां ही बैंक के आय तथा जीवन रेखा का प्रमुख स्रोत है।

भारतीय बैंक : विवेकपूर्ण मानदंड (Prudential Norms)

भारतीय बैंकिंग उद्योग की कथा, शाखाओं के नेटवर्क एवं सेवा क्षेत्र के संदर्भ में काफी रोचक एवं दिलचस्प रही है। 1991 के वित्तीय सुधार के युग के बाद लेखा मानक (Accounting Standard) में काफी बदलाव आए जिसमें एक महत्वपूर्ण था परिसंपत्ति वर्गीकरण और आय निर्धारण (Asset Classification and Income Recognition)।

आय निर्धारण की नीति वसूली के रिकॉर्ड पर आधारित है। एनपीए से आय को accrual basis पर नहीं रखा गया है। बल्कि वास्तविक प्राप्ति पर आधारित है। किसी खाते के एनपीए में वर्गीकरण के बाद अप्राप्त ब्याज (unrealized interest) को, जो accrual basis पर

लाभ-हानि खाते में लिया गया था, रिवर्स (reverse) किया जाता है।

कोई खाता एनपीए में तब वर्गीकृत होता है जब मूल व ब्याज के रूप में बकाया 90 दिनों तक जमा नहीं किया जाता है। किसी एक खाते के एनपीए में वर्गीकृत होने के बाद उस ग्राहक के सभी ऋण खातों को एनपीए में वर्गीकृत किया जाता है भले ही उन खातों में कोई बकाया न हो। दिशानिर्देशों के अनुसार, एनपीए को, अवधि तथा देय राशि की सिक्यूरिटी realisability के आधार पर तीन वर्गों में बांटा जाता है:

i) उप मानक आस्तियां (Sub standard assets): जो आस्तियां 12 महीने या उससे कम अवधि से एनपीए में वर्गीकृत हैं। ऐसे खातों में सिक्यूरिटी के आधार पर 15% से 25% तक प्रावधानीकरण किया जाता है।

ii) संदिग्ध आस्तियां (Doubtful assets): जो आस्तियां 12 महीने से ज्यादा अवधि से एनपीए में वर्गीकृत हैं। ऐसे खातों में सिक्यूरिटी के आधार पर 25% से 100% तक प्रावधानीकरण किया जाता है।

iii) हानि आस्तियां (Loss assets): जिन आस्तियों में सिक्यूरिटी का मूल्य बकाया राशि के 10% से कम है। ऐसे खातों में 100% तक प्रावधानीकरण किया जाता है।

आस्तियों की गुणवत्ता : एनपीए की वृद्धि

आस्ति गुणवत्ता प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आया है क्योंकि यह बैंकिंग प्रणाली के बुनियादी व्यवहार्यता का महत्वपूर्ण कारक है। बढ़ते एनपीए का दुष्प्रभाव बैंकिंग प्रणाली के कोर प्रदर्शन

क्षेत्र पर असर डालता है तथा कंपनी प्रशासन के मुद्दों को भी उजागर करता है. क्षेत्रवार एनपीए की स्थिति कृषि में 8.4%, उद्योग में 20.9%, सेवा में 6% एवं खुदरा में 2.1% है.

बैंक के तुलन पत्र में आस्ति गुणवत्ता का प्रभाव: गैर निष्पादित आस्तियों (एनपीए) के बढ़ने से निवेशकों, जमाकर्ताओं, उधारदाताओं इत्यादि के आत्मविश्वास डगमगाते हैं. पूंजी (Fund) की रिसाइक्लिंग धीमी हो जाती है जो ऋण के वितरण पर हानिकारक असर डालती है. जिसके फलस्वरूप ब्याज आधारित आय कम होने लगती है. इसका दूसरा असर मनी स्टॉक के संकुचन में दिखायी देता है जो आर्थिक मंदी का कारक होता है. यदि लोन की रिकवरी नहीं हो पाती है तो न केवल ऋण की उपलब्धता पर असर पड़ता है बल्कि बैंक की वित्तीय दृढ़ता पर भी असर पड़ता है.

लाभप्रदता: एनपीए का लाभप्रदता पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है क्योंकि एक तरफ बैंक की गैर निष्पादित आस्तियों से आय बंद हो जाती है और दूसरी तरफ उच्च प्रावधान करने की जरूरत होती है जो मानक सम्पत्तियों (Standard Assets) से काफी ज्यादा होता है. वृद्धिशील एनपीए पर बैंक औसतन 25% से 30% तक अतिरिक्त प्रावधानीकरण करते हैं जिसका सीधा असर लाभप्रदता पर पड़ता है.

देयता प्रबंधन: उच्च एनपीए की स्थिति में बैंक एक तरफ जमा पूंजी पर ब्याज दर कम करने लगते हैं और दूसरी ओर ऋण के ऊपर ब्याज दर को बढ़ाने लगते हैं जिससे निवल (Net) ब्याज मार्जिन (NIM) को बढ़ाया जा सके. किन्तु इसका परिणाम बैंक के कारोबार तथा आर्थिक प्रगति पर बुरा असर डालता है.

पूंजी पर्याप्तता: बेसल मानदंडों के अनुसार बैंकों को जोखिम भारित आस्तियों (RWA) पर पर्याप्त पूंजी निरंतर बनाए रखने की जरूरत है. एनपीए स्तर के प्रत्येक वृद्धि पर जोखिम भारित आस्तियां बढ़ती हैं जो बैंक को पूंजी के आधार को आगे बढ़ाने के लिए सचेत करती हैं. चूंकि पूंजी एक दुर्लभ स्रोत है, इसकी कीमत लगभग 12% से लेकर 18% तक हो सकती है.

शेयरधारकों का आत्मविश्वास: सामान्यतः शेयरधारक अपने निवेश का मूल्य उच्चतर लाभांश एवं बाज़ार के पूंजीकरण के द्वारा बढ़ाने के इच्छुक होते हैं और ये तभी संभव हो सकता है जब बैंक बेहतर व्यापार के माध्यम से महत्वपूर्ण लाभ अर्जित करे. एनपीए स्तर की वृद्धि का बैंक के कारोबार तथा लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता

है जिसके फलस्वरूप शेयरधारक को अपने पूंजी पर कोई लाभ नहीं मिल पाता है और कभी-कभी निवेश के मूल्य का क्षय भी हो सकता है. दिशानिर्देशों के अनुसार, वो बैंक जिनका निवल (Net) एनपीए (NPA) 5% या इससे ज्यादा है, उन्हें लाभांश घोषित करने एवं भुगतान में काफी कठिनाई होती है.

जनता का विश्वास: एनपीए स्तर की वृद्धि से बैंकिंग प्रणाली की विश्वसनीयता काफी प्रभावित होती है क्योंकि बैंकिंग प्रणाली की सुदृढ़ता पर सामान्य जनता का विश्वास डगमगाता है. एनपीए का बढ़ता स्तर तरलता का संकट पैदा करता है जिससे जमाकर्ता (Depositors) अपने जमा पूंजी को निकालना शुरू कर सकते हैं और बैंक को नए संकट की ओर अग्रसर कर सकता है. लंबे अवधि में इसका असर अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है. संक्षेप में, एनपीए के बढ़ते स्तर का प्रभाव बैंक के सभी महत्वपूर्ण वित्तीय अनुपातों पर पड़ता है जैसे निवल (Net) ब्याज मार्जिन, लाभप्रदता, लाभांश भुगतान, प्रावधान कवरेज अनुपात, ऋण संकुचन (Credit Contraction) इत्यादि.

निष्कर्ष:

पहले से ही सावधानी बरतना अच्छा होता है. ऋण प्रस्तावों का समुचित मूल्यांकन अलाभकारी परियोजनाओं को शुरू में ही पहचानने में मदद करता है. इकाई, उद्योग, वित्तीय हिस्सेदारी, प्रबंधन इत्यादि से संबन्धित सारी जानकारी इकट्ठा किया जाना चाहिए. समय पर अनुवर्ती (timely follow up) कार्रवाई ब्याज और किस्त की वसूली तथा आस्तियों के गुणवत्ता को बरकरार रखने में काफी मदद करता है. ऋण पर बेहतर नियंत्रण के लिए समयानुसार इकाइयों के निरीक्षण अति आवश्यक है और इसमें कोताही नहीं बरती जानी चाहिए.

सही ऋणी का चुनाव, व्यवहार्य आर्थिक गतिविधि, पर्याप्त वित्त, समय पर संवितरण (Disbursement), निधि का अंतिम उपयोग (end use of fund) और समय पर ऋण की वसूली पर ध्यान केन्द्रित होना चाहिए जिससे बैंक के लिए अच्छी और गुणवत्ता वाली आस्तियां तैयार की जा सके तथा बैंक के तुलन पत्र को मजबूत बनाया जा सके.



पुष्कर कुमार सिन्हा
स्टा.प्र.के.भुवनेश्वर

16-12, 17-16, 18-19, 19-14, 20-11
9-5, 10-2, 11-13, 12-15, 13-17, 14-18, 15-20,
1-4, 2-6, 3-8, 4-9, 5-10, 6-1, 7-7, 8-3,
Result of 'Match the Parameters' (from Page No. 29)

लाल संकेत खाते (आरएफए) : अवधारणा व अनुपालन

1. परिचय :

पूर्व चेतावनी संकेत (ईडब्ल्यूएस) एवं लाल संकेत खातों की अवधारणा का आरंभ भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा परिपत्र क्र. DBS.CO.CFMC.BC.No.007/23.04.001/2014-15 दिनांक 07.05.2015 के माध्यम से ऋण धोखाधड़ियों से निपटने के लिए संरचना पर जारी दिशानिर्देशों के अधीन किया गया था.

2. अवधारणा :

धोखाधड़ी जोखिम नियंत्रण में लाल संकेत खातों (आरएफए) की अवधारणा एक महत्वपूर्ण पहल है. लाल संकेत खाते ऐसे खाते हैं जिसमें एक या एक से अधिक पूर्व चेतावनी संकेतों (ईडब्ल्यूएस) की उपस्थिति से धोखाधड़ी गतिविधि का संदेह होता है. भारिबैं ने ऐसे 45 संकेत सूचीबद्ध किये हैं, जिसमें बैंकों द्वारा और 9 संकेतों को शामिल किया गया है और इन सबको 5 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है.

किसी ऋण खाते में ईडब्ल्यूएस की उपस्थिति उस खाते में निहित कमजोरियों या गलत उपयोग के संबंध में बैंक को सतर्क करती है, जो कि बाद में धोखाधड़ी में बदल सकती है. इसलिए, ऐसे ईडब्ल्यूएस खातों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए बल्कि खाते के विस्तृत विश्लेषण के लिए इसका सक्रिय उपयोग करना चाहिए.

3. सीमा

ऋण की श्रेणी (एकल शाखा बैंकिंग, बहु बैंकिंग या सहायता-संघ) पर ध्यान दिए बिना बैंक स्तर पर ₹ 50.00 करोड़ या उससे अधिक के कुल एक्सपोजर वाले खातों में ईडब्ल्यूएस की उपस्थिति की जांच की जाती है और इस उद्देश्य से गठित जोखिम अनुश्रवण समूह द्वारा खाते की घोषणा आरएफए के रूप में की जाती है.

4. खाते की घोषणा आरएफए के रूप में करने का तरीका:

4.1. लाल संकेत खातों की पहचान करने हेतु खाते में ईडब्ल्यूएस की अनिवार्य रूप से जांच करने के लिए भारिबैं द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा को हमारे बैंक ने भी अंगीकृत किया है.

4.2. ऋण खातों में ईडब्ल्यूएस का अनुश्रवण एक अतिरिक्त कार्य के रूप में नहीं बल्कि एक निरंतर गतिविधि के रूप में किया जाना है. इसके अलावा, ऋण जोखिम एवं धोखाधड़ी जोखिम के बीच के परस्परिक संबंध को ध्यान में रखते हुए ऋण खाते में किसी भी संभाव्य क्षति के लिए इसका सक्रिय उपयोग किया जाना चाहिए.

4.3. किसी खाते में ईडब्ल्यूएस की उपस्थिति का पता लगाने की प्रक्रिया को नियमित अनुश्रवण का अभिन्न अंग बनाने के उद्देश्य से इसे एकीकृत किया गया है और

शाखाओं द्वारा प्रस्तुत मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट (एमसीएमआर) के एक भाग के रूप में इसे अंगीकृत भी किया गया है.

4.4. इसलिए यह महत्वपूर्ण हो गया है कि शाखाएं, बड़े खातों में ईडब्ल्यूएस का विश्लेषण करते समय, खाते में ईडब्ल्यूएस की निर्णायक उपस्थिति संबंधी सभी प्रासंगिक तथ्यों की अच्छी तरह से जांच कर लें.

4.5. खाते के परिचालन और/या खाते के अनुश्रवण के प्रति जबाबदेह अधिकारी, एमसीएमआर में किसी भी ईडब्ल्यूएस की तत्काल उपस्थिति का सावधानी से अवलोकन कर इसकी रिपोर्ट बैंक के धोखाधड़ी अनुश्रवण समूह (एफएमजी) के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि इस संबंध में उनसे उपयुक्त मार्गदर्शन/दिशानिर्देश प्राप्त हो सके.

5. रिपोर्टिंग :

5.1. ऐसे सभी खाते जिन्हें आरएफए या धोखाधड़ी के अधीन वर्गीकृत किया गया है, तो वर्गीकृत किए जाने की तारीख सहित 7 दिनों के अंदर CRILC प्लेटफार्म के अधीन रिपोर्टिंग किया जाना अनिवार्य है.

5.2. एफएमजी ₹ 50 करोड़ या उससे अधिक के कुल एक्सपोजर (ईई) वाले जिन ऋण खातों में ईडब्ल्यूएस की जांच करता है, उसकी जानकारी एवं आरएफए में वर्गीकृत करने संबंधी अपने निर्णय की रिपोर्ट प्रतिमाह एमडी एवं सीईओ को करना अनिवार्य है.

5.3. इसके अतिरिक्त, आरएफए खातों की एक रिपोर्ट बोर्ड की विशेष समिति के समक्ष अनुश्रवण और धोखाधड़ी पर अनुवर्ती कार्रवाई करने (एससीबीएफ) हेतु प्रस्तुत की जाती है जिसमें प्रत्येक खाते की वर्तमान स्थिति के साथ-साथ उपचारात्मक कार्रवाई की भी संक्षिप्त जानकारी दी जाती है.

6. सीएमआरडी, के. का. द्वारा जारी अनुदेश/ दिशानिर्देश:

6.1. ये दिशानिर्देश सर्वप्रथम अनुदेश परिपत्र क्र: 181:2015 दिनांक 06.08.2015 के माध्यम से जारी किए गए थे एवं इसकी जानकारी पुनः परिपत्र पत्र क्र. 2673:2018 दिनांक 12.10.2018 के माध्यम से दी गई थी. इसके अतिरिक्त, ईडबल्यूएस का प्रारूप उपरोक्त परिपत्र के साथ अनुलग्नक के रूप में संलग्न किया गया है और शाखाओं द्वारा लेंडिंग ऑटोमेटेड सोल्यूशन (CAS) मॉड्यूल के माध्यम से इसे प्रस्तुत करने के लिए मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट (एमसीएमआर) का एक भाग बनाया गया है.

6.2. ऋण खाते की स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए बैंक द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि ₹ 50.00 करोड़ और उससे अधिक के कुल एक्सपोजर वाले ऋण खातों में एमसीएमआर तैयार करते समय शाखाएं प्रत्येक खाते में ईडबल्यूएस की संभावनाओं पर अपनी टिप्पणी अवश्य दें.

6.3. शाखाएं एमसीएमआर में प्रत्येक ईडबल्यूएस की उपस्थिति का 'हाँ' (वाई), 'नहीं' (एन) या लागू नहीं (एनए) द्वारा संकेत दें और साथ ही यदि ईडबल्यूएस की उपस्थिति 'हाँ' में है तो आवश्यक कारण भी प्रस्तुत करें. इसके अतिरिक्त, क्या खाते को लाल संकेत खाता या अन्यथा के रूप में चिन्हित किया जाना जरूरी है, के संबंध में शाखाएं अपनी विशिष्ट टिप्पणी/संस्तुति जरूर दें.

ए. सोमशेखर राव
सीएमआरडी, के. का.



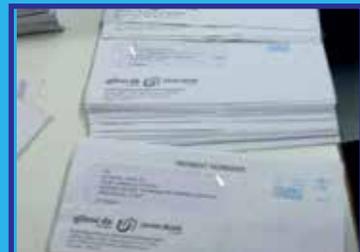
वेबपोर्टल का उद्घाटन



मेरठ दौरा



केंद्रीकृत कॉल सेंटर
का उद्घाटन



केंद्रीकृत प्रेषण केंद्र

सीएमआरडी वेब पोर्टल ऋण अनुश्रवण में एक नया आयाम

जैसा कि हम सभी जानते हैं, बैंकिंग उद्योग के लिए ऋण अनुश्रवण एक अत्यंत महत्व एवं सावधानी का विषय है। इसे ध्यान में रखते हुए हमारे शताब्दी वर्ष में बैंक द्वारा संस्था के सभी स्तर पर अनुश्रवण की सभी इकाईयां, कर्मचारियों को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने की पहल 'सी एम आर डी वेब पोर्टल' के रूप में की गई है।

पोर्टल का शुभारंभ हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय द्वारा 17 नवंबर 2018 को किया गया एवं इसे प्रभावी रूप से उपयोग हेतु देश भर में सभी शाखाओं एवं कार्यालयों को उपलब्ध कराया गया।

पोर्टल का लिंक [http://10.0.229.224:](http://10.0.229.224:8224/cmrdportal/home.aspx)

की क्रमबद्ध सूची उनके पदानुसार प्राप्त होगी। जिसमें उनके नाम, आई पी क्रमांक के साथ व्यक्तिगत मोबाइल क्रमांक एवं मेल आई.डी भी उपलब्ध है। इसका उद्देश्य बैंक की समस्त इकाईयों को उच्च कार्यालय से जोड़ना है।

द्वितीय विकल्प Operational Manual आपको इस पोर्टल को संचालित करने हेतु समस्त निर्देश उपलब्ध करवाता है। ताकि आप बिना किसी अवरोध के अपने ऐच्छिक प्रयोजन को पूर्ण करने में पोर्टल का सहयोग ले सकें।

इस वेब पोर्टल में लॉगिन करने पर शाखाओं के लिए 13 कार्यालयों के लिए 14 खंड उपलब्ध हैं। पोर्टल में उपस्थित खंड निम्न

पोर्टल का डाटा एक्सेल फ़ाइल के रूप में सेव करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गयी है जिससे इस डाटा का उपयोग भविष्य में भी किया जा सके। यह पोर्टल डाटा उपलब्धता के मामले में बैंक के सम्पूर्ण ऋण अनुश्रवण परिदृश्य को परिवर्तित करता है।

यह पोर्टल डाटा स्रोत का एकल बिन्दु है तथा शाखाओं में प्रत्येक ऋण अनुश्रवण मापदंडों पर की गई कार्यवाही को हर स्तर पर ऑनलाइन अद्यतन किया जाएगा।

यह पोर्टल क्षेत्र कर्मियों की बहुत से समय की बचत करता है जो अबतक अधिकांश रूप से डाटा निकालने और रिपोर्टिंग के लिए फोन कॉल करने में जाता था।

इस पोर्टल को मेल के माध्यम से विभिन्न डाटा भेजने और शाखाओं/कार्यालयों द्वारा प्रिंट आउट लेने पर भी रोक लगाएगा, जिससे प्रिंटिंग के खर्च की बचत होगी।

हमारे बैंक में पहली बार खातों में पी.एस., एस.एम.ए.-0, 1 एवं 2 मॉकरन, क्रिलिक, समीक्षा/नवीनीकरण, विधिक लेखा परीक्षा अनुपालन, एन.पी.ए. एवं मॉकरन की वास्तविक और त्वरित रिपोर्टिंग होती है। एमएसएमई - रिस्ट्रक्चरिंग के समय भी पोर्टल ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्योंकि सभी संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी पोर्टल में उपलब्ध थी।

पोर्टल के सभी पक्षों को समझकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह पोर्टल हमारे अनुश्रवण को आसान बनाने की एक बेहद सरल पहल है, जिसका उपयोग कर हम न केवल संस्था की अपितु स्वयं की भी कार्यशैली को उन्नत कर सकते हैं।

8224/cmrdportal/home.aspx है एवं इसका लॉगिन आई डी और पासवर्ड क्रमशः शाखा/क्षेत्रीय कार्यालय/एफ़जीएमओ (जैसे उचित हो) का सोल आई डी और पासवर्ड ubi123 है। शुरुआती लॉगिन के बाद उपयोगकर्ता 'पासवर्ड बदलें' विकल्प का प्रयोग करके पासवर्ड बदल सकते हैं।

पोर्टल की होम स्क्रीन पर Organisation structure एवं Operational Manual नामक दो विकल्प हैं। प्रथम विकल्प में आपको समस्त सी एम आर डी विभाग के उच्च अधिकारियों

प्रकार हैं:- होम/डैशबोर्ड, मॉकरन, एस एम ए, सीमा, क्रिलिक, संभवित दबावग्रस्त खाते (PS) नवीनीकरण, एल.ए.सी. (विधिक लेखापरीक्षा अनुपालना), मासिक अनुश्रवण रिपोर्ट, क्रेडिट कार्ड, तकनीकी कारणों से खातों में गिरावट, चूककर्ता सूची, सी एम आर डी दौरे, रिपोर्ट, सेटिंग्स।

इन खंडों के अतिरिक्त पोर्टल में अभी भी नए खंडों का समावेश किया जा रहा है। जैसे कि एम.एस.एम.ई. खाताधारक, वसूली एवं उन्नयन स्टॉक स्टेटमेंट एवं बीमा इत्यादि।



संभाव्य दबावग्रस्त खाता (पीएसए) : दबावग्रस्त संविभाग को कम करने का नया तरीका

कोई भी अग्रिम खाता रातोंरात तनाव में नहीं आता है. इससे पहले खाता पर्याप्त संकेत देता है और लगातार उत्सर्जित ऐसे संकेतों पर उपचारात्मक कार्यवाही करके संभावित तनाव खातों से बचा जा सकता है. इस प्रकार की गई उपचारात्मक कार्यवाही ना केवल बैंक के हित को सुरक्षित करेगी अपितु तनाव खातों के अनुगमन से बचे समय को सार्थक उपयोग से लाभान्वित करेगी.

खातों में तनाव से पहले उत्सर्जित होने वाले ऐसे संकेतों के संग्रह से बैंक ने एक पद्धति बनाई है जिसे संभाव्य तनाव खाता (पीएसए), औपचारिक रूप से, जिसे पूर्व चेतावनी संकेत (ईडबल्यूएस) के नाम से भी जाना जाता है. संभाव्य तनाव खाते (पीएसए) वो खाते हैं जो अभी तनाव ग्रस्त नहीं हुए लेकिन कुछ ऐसे संकेत दे रहे हैं, जो उनके तनाव ग्रस्त होने की संभावना बढ़ा देते हैं.

अपने बैंक ने फिलहाल यह पद्धति उन एमएसएमई ऋणों पर लागू की है, जिसकी सीमा ₹10 लाख या उससे अधिक है, इनकी पहचान के लिए कुछ नियम संग्रह बनाए गए हैं.

खातों की विशिष्ट पहचान के लिए खातों को दो वर्गों में बांटा है, जिसकी सीमा ₹10 लाख से ₹50 लाख है, उनका रंग पीला और ₹50 लाख से ऊपर की सीमा का रंग नारंगी रखा गया है. ये संकेत आंतरिक या बाह्य प्रकार के हो सकते हैं. आंतरिक संकेत वो हैं, जो बैंक के परिचालन से जुड़े हैं.

उदाहरण स्वरूप कुछ संकेत हैं

1. चालू खातों में 15 दिनों से अधिक के ब्याज के भुगतान में देरी
2. मियादी खातों की किस्त का देय तिथि पर भुगतान ना करना
3. वित्तीय कारणों से चेक की वापसी
4. एड-हॉक/अतिरिक्त/बिल खरीद अतिदेय

5. बैंक खाते में आवर्त की कमी
6. लगातार उच्चतम सीमा का उपयोग
7. आवधिक विवरण प्रस्तुत करने में देरी

बाह्य संकेत जो यूनिट पर जाकर, उधारकर्ता से बात करते हुए, उसके कर्मचारियों से, बाजार की पूछताछ से या साथी बैंकों से देखा जा सकता है.

1. परियोजना के कार्यान्वयन में देरी
2. परियोजना रिपोर्ट/स्वीकृत कोटेशन के अनुसार उप-मानक मशीनरी या मशीनरी की स्थापना ना करना
3. प्लांट एंड मशीनरी के बार-बार खराब होने की खबर
4. उत्पादन उपयोग क्षमता के अनुमानित स्तर से कम उत्पादन स्तर
5. श्रम समस्या और विनिर्माण में लगातार रुकावटें
6. महत्वपूर्ण स्पेयर पार्ट्स/प्रमुख कच्चे माल की गैर उपलब्धता

ये कुछ संकेत हैं, जिस पर समय से कार्यवाही करके संभावित तनाव खातों से बचा जा सकता है.

आज के इस समय में कोई भी बैंक या वित्तीय संस्था तनाव खातों को साथ अपने लक्षित लाभ को प्राप्त नहीं कर सकती है और सार्वजनिक उपक्रम होने के नाते हम पर सामाजिक और व्यावसायिक दोनों तरह की प्रतिबद्धता होती है, जो इन तनाव खातों से कहीं न कहीं अवरुद्ध प्रतीत होती है. इन सब को ध्यान में रखते हुए, हमें ऐसी कार्य योजना की जरूरत है, जो संभाव्य तनाव खातों से पहले ही सुधार कर आस्ति को नियमित बनाए रखने में मदद करें. जो बैंक के आंतरिक परिचालन से उत्सर्जित संकेत होते हैं जैसे उच्चतम सीमा का उपभोग, ब्याज की देय में देरी या फिर देय किस्त का समय पर भुगतान ना करना और जो

बाह्य कारक जैसे परियोजना के कार्यान्वयन में देरी, प्लांट एंड मशीनरी के बार-बार खराब होने की खबर, उत्पादन उपयोग क्षमता के अनुमानित स्तर से कम उत्पादन स्तर, श्रम समस्या और विनिर्माण में लगातार रुकावटें, महत्वपूर्ण स्पेयर पार्ट्स/प्रमुख कच्चे माल की गैर उपलब्धता.

उसके लिए बैंक के द्वारा उधारकर्ताओं को हर महीने की 15 तारीख को आयोजित की जाने वाली ग्राहक सेवा समिति बैठक में ऋण को समय से भरने से या ना भरने से होने वाले



फायदे या नुकसान से अवगत कराकर किया जा सकता है क्योंकि किसी को अनुशासित करने के लिए उसके व्यक्तिगत लाभ को वरीयता देने से काम ज्यादा आसान होता है और यह ही मानव प्रवृत्ति है.

इसके अतिरिक्त शाखा और क्षेत्रीय कार्यालय स्तर पर असामान्य व्यवहार वाले खातों (कम आवर्त वाले, अतिदेय, जिसमें इस महीने नवीनीकरण विचाराधीन है, स्टॉक स्टटमेंट में देरी) को सूचना पत्र देकर भी इसको काफी हद तक रोका जा सकता है.



रमेश कुमार
क्षे.का.मेहसाणा

लोन डिलीवरी प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है 'ड्यू डिलिजेन्स' जिसके तहत हम विभिन्न स्रोतों से सूचना इकट्ठा कर यह सुनिश्चित करते हैं कि ग्राहक, तय मानदंडों पर खरा उतरता है या नहीं. 'ड्यू डिलिजेन्स' प्रणाली में एक महत्वपूर्ण पहलू है भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी डिफॉल्ट लिस्ट जिसके मुख्यतः दो प्रकार हैं. पहला सूट फ़ाइल और दूसरा नॉन सूट फ़ाइल. अभी हाल ही में हमारे केंद्रीय कार्यालय के सीएमआरडी विभाग द्वारा सीएमआरडी पोर्टल लॉन्च किया गया है, जिसमें डिफॉल्ट लिस्ट का भी लिंक उपलब्ध कराया गया है. यह एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल है और लोन प्रोसेसिंग में काफी प्रभावशाली साबित हो रहा है.

हम कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहेंगे कि सीएमआरडी पोर्टल कैसे 'डिफॉल्ट लिस्ट' की जांच करने में मदद करता है और सुविधाजनक है:-

1. **लिंक की आसान उपलब्धता:-** अभी तक का अनुभव यही बताता है कि सामान्यतः UBINET पर उपलब्ध लिंक से इसकी जांच करते थे लेकिन अधिकांशतः लिंक उपलब्ध ही नहीं रहता है जिसके परिणामस्वरूप काफी परेशानी होती थी लेकिन सीएमआरडी पोर्टल पर यह लिंक हमेशा एवं आसानी से उपलब्ध रहता है. अतः जब चाहे आप स्वेच्छा से सर्च कर सकते हैं और अपने प्रोसेस नोट का पार्ट बना सकते हैं.

2. **तीन अलग अलग तरीके से ढूँढने का विकल्प:-** UBINET में उपलब्ध आंकड़ें एक एक्सेल शीट में होते हैं, जिसमें सर्च करने के लिए नाम के साथ ढूँढते हैं. लेकिन इस पोर्टल पर तीन ऑप्शन होते हैं जैसे नाम, पैन या यूसीएन के जरिये सर्च कर सकते हैं. इसमें सुविधा यह है कि आप तीनों ही तरीके से सर्च कर आश्चस्त हो सकते हैं कि हमारी सर्च पूरी तरह से सही है.

3. **डिफॉल्ट के साथ साथ अन्य नकारात्मक पहलू का शामिल होना:-** पोर्टल की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि डिफॉल्ट के साथ ही अन्य तरह के डिफॉल्ट की जानकारी भी उपलब्ध रहती है, जैसे CIBIL, विलफुल डिफॉल्ट, CIBIL सूट फ़ाइल डिफॉल्ट, Caution Advice वगैरह. इस तरह यह पोर्टल पर किए गए सर्च में विभिन्न तरह के नकारात्मक पहलुओं की जानकारी भी उपलब्ध रहती है.

4. **रिकॉर्ड रखने में मदद करना:-** बैंकिंग उद्योग जगत में खाता बही का रखरखाव अत्यंत ही महत्वपूर्ण है. हमारे द्वारा लिए गए हरेक निर्णय को विभिन्न तरह की ऑडिट प्रणाली से गुजरना पड़ता है जिसके लिए रिकॉर्ड का रखरखाव व अत्यंत ही महत्वपूर्ण है. जैसा कि ऊपर वर्णित है UBINET पर उपलब्ध एक्सेल शीट में सर्च के बाद यह प्रमाणित करना मुश्किल है कि हमने सर्च किया और कुछ नहीं पाया या कुछ पाया क्योंकि वहाँ पर प्रिंट की सुविधा उपलब्ध नहीं है लेकिन पोर्टल पर सर्च परिणाम को प्रिंट करने की सुविधा है जिसे ऑडिट के लिए फ़ाइल में रखा जा सकता है.

ऊपर वर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि डिफॉल्ट लिस्ट की जानकारी प्राप्त करने के लिए सीएमआरडी पोर्टल अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है और इसका उपयोग प्रत्येक कार्यालय, जहां भी ऋण संबंधी कार्य होते हों, में जरूर होना चाहिए.

संजीव कुमार
सरल, रांची



पिछले कुछ सालों से बैंक आस्ति गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए निरंतर प्रयासरत रहा है और अब यह बैंक में सबसे ज्यादा चुनौतियों से भरा कार्य है. इन्हीं चुनौतियों को कम करना और लक्ष्य की प्राप्ति करना ही हम सब का मकसद है.

लेकिन पूर्व में इस कार्य को करने में कई कठिनाइयाँ थीं और बहुत सारा कार्य मैनुअली करना पड़ता था. जिसे काफी हद तक हमारे बैंक ने कम किया है. चूंकि अब यूनियन बैंक के सीएमआरडी विभाग, केन्द्रीय कार्यालय ने डीआईटी की सहायता से एक इन हाउस वेब पोर्टल को तैयार किया है, जिसका शुभारंभ हमारे बैंक के प्रबन्ध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया है तथा इस बारे में सभी शाखाओं एवं कार्यालयों को अवगत कराया गया है. इससे सीएमआरडी वेब पोर्टल-ऋण अनुश्रवण में एक नया आयाम होगा.

इस सीएमआरडी पोर्टल का लिंक सभी शाखाओं एवं कार्यालयों को दिया गया है और लॉगिन करने के लिए यूजर आईडी और पासवर्ड भी प्रदान किया गया है.

इस वेब पोर्टल में ऋण अनुश्रवण से संबन्धित सभी महत्वपूर्ण डाटा उपलब्ध रहता है जैसे कि

1. मॉकरन व एस.एम.ए. (दबावग्रस्त आस्तियां)-एस.एम.ए.-0, एस.एम.ए.-1, एस.एम.ए.-2, 2. क्रिलिक डाटा (5 करोड़ से अधिक रुपये की दबावग्रस्त आस्तियां), 3. पीएसए/ईएसएस (पूर्ण चेतावनी संकेत), 4. एलएसी (विधिक लेखा परीक्षा अनुपालन), 5. मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट (MCMR), 6. क्रेडिट कार्ड (एस.एम.ए.-0 व 1-2), 7. संबन्धित शाखाओं/क्षेत्रीय कार्यालय/क्षेत्र महाप्रबन्धक कार्यालयों के खातों में तकनीकी कारणों से गिरावट, 8. सीएमआरडी दौरा-अग्रिमों में असाधारण बढ़ोत्तरी एवं अन्य जैसे एम-27, एफ-1, उच्च दबाव, मॉकरन इत्यादि, 9. चूककर्ताओं की सूची, 10. ऋण वसूली और उन्नयन खातों की सूची, 11. स्टॉक स्टेटमेंट और इश्योरेंस से संबन्धित खातों की सूची, 12. संबन्धित शाखाओं/क्षेत्रीय कार्यालयों/क्षेत्र महाप्रबन्धक कार्यालयों की रिपोर्ट. 14. वेब पोर्टल की एक विशेषता यह भी है कि चूककर्ताओं की सूची के साथ-साथ निदेशकों की चूककर्ताओं की सूची भी शामिल है जो बैंकर्स को चालू खाता खोलने और साख पत्र एवं गारंटी पत्र खोलने में सहायता करता है.

यह पोर्टल, डाटा स्रोत का एकल बिन्दु है, सीएमआरडी पोर्टल शाखाओं/क्षेत्रीय कार्यालयों/क्षेत्र महाप्रबन्धक कार्यालयों में कार्य करने वाले सभी यूनियन बैंक के स्टाफ के लिए बहुत लाभदायक है और इससे समय की बहुत बचत होगी, जो अभी तक अधिकांश रूप से डाटा निकालने और रिपोर्टिंग के लिए फोन करने में हो जाता था यह पोर्टल मेल के माध्यम से विभिन्न डाटा भेजने और शाखाओं/कार्यालयों द्वारा प्रिंट आउट लेने पर भी रोक लगाएगा जिससे प्रिंटिंग का खर्च भी कम होगा.

इस पोर्टल के माध्यम से बैंक में त्वरित रिपोर्टिंग हो सकेगी, जिससे समय की बचत होगी.

मेरा सभी यूनियन बैंक के साथियों से आग्रह होगा कि वे इस वेब पोर्टल का जितना हो, उतना लाभ उठाएं और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें.

कमलेश मीना
क्षे.का., जयपुर



'One time restructuring of MSME Sector'

RBI Scheme- An effective way to support viable MSMEs



Micro, Small and Medium Enterprises (MSMEs) forms an important component of the Indian economy and contributes

significantly to the country's GDP, exports, industrial output, employment generation, etc. Considering the importance of MSMEs in the Indian economy, it is considered necessary at this juncture to take certain measures for creating an enabling environment for the sector.

In a breather to the MSME Sector, the RBI has decided to permit one-time restructuring of existing loans to these enterprises that are in default but 'standard' as on January 1, 2019, without an asset classification downgrade, which is an important aspect of regulatory facebearer.

Restructuring without an asset classification Downgrade will save the lenders from higher provisioning burden. This will encourage banks and non-banking finance companies (NBFCs) to take up restructuring in

the case of MSMEs.

To be eligible for the restructuring, the aggregate exposure, including non-fund-based facilities of banks and NBFCs, to a borrower should not exceed ₹25 crore. The restructuring has to be implemented by March 31, 2020.

RBI has mandated that a provision of 5 per cent in addition to the provisions already held, should be made in respect of accounts restructured under this scheme.

Each bank/NBFC should formulate a policy for this scheme with the board approval, which should include the framework for viability assessment of the stressed accounts and regular monitoring of the restructured accounts.

How important are MSMEs to lenders?

MSMEs form close to 25% of commercial lending in India as of FY18. The segment recorded an 18% year-on-year growth in Q1 FY19.

What is RBI's existing framework for resolving stressed MSMEs?

In March 2016, RBI notified a mechanism for resolving stressed MSME loans of up to ₹ 25 crore.

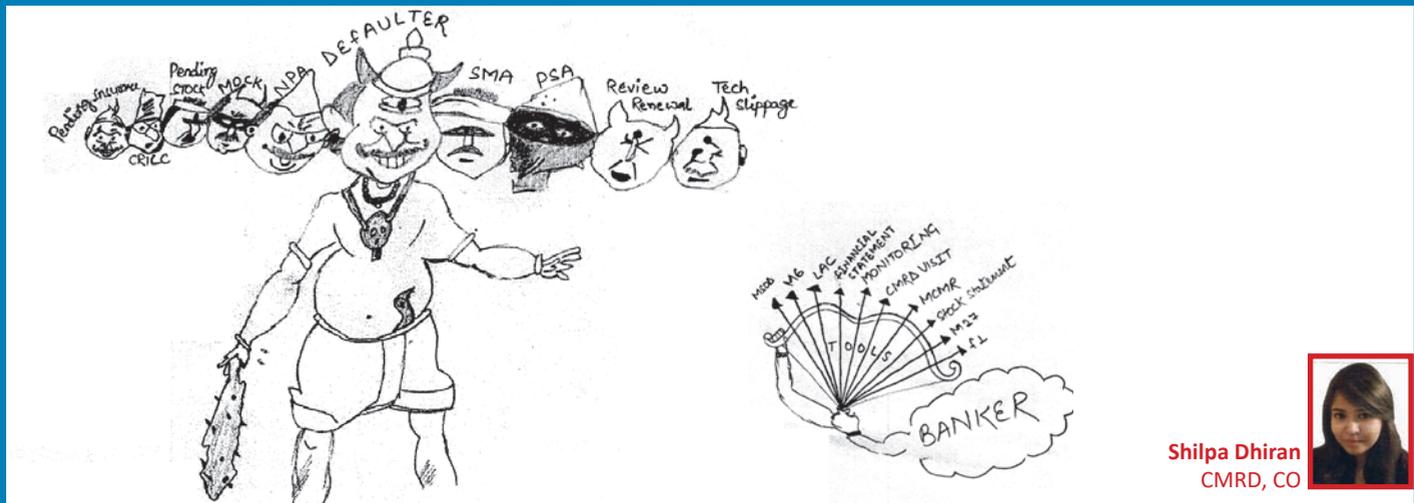
Under this, banks classify stress in such loans into three categories- special mention account (SMA) 0, SMA 1 and SMA 2-depending on the delay in repayment. RBI data for the six months ended March 2017 show that 137,282 MSME loan accounts were referred for resolution. Of these, banks used rectification in 80,905 cases and made recoveries in 54,180 others. Only 2,197 accounts were recast.

Why did it become necessary to provide some relief to MSMEs?

The government and RBI are ahead to provide relief to the stressed MSME Sector. RBI considered a scheme to recast loans of those MSMEs that were hurt by the demonetization of high-value currency notes on 8 November 2016 and, subsequently, the implementation of the Goods and Services Tax (GST) in July 2017. A study by RBI in August 2018 found that credit growth in the MSME Sector, which had started slowing even before demonetization, declined further after note ban was implemented.

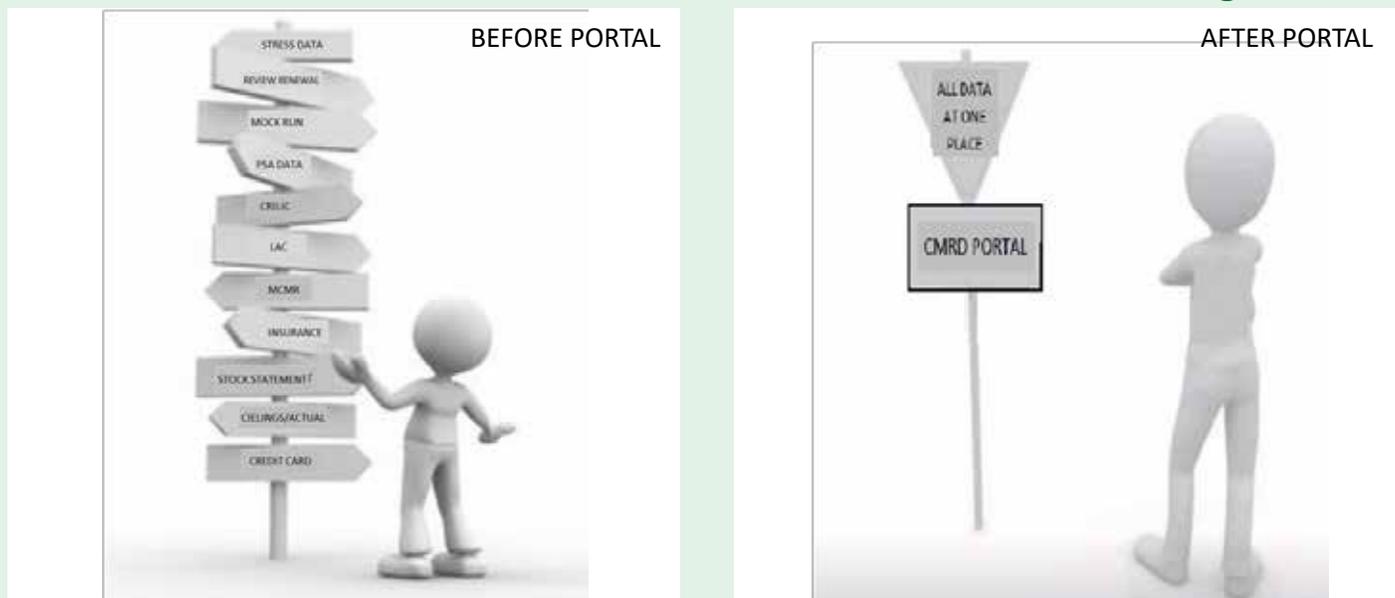


Vinay Jaiswal
R.O. Raipur



Shilpa Dhiran
CMRD, CO

CMRD WEB PORTAL - A New Dimension in Credit Monitoring



Instead of concentrating on various platforms relating to Credit Monitoring, the portal has enabled all of us to extract various data/information under single platform. The single platform is a multi dimensional approach that is mitigating various factors and the adoption of the web is having cascading effect and enhanced the efficiency to have logical conclusion on the account/s.

I would describe the CMRD portal as a platform where all the data pertaining to credit monitoring is available to each branch/office online with ease of excess. The portal is available to each staff of the Bank in their computer itself. It also has a proper reporting system.

SK Mohapatra
FGMO, Delhi



In banking industry Asset quality is the most talked about these days. The major parameter to measure this quality is NPA. This is inversely proportional to the asset quality. The problem of NPA in the banking industry is foremost and the most formidable problem that had impacted the entire banking system. Almost all banks these days are putting effort & to contain this demon. Poor Asset Quality or Higher NPA has its multi cascading effect on

financial stability and ultimately on economic health and macro balances of any country.

Today, the banking industry has been reeling under increased incidences of NPA in a situation when expectation of the stakeholders are on the rise. So all we can do now is understanding the fact **that - Prevention is better than cure, Hence need of the hour,** is to adopt following standards to maintain quality healthy:

1. Specialised skills in the area of Loan appraisal, monitoring and recovery.
2. Adopt centralized model of processing of the credit proposals pertaining to retail / agri / corporate, which will help to detect unviable project at first instance and improve the delivery of loan products in better and faster mode to the customer.
3. Opt for latest risk management techni-ques to further improve the

asset quality.

4. Adopting better monitoring tools supported by the best of technology for a better Monitoring of assets.

5. Adopt best corporate governance, prudent audit standards and supervision to further check any Leakage and lapses.

6. Identify the risky sectors ,areas and scenario and design the policies in line of these challenges and mitigate them.

Today Indian banking industry is standing at a crossroad where we are supposed to grow volumewise, opting of the above standards and their proper implementation will definitely improve the asset quality of the bank.

Manjeet Kumar Jakhar
Saral, Karnal





यथा मॉनिटरिंग तथा तकनीकी

तकनीकी यानि टेक्नोलॉजी, जो जीवन के हर क्षेत्र में जीवनसाथी की तरह साथ दे रही हैं और ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि तकनीकी हमारे जीवन का एक हिस्सा है. आज तकनीकी इतनी बढ़ चुकी है कि हम घंटों का काम मिनटों में करने लगे तो जाहिर सी बात है कि बैंक भी इससे अछूता नहीं है. प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बिना तकनीकी जीवन अधूरा सा है. यूनिजन बैंक तकनीकी के लिए जाना जाता है. फिर चाहे वह कोर बैंकिंग हो या अन्य कोई तकनीकी जैसे यू मोबाईल, एम पासबुक, टैब या DMS. रिकवरी एप्लिकेशन भी इसका एक नया रूप है. अब जब हर विभाग तकनीकी पर सवार है तो मॉनिटरिंग विभाग क्यों पीछे रहता? पिछले कुछ महीनों से मॉनिटरिंग विभाग भी तकनीकी के रास्ते पर चल पड़ा है. आज इस लेख में हम मॉनिटरिंग विभाग के तकनीकी प्रयोगों के बारे में जानेंगे और जब मॉनिटरिंग में तकनीकी की बात आती है तो जेहन में सबसे पहले CMRD Portal आता है. यह पोर्टल मॉनिटरिंग में तूफान की तरह आया है. आज यह मॉनिटरिंग के लिए वरदान साबित हो रहा है. हम तो इसे मॉनिटरिंग का विकिपीडिया मानते हैं या यूँ कह लीजिए कि यह यूनिजन बैंक का सर्च इंजन (गुगल) है. जहां एक क्लिक करने पर आपको मॉनिटरिंग डाटा का अथाह सागर मिलेगा. इस पोर्टल पर आपको पहले दर्शन होते हैं डैशबोर्ड के, जो अपने आप में आपकी शाखा या कार्यालय का आईना है. डैशबोर्ड से ही आपको दिख जायेगा कि आपकी शाखा किस तरफ जा रही है. यानि कि अगर आपकी शाखा की मॉकरन दबावग्रस्त आस्तियां कम हैं तो

आपकी शाखा बैंकिंग में स्वर्ग के स्थान पर हैं. अगर डैशबोर्ड नेगेटिव है तो मॉनिटरिंग की लापरवाही दिखाई देती है. CMRD Portal की गहराई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. रोजाना नये-नये टैब और फीचर बढ़ते जा रहे हैं. प्रमुख टैब निम्नलिखित हैं.

मॉकरन, एस. एम. ए./स्ट्रेस एसेट, लीगल ऑडिट, एम. एस. एम. ई. खाते, डिफाल्टर सूची, क्रेडिट कार्ड, एन. पी. ए. मॉकरन, एम. सी. एम. आर. आदि

CMRD Portal के अलावा मॉनिटरिंग के अन्य तकनीकी प्रयोग इस प्रकार हैं:

- * लैस सिस्टम में पोर्टल का लिंक.
- * यूनिजन परिवार में फ्लैश मैसेज.
- * स्क्रीन सेवर.
- * यूबीआई नेट पर रोजाना नये-नये सर्कुलर.
- * पोर्टल पर विभाग की जानकारी.
- * ओवरड्यू नोटिस सीधे केन्द्रीय कार्यालय /क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय/क्षेत्रीय कार्यालय से जारी होना.
- * वन टाइम रिस्ट्रक्चरिंग के नोटिस सीधे केन्द्रीय कार्यालय या क्षेत्रीय कार्यालय से जारी होना.

CMRD officers Whatsapp Group

- * आपकी मेल का डिफाल्ट सिग्रेचर सी.एम. आर. डी. के बारे में.
- * मार्च माह की यूनिजन धारा मॉनिटरिंग पर आधारित.
- * 'यूनिजन ज्ञान कसौटी' मॉनिटरिंग पर

आधारित.

- * प्रमोशन प्रोसेस में मॉनिटरिंग विभाग का शामिल होना और मॉनिटरिंग पर आधारित विषय वस्तु देना.
- * मॉनिटरिंग फीडबैक व स्टाफ के साथ कम्यूनिकेशन
- * मॉनिटरिंग स्लोगन जैसे Need of hour today at every level

रोजाना नये-नये ई मेल आना हो सकता है कि आप कभी मॉनिटरिंग विभाग का मोबाईल एप्लीकेशन भी देख पाओ जो इस विभाग का क्रांतिकारी तकनीकी प्रयोग होगा. बहुत बार ऐसा लगता है कि जैसे हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अचानक से किसी चीज की घोषणा कर देते हैं और सारी दुनिया हैरान हो जाती है, ऐसे ही मॉनिटरिंग विभाग के महाप्रबंधक महोदय कुछ नये प्रयोग के लिए जाने जाते हैं.

हमारा उच्च प्रबंधन, आप सोच सकते हैं कि मॉनिटरिंग के प्रति कितना जागरूक और गंभीर है. मॉनिटरिंग बहुत बड़ा विषय है और इस अथाह समुद्र में तकनीकी की संभावनाएं बहुत हैं. हमारे सभी साथियों को इन सभी तकनीकी उपकरणों का रोजाना प्रयोग करना सुनिश्चित करना चाहिए और इन तकनीकी उत्पादों का प्रचार और प्रसार करते रहना चाहिए. फीडबैक हमेशा कुछ नया लेकर आता है इसलिए हमेशा फीडबैक देते रहना चाहिए.



नवनीत कुमार
क्षे.का, करनाल

The Importance of Legal Audit Compliance (LAC)

Legal Audit Compliance is one of the most important tool in monitoring. In order to ensure the genuineness of the title of documents especially in large value loans, the Reserve Bank of India in its communication no:RBI/2012-13/524-DBS.FrMc.BC.No.7/23.04.001/2012-13 dated 07.06.2013 advised that the title deeds and other related documents of accounts with credit exposure of Rs.5.00 crore and above should be covered under periodic legal Audit till the loan stands fully repaid.

In compliance to the RBI guidelines, our CP& MSME department has also issued guidelines on the conduct of Legal Audit in Loan accounts vide Instruction circular no: 9982 dated 19.06.2014 along with defined formats for obtaining the Legal Audit Report. A detailed check list for guidance of Advocates is also provided in the said circular. The Credit Monitoring & Restructuring Department has also highlighted the importance of Legal audit Compliance in its circular letter no: 2674-2018 dated 12.10.2018.

The need for obtaining the Legal Investigation Report from Bank's Panel advocate, valuation report from approved valuer on Bank's Panel, Conduct of Due Diligence

on the property to be mortgaged, the importance of obtaining the correct set of security documents and creation of mortgage (EM) in respect of the property, vetting of security documents both prime as well as collateral has been repeatedly stressed upon in various guidelines issued by the Department from time to time. In addition, the Registration with various authorities like Registrar of Companies in case of assets owned by Corporate Borrower, with sub registrar in case of EM, CERSAI in case of properties accepted as security and with Revenue Authority in case of Agriculture Land is taken up to ensure that the mortgage is created properly.

The Primary objective of obtaining all the reports mentioned above is to ensure that the amount lent is safe and secure and the interest of the Bank is protected at all time. It is in this context that the conduct of Legal Audit at prescribed interval assumes added importance.

The Standard Operating Procedure (SOP) for conducting Legal Audit to be adopted by Branches/ Offices/CMRD CO is as under:

a. Role of Branches in Legal Audit Compliance: The Branches are required to first identify the accounts

that are falling in the purview of Legal Audit Compliance and diarize the date of conduct of Legal audit of such accounts . The Branches should also identify accounts where the Legal Audit is pending and report such accounts to the Regional Office immediately.

b. Role of the Regional Office: The steps to be taken by the Regional Office is as under :

- Collect information and diarize the date on which the Audit is conducted and also the next date due;

- Appoint Empanelled Legal advocate to conduct Legal audit in cases where not conducted in consultation with the Branch after ascertaining the state of the account in terms of Stress;

- Ensure timely completion of Legal audit in each of the identified account by way of rigorous follow-up;

- Scrutinize the Legal audit Report to identify whether Legal audit is Qualified or Unqualified;

- Report the details of all unqualified Legal Reports to the concerned FGMO and CMRD, Central Office;

□ In case of the Qualified Reports, regional Office to discuss the matter with the Branch and the Borrower and resolve the matter;

□ Once the deficiencies are corrected and submitted to the same Advocate for his opinion a supplementary Report/Certificate is to be obtained from the Advocate which confirms that the deficiencies pointed out are rectified and obtain the unqualified Report in such accounts. The same is to be reported to FGMO as well as the CMRD, CO immediately;

□ Submit the certificate on status of Legal Audit Compliance every quarter to FGMO and CMRD, Central Office in prescribed Formats.

c. Role of the Credit Monitoring and Restructuring Department at Central Office:

□ Call and collect necessary details from the Regional Office at Quarterly intervals in prescribed formats;

□ Place a note to Audit Committee of Board (ACB)/Board as per directives of Reserve Bank of India (RBI) on the status of the Legal Audit Compliance on Quarterly basis.

In today's Banking scenario, it is important that Branches should invariably conduct the Legal Audit in all large accounts with exposure of Rs.5.00 crore and above and upto Rs.100 crore once in 5 years and in all advances above Rs.100.00 crore once in 2 years as prescribed in the laid down guidelines to ensure that the title deeds and other documents are in order and mortgage is properly created to protect Bank's interest.

Uday Kumar Khazane
CMRD, Central Office



Importance of Timely Monitoring of Loan Portfolio

Credit monitoring is a two word term but has the widest of meanings and could not be defined with one/two definitions. Every department in the bank today has its own set of duties, responsibilities and guidelines to follow.

Regarding Credit monitoring, it has such a large purview that each staff of the bank may be a peon or an officer or a top management executive is a monitoring officer in him/herself.

The basic task of the bank is to accept deposits and further lend it. The people who deposit funds with us have a belief that their money is safe with us and it is our moral responsibility and duty to safeguard the money and interests of the depositors by ensuring that we lend to people who return our money well in time.

Here comes the role of timely and proper monitoring of loan portfolio. It is a well known fact that a stitch in time saves nine. If we do not monitor the loan accounts from the start of the credit itself, then we may not be able to save it from turning NPA and banks and investor's interest are hurt.

Right from the sanctioning, the foremost monitoring is to monitor that all the security documents and charge creation is done properly. We should ensure that asset is

created and record of the same shall be kept for which the loan is given (particularly for term loans). A close monitoring by periodical visits that the asset created from our funds is properly maintained and is present is needed, even in the cases where EMI is being deposited regularly. For working capital periodical visits and close monitoring on the transaction can give very early signs of default.

It is understood that monitoring is basically for assets which are in stress category whereas if the monitoring is done by adopting small cautionary steps in standard asset only, then we can save large number of accounts in turning to stress category and maintaining healthy balance sheet of the bank. There is no standard set of rules of monitoring, it varies from situation to situation and can be easily done if we simply use our commonsense and keep our eyes and ears open and ourselves active.

If we start considering the money we lend to the borrowers as our personal money and start adopting the cautious step to monitor as we would have done with our personal money a lot of stress assets can be avoided.

Deepak Arora
FGMO Delhi



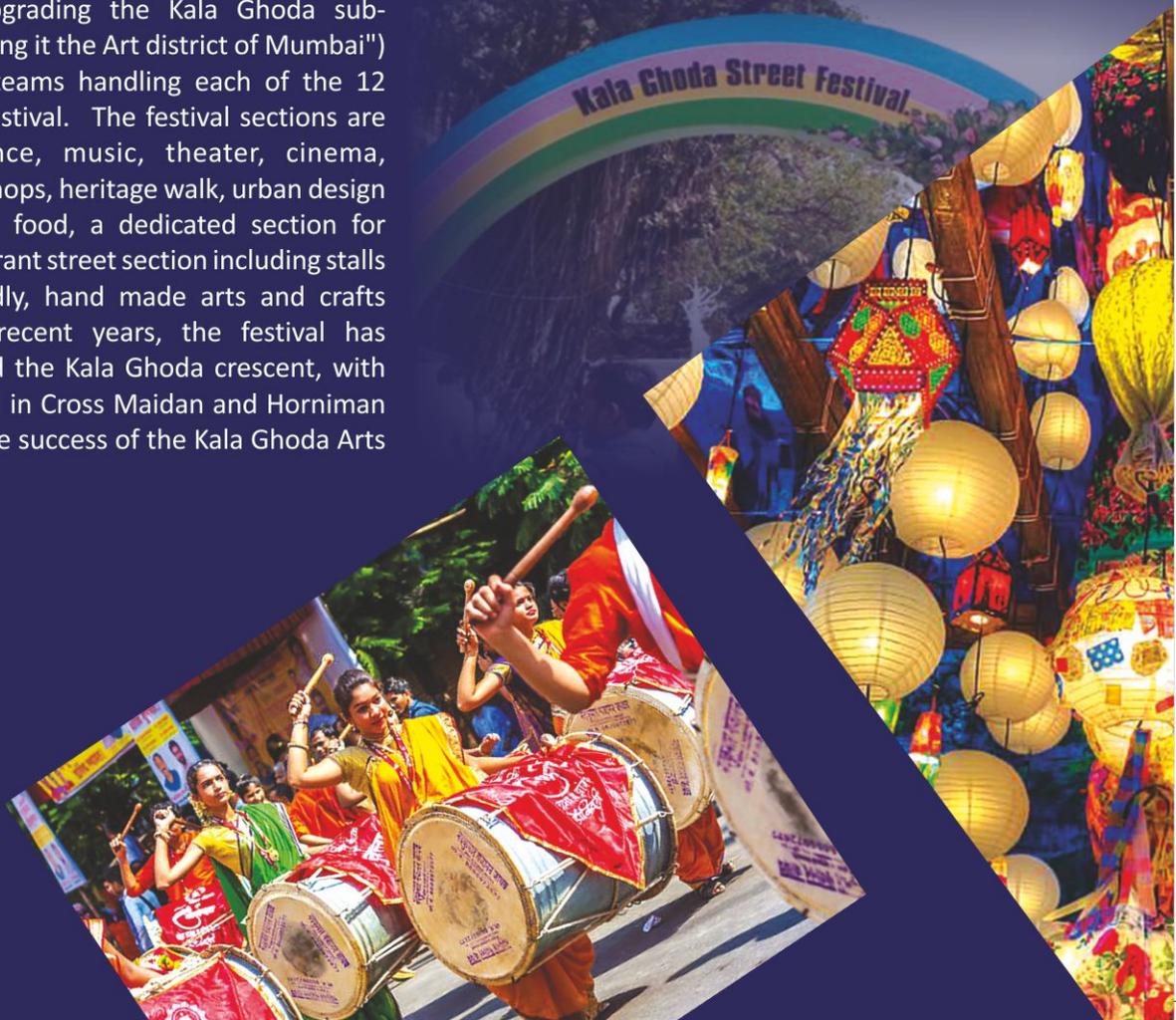
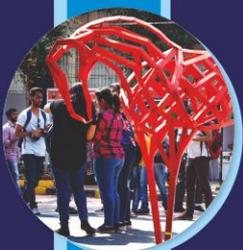
The Kala Ghoda Arts Festival

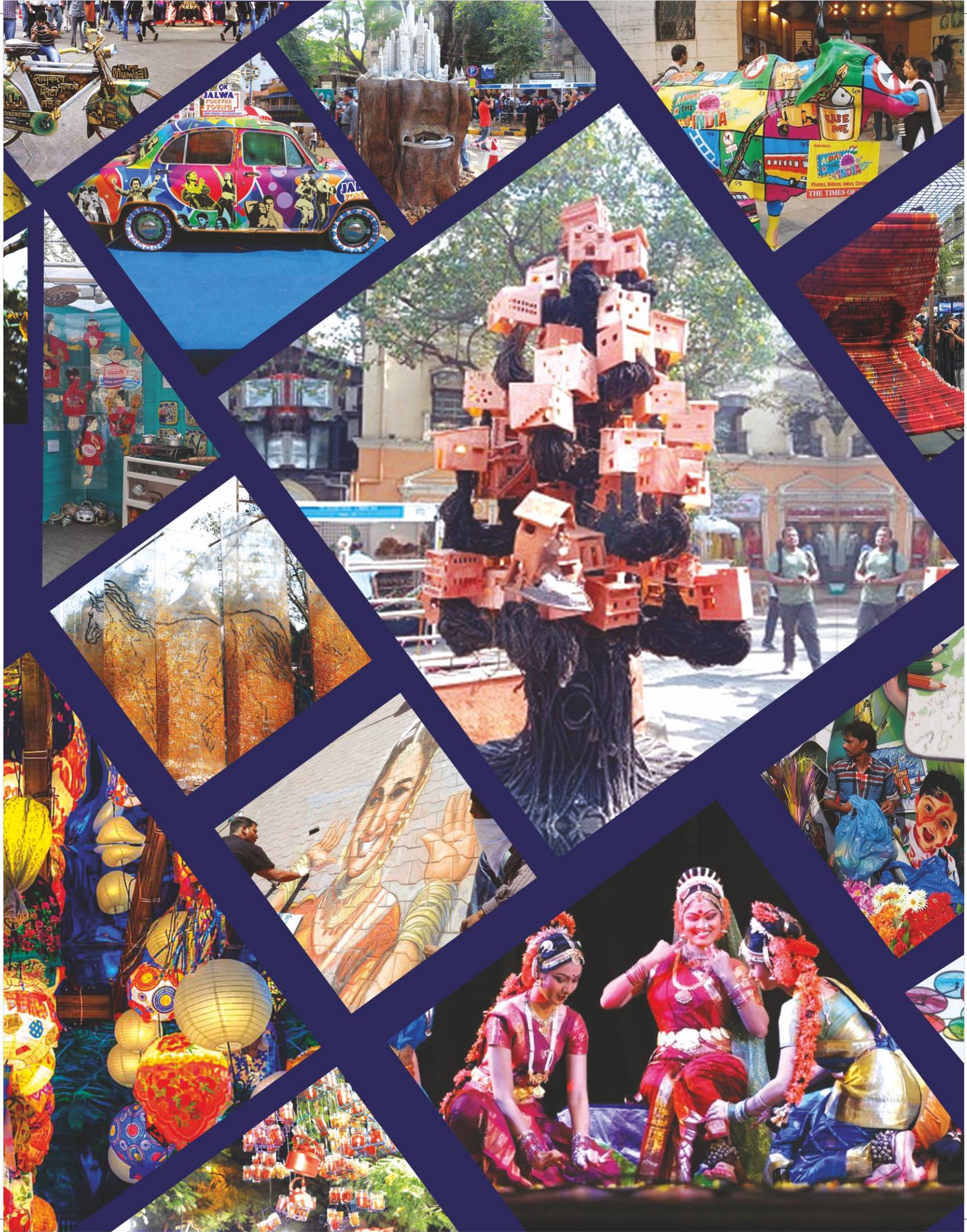


The Kala Ghoda Arts Festival is an annual festival, nine days long, commencing always on the first Saturday of February and closing always on the second Sunday in February, in the Kala Ghoda area of South Mumbai. From its inception since 1999, the festival has grown in stature and popularity, attracting visitors and participation from other parts of the country and the world. The festival is organised by the Kala Ghoda Association (a non-profit organisation that states its objectives as 'physically upgrading the Kala Ghoda sub-precinct and making it the Art district of Mumbai') and created by teams handling each of the 12 sections of the festival. The festival sections are visual arts, dance, music, theater, cinema, literature, workshops, heritage walk, urban design and architecture, food, a dedicated section for children and a vibrant street section including stalls selling eco friendly, hand made arts and crafts ware. In the recent years, the festival has expanded beyond the Kala Ghoda crescent, with events being held in Cross Maidan and Horniman Circle as well. The success of the Kala Ghoda Arts

Festival has, arguably, encouraged the setting up of several other arts and cultural festivals at that time of the year, when the weather in Mumbai is cool and the sun sets early.

P. C. Sahu
Vigilance Dept., CO





अभावग्रस्त ऋण खातों में वसूली हेतु कार्यप्रणाली

जैसा कि हम जानते हैं बैंकिंग उद्योग वर्तमान में बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहा है एवं इसमें सबसे बड़ी समस्या है बैंकों में बढ़ता एन.पी.ए. स्तर, जिससे सीधे-सीधे बैंक की लाभप्रदता पर असर पड़ता है. बढ़ते हुए एन.पी.ए. से निपटना वर्तमान में सबसे आवश्यक कार्य है जिससे बैंक को लाभ में लाया जा सके एवं पी.सी.ए. में जाने से भी बचाया जा सके. पी.सी.ए. में जाने पर एक तो बैंक आगे ऋण प्रदान नहीं कर पाएगा. दूसरा इससे बैंक की बाजार में प्रतिष्ठा कम होगी. अतः वर्तमान में बैंक के हर अधिकारी/कर्मचारी का यह दायित्व बनता है कि वह हर वक्त बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने हेतु प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप में कार्य करें.

भारतीय रिजर्व बैंक के IRAC-2015 आई. आर.ए.सी. मानदंड के अनुसार किसी भी ऋण खाते की तीन किश्तें एवं अतिदेय हो जाने पर खाता एन.पी.ए. की श्रेणी में आ जाता है. इसी तरह सी.सी. (नकद साख) एवं ओवर ड्राफ्ट खातों में 90 दिनों तक लेनदेन न होने पर या इस समयावधि का सम्पूर्ण ब्याज जमा न होने पर ये खाते एन.पी.ए. में परिवर्तित हो जाते हैं. उक्त खाते एन.पी.ए. में परिवर्तित होने पर बैंक को निम्नलिखित प्रकार से नुकसान होता है:

□ उक्त ऋण/नकद साख खाते पर ब्याज प्राप्त होना बंद हो जाता है.

□ उक्त खातों पर पिछले 90 दिनों में लगा ब्याज आय खाते से नामे होकर अप्राप्त ब्याज खाते में (URI) चला जाता है.

□ उक्त खातों पर प्रावधान करना पड़ता है.

अर्थात् सरल शब्दों में इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है कि कोई भी ₹1.00 लाख का ऋण खाता हमें वर्ष भर में ₹750 से ₹800

तक की आय (सभी प्रकार का खर्च काटकर) देता है एवं अगर यही खाता एन.पी.ए. हो जाता है तो इसमें प्रावधान मिलाकर ₹16000 का नुकसान देता है. अर्थात् या तो बैंक यह नुकसान सहन करें या इसकी भरपाई करने हेतु ₹20 लाख का नया ऋण प्रदान करें. अर्थात् ₹1 लाख का एन.पी.ए. खाता ₹20 लाख स्टैंडर्ड खातों से प्राप्त आय को खा जाता है. इसलिए कहा जाता है कि किसी भी खाते को एन.पी.ए. न होने दें. उसे हर हाल में एन.पी.ए. होने से बचाएं जिससे बैंक की लाभप्रदता बनी रहे.

बैंक में एन.पी.ए. का स्तर दो प्रकार से कम किया जा सकता है :

- 1) नए खातों को एन.पी.ए. न होने देना.
- 2) पुराने एन.पी.ए. खातों में वसूली/अपग्रेडेशन करना.

नए खाते एन.पी.ए. ना हो इसके लिए खाते का शुरू से ही अनुश्रवण करना जरूरी है अर्थात् ऋण के पहली बार बैंक में आने से ही यह अनुश्रवण शुरू हो जाता है. ऋण प्रदान करने के लिए सही ऋणी चुनने से यह प्रक्रिया शुरू होती है. ऋणी का पूर्व अनुभव, उसकी बाजार में स्थिति आदि का भी आकलन सही प्रकार से होना चाहिए तथा जिस प्रोजेक्ट के लिए ऋण प्रदान किया जाएगा, उसे भी लाभ प्राप्त करने वाला होना चाहिए, जिससे ऋण के किश्तों की वापसी सुनिश्चित हो सके. पुराने एन.पी.ए. खातों में वसूली कर प्रावधान मुक्त कर लाभप्रदता में बढ़ोत्तरी की जा सकती है एवं संभव हो तो खाते में इतनी वसूली कर लेनी चाहिए कि खाता अपग्रेड किया जा सके जिससे उस खाते से पूरी आय प्राप्त हो सके.

पुराने एन.पी.ए. खातों में वसूली हेतु बैंक द्वारा विभिन्न प्रक्रियाएँ बताई गई हैं जिससे

उक्त खातों में वसूली सुनिश्चित की जा सके. शाखाएँ अगर इन प्रक्रियाओं का यथा योग्य पालन करें तो एन.पी.ए. खातों में निश्चित ही वसूली होगी. जिससे ऋण खाते अपग्रेड होंगे या समझौता के अंतर्गत उन्हें बंद किया जा सकता है.

ऋण पटाने की इच्छा

(+)

| | | | |
|-----|-----|--------------------|-----|
| 2 | 1 | | |
| (-) | (+) | ऋण पटाने की क्षमता | |
| | | 3 | 4 |
| | | | (-) |

एन.पी.ए. खातों की वसूली हेतु शाखाओं को अपनी शाखा के एन.पी.ए. खातों के ऋणियों को उनकी ऋण पटाने की इच्छा एवं ऋण पटाने की क्षमता के आधार पर उपरोक्त प्रदर्शित ग्राफ के अनुसार विभाजित कर लें तथा प्राप्त चार चरणों के ऋणियों पर निम्नानुसार वसूली कार्यवाही करने पर अधिकतम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं.

प्रथम चरण :

ऋणी का ऋण पटाने की इच्छा है एवं क्षमता भी है, ऐसे ऋण अपने किसी अहंकार या शाखाधिकारियों के किसी विवाद के चलते किस्ते पटाना बंद कर देते हैं, ऐसे ऋणियों के अहंकार को शांत कर वसूली की जा सकती है एवं खातों को अपग्रेड या बंद किया जा सकता है.

द्वितीय चरण :

इसमें ऋणी की ऋण पटाने की इच्छा तो होती है परंतु आर्थिक क्षमता न होने के चलते ऋण नहीं पटा सकता. ऐसे ऋणियों से सहानुभूति पूर्वक संपर्क कर उन्हें बैंक की

विभिन्न समझौता योजनाओं का लाभ प्रदान करते हुए वसूली की जा सकती है एवं खातों को बंद किया जा सकता है.

तृतीय चरण :

इस चरण में ऐसे ऋणी सम्मिलित होते हैं जिनकी न ऋण पटाने की इच्छा है एवं न ही क्षमता. शाखाओं को ऐसे ऋणियों पर ज्यादा समय नष्ट न करते हुए खातों को सीधे A-4 श्रेणी में डालकर उन्हें राइट ऑफ करा देना चाहिए जिससे एन.पी.ए. स्तर कम हो जाए.

चतुर्थ चरण :

इस चरण में ऐसे ऋणी होते हैं जो आर्थिक रूप से तो सक्षम होते हैं किन्तु ऋण पटाने की इच्छा नहीं रखते हैं. बैंक के तरकश के सारे तीर केवल इस प्रकार के ऋणियों पर ही आजमाने के लिए बताए गए हैं. बैंक की भाषा में इन्हें जानबूझकर चूककर्ता (willful defaulter) कहा जाता है. इन पर बैंक निम्नलिखित प्रकार की कार्रवाई कर सकती है :

- 1) सम्पूर्ण ऋण राशि जमा करने का नोटिस देना.
- 2) कानूनी नोटिस देना.
- 3) आर.आर.सी. अथवा आर.सी. काटना (जहां लागू है)
- 4) सरफेसिया एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई.
- 5) सूट फ़ाइल करना.
- 6) डी.आर.टी. सूट फ़ाइल करना.

शाखाओं द्वारा अगर अपने एन.पी.ए. ऋणियों का सही आकलन किया जाता है व इन वर्गों में विभाजित किया जाता है तो शाखाएँ अधिकतम वसूली कर सकती हैं. वर्तमान में शाखाओं से यही अपेक्षा की जाती है कि वे जल्द से जल्द एवं अधिकतम वसूली करें तथा नए स्लिपेज न होने दें ताकि बैंक की लाभप्रदता बढ़े एवं हमारा बैंक एक सुदृढ़ बैंक के रूप में उभरे एवं इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो.

मिलिंद जोशी
क्षे.का., नासिक



सी एम आर डी वेब पोर्टल ऋण अनुश्रवण में एक नया आयाम

वर्तमान दौर में सार्वजनिक बैंकों की सबसे बड़ी समस्या बढ़ता हुआ एन.पी.ए. है. यदि सभी ऋण खातों का समय-समय पर उचित प्रकार से अनुश्रवण किया जाए तो बहुत से ऋण खातों को एन.पी.ए. होने से बचाया जा सकता है एवं बैंक की आस्तियों की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए यूनिजन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा दिनांक 17.11.2018 को सी.एम.आर.डी. वेब पोर्टल विकसित किया गया है जो कि खातों को एन.पी.ए. होने से बचाने में संजीवनी के रूप में कार्य कर रहा है. इस पोर्टल के माध्यम से शाखा स्तर से लेकर केंद्रीय कार्यालय स्तर तक के कार्मिक अपनी शाखा या क्षेत्र की दबावग्रस्त खातों की जानकारी बड़ी ही आसानी से प्राप्त कर सकते हैं. इससे बैंक के दबावग्रस्त खातों की प्राथमिक स्तर पर ही पहचान कर उन्हें एन पी ए होने से बचाया जा सकता है.

इस पोर्टल के माध्यम से पूरे बैंक के ऋण खातों की समस्त जानकारी को एक स्थान पर केंद्रित किया गया है जिसमें खाताधारक की समस्त जानकारी को भी शामिल किया गया है ताकि बैंक के किसी भी स्तर से उक्त ऋण खातों की पहचान करके सीधे तौर पर खाताधारक से संपर्क कर ऋण खातों का अनुश्रवण सुनिश्चित किया जा सके.

आइये, इस पोर्टल के टूल्स के बारे में जानते हैं:-

इस पोर्टल में लॉगिन करने के लिए हमें यू.बी.आई. नेट पर जाकर यूज़फूल लिंक्स में जाना होता है जहाँ CMRD PORTAL के नाम से एक लिंक प्रदर्शित होता है. जैसे ही आप इस लिंक पर लॉगिन करते हैं यह आपसे लॉगिन आई डी एवं पासवर्ड मांगता है. इस पोर्टल की लॉगिन आई डी एवं पासवर्ड के संबंध में संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय से पता लगाया जा सकता है. लॉगिन करने के उपरांत होम पेज पर कार्यालय के समस्त ऋण खातों से संबंधित विवरण प्रदर्शित होता है. स्क्रीन पर प्रदर्शित कुछ महत्व पूर्ण लिंक्स की जानकारी निम्न प्रकार है:-

1. दबावग्रस्त ऋण खाते-इस लिंक को तीन भागों में विभाजित किया गया है जो कि निम्न हैं:-

SMA-0 इस श्रेणी में वे खाते रहते हैं जिनमें

एक दिन से 30 दिन तक की मूल राशि या ब्याज की वसूली ना हुई हो.

SMA-1 इस श्रेणी में वे खाते रहते हैं जिनमें 31 दिन से 60 दिन तक की मूल राशि या ब्याज की वसूली ना हुई हो.

SMA-2 यह श्रेणी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस श्रेणी में वे खाते आते हैं, जिनकी मूल राशि या ब्याज 61 से 90 दिन तक जमा न हुआ हो. इस प्रकार, इस श्रेणी के बाद खाता एन.पी.ए. की श्रेणी में चला जाता है.

2. मॉकरन - इस लिंक में मॉकरन में आ रहे ऋण खातों का विवरण कारण सहित रहता है कि उक्त खाता आर्थिक त्रुटि या किसी तकनीकी कमी जैसे स्टॉक स्टेटमेंट ना मिलना या लंबित रिव्यू/रिन्यूल या खाते का टी डी एन एस सी ऋण के अनुरूप ना रहने के कारण मॉकरन में आ रहा है.

3. इस पोर्टल में अन्य कई महत्व पूर्ण लिंक्स भी शामिल हैं जैसे - लंबित रिन्यूल, एम.सी.एम.आर, क्रेडिट कार्ड मॉकरन, पी.एस.ए. खाते, लीगल ऑडिट कंप्लाइन्स, सी.एम.आर.डी. विजिट, डिफाल्टर लिस्ट, तकनीकी खामी एन.पी.ए. खाते एवं सीलिंग लिमिट इत्यादि.

इस पोर्टल के माध्यम से हम अपनी शाखा या कार्यालय के ऋण खातों की वर्तमान स्थिति से वाकिफ रहते हुए समस्त ऋण खातों का उचित प्रकार से अनुश्रवण कर सकते हैं. इस पोर्टल के माध्यम से समस्त शाखाएँ/कार्यालय अपनी शाखा या कार्यालय की वर्तमान स्थिति को भी अद्यतन कर सकते हैं.

इस पोर्टल को शाखा स्तर पर दैनिक आधार पर अद्यतन किया जाना होता है जिससे कि शाखा के ऋण खातों के ऋण अनुश्रवण से संबंधित समस्त जानकारी अखिल भारतीय स्तर पर अद्यतन हो जो कि बैंक के प्रत्येक स्तर पर उपलब्ध रहती है.

यदि इस पोर्टल का प्रयोग उचित प्रकार से किया जाए तो यह बैंक के एन.पी.ए. स्तर को कम करने एवं बैंक की आस्तियों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु रामबाण सिद्ध होगा.

मीनिषा बेदी-गंगार
क्षे.का.,दिल्ली (उत्तर)



WHY CREDIT MONITORING IS – 'NEED OF THE HOUR' !

INTRODUCTION: With liberalization, globalization and opening up of the economy, Indian Banking has become vulnerable to the spillover and contagion effects. The challenges of increased competition and profitable survival have necessitated maintaining high credit quality and controlling growth of stressed assets. During the last decade in the wake of global slowdown, Indian economy has shown definite symptoms of slowdown and the growth rate has gone down significantly. Therefore, the challenge before the bank is dual, only good quality assets are added and quality of added assets is there after maintained. In this context,

the asset. Banks need to put in place a very sound and effective credit monitoring system to keep a watch on the borrower's account from various angles.

The success of credit monitoring largely depends on two aspects namely the co-operation of the borrower in timely furnishing the required data and statement to the banks on time and the capacity and knowledge of the credit monitoring authorities to take timely decisions and corrective steps to keep the borrower accounts in good health.

Credit Monitoring: Monitoring of the credit portfolio and accounts is

and ensuring disbursement by the other participating banks are also required.

2. Disbursement Stage: During the disbursement, one should ensure the end use of funds by disbursing the amount in the right manner. Credit delivery in loan accounts is distinct from Overdraft and Cash Credit accounts. All disbursement should be related to actual/acceptable levels of performance of the business units and in line with the basic objective of safety of the bank's exposure in the credit assets. The disbursement should be commensurate with the progress of the project/Business activity, also take into account the extent of margin brought in by the promoters up to the given point of time.

3. Post Disbursement Stage: This forms a substantial part of the monitoring function in the bank. Actual performance of the borrowers should be monitored by operational data at regular intervals. The particulars furnished by the borrowers need to be compared with the projected performance as Periodical inspection and Stock Audit should be ensured. Analysis of the audited financials and review of the account, at least once in a year is the most integral part of Post disbursement monitoring. Timely identification of accounts showing symptoms of stress and putting them under watch category for constant monitoring is absolutely imperative.

Need for Credit Monitoring in present scenario : Monitoring of the borrower account on an ongoing basis will facilitate foreseeing the problems and taking corrective measures to mitigate the adverse impact. Effective credit monitoring will ensure proper



proper monitoring of credit in banks has assumed greater significance.

Credit Monitoring is an integral part of lending activity. Banks have a great responsibility to maintain the quality of the assets and to recover the interest and other dues in time. Though adequate precautions are taken during assessment and sanction of a loan, a banker has to be more vigilant after sanction of the loan. Unless early warning signals are captured, a bank may not be able to take proper remedial measures to arrest the slippages in the quality of

essential in order to maintain the quality of the credit portfolio of the bank. Credit monitoring is considered as an essential tool in today's market. Monitoring covers all the three stages namely :

1. Pre Disbursement Stage : It covers obtaining satisfactory credit reports from existing lenders, execution of the stipulated security documents including creation of collateral security/Mortgage as per terms of sanction, obtaining Letter of Guarantee from the guarantors, if any. The other formalities such as vetting of documents by legal dept.

usage of loan funds and reduce the loan losses which will in turn maximize the returns to the banks. Credit monitoring is essential to keep user's account safe from fraud also. It is essential that any suspicious activity be discovered early.

The growth of the economy depends upon the efficiency and stability of the banking sector. The most important factor which measures the health of the banking industry is Non Performing Assets. NPAs have direct impact on the financial performance of the banks i.e. their profitability. It denotes the efficiency with which a bank is optimizing its resources and therefore, serving an index to the degree of asset utilization and managerial effectiveness. Therefore with proper and effective credit monitoring, we can curtail the chances of asset to become a Non Performing Asset.

Sincere monitoring in respect of (a) Verification of securities (b) Insurance cover (c) End-use of fund (d) Review of stock statement (e) Recovery of ad-hoc sanctions and (f) Frequency of over drawings in the account may contribute to prevention of non performing accounts to some extent. In view of the limited contribution of the above monitoring items, few other variables like operation in the account and strategic standing of the firm should be included in the monitoring process. Along with these arrangements, it is necessary to create awareness on importance of credit monitoring and filling up of knowledge and skill gaps. Towards this end, we have to pay special attention to train and educate the customer and staff in related areas.

Suman Kumar
R.O. Karnal



'Technology as a Game Changer in Credit Monitoring'

Technology - which was considered as a bane in banking has turned up to be a boon for bankers. It has not only globalised the banking but also consolidated the approach to monitoring of assets. Among its innumerable advantages, monitoring of assets has turned up to be one of the greatest achievement.

Asset quality is like a blood in a human body, the contamination of it can prove fatal. To maintain the good quality of assets -"Monitoring" plays a tectonic role. Technology associated with Monitoring has not only made the work of the bankers easy but it has also improved the Turn Around Time and customer service through indirectly.

Our bank has grown by leaps and bounds in last few decades and



has assimilated the technology propitiously. our Bank is also recognized as a technologically advanced bank and has launched many initiatives in the domain of monitoring. Recovery App and CMRD Portal have become "Magnum Opus".

The hefty sheets of paper, have migrated into a small gadget and can be used anywhere and anytime. even in ipad of Regional Heads & field General Manager.

We all know, that the one who possess knowledge is the winner. "Technology" has given opportunity to everyone to become a winner by furnishing all monitoring information at one place and that too very affable

Some of the privileges provided by

the Technology can be reprised as:

1. Availability of SMA Data in Recovery App.
2. Navigation tool has made the tracking of borrower easier.
3. Updating the live images of the borrower.
4. CMRD Portal, which provides all information like SMA, PSA, Mock Run, Renewal, CRILC, LAC. It is playing a sacred role for the monitoring officers.
5. Verifying the customer Aadhar, PAN, Defaulter list online.
6. Generating the credit history of the borrower.
7. Monitoring of misuse of delegation, etc.
8. Generation of Potential Stress Accounta (PSA) data based on Early Stress signals (ESS) much before Account turns to SMA.

Thus, Technology has become a game changer in Credit Monitoring. It is aided and abetting the bankers to walk the extra mile to improve the quality of assets and to nip the problems in the bud itself. It is our Bank, which is generating PSA Data. not only in MSME but also in Retail & Agriculture.

9. Centralised outbound call centre, dispatch of overdue notices & Bulk SMS & e-mails for stressed borrowers.

It is said that, if the changes outside are more than the changes inside, than it becomes difficult to survive. To adapt to the lightning changes in technologies we have to be more brisk in implementing it in the use of Credit Monitoring and provide the Banks a sound life.

Mohammad Faisal
R.O. Vijayawada





क्या ऋण अनुश्रवण : समय की मांग है?

जैसा कि सभी बैंकर जानते हैं कि किसी इकाई को ऋण वितरण करना, सम्पूर्ण क्रेडिट प्रबंधन की प्रक्रिया का एक पहलू है और उसकी उत्पादकता बनाये रखने के लिए इसके अनेक पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक भी है और आज की जरूरत भी है. इन पहलुओं में से एक है अनुश्रवण अर्थात् मॉनिटरिंग. आज जबकि हमारी अनुत्पादक आस्तियों में लगातार वृद्धि हो रही है और साथ ही बैंक के उधारकर्ता हमसे ज्यादा जागरूक हो रहे हैं. इसीलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उधार खातों के अनुश्रवण की जरूरत बैंक को पहले से ज्यादा महसूस हो रही है. यही नहीं, यदि हमें हमारे आस्तियों की गुणवत्ता बनाये रखनी है तो यह और भी आवश्यक है कि उधार खातों की तरफ हमें संजीदगी से ध्यान देना होगा और अनुश्रवण प्रक्रिया के प्रति हमें ज्यादा गंभीरता अपनानी होगी.

1. मॉनिटरिंग (अनुश्रवण) के उद्देश्य:

क. सर्वप्रथम, ऋण वितरण की स्वीकृति नियम एवं शर्तों के अनुरूप सुनिश्चित करना.

ख. यह भी सुनिश्चित करना कि ऋण वितरण में बैंक के किसी भी नियम अथवा प्रक्रिया का उल्लंघन नहीं हुआ है और ऋण का उपयोग उसी कार्य के लिए किया गया है, जिसके लिए वह स्वीकृत किया गया था.

ग. सुनिश्चित करते रहना कि ऋण खाता अनुत्पादक श्रेणी में पदावनत न हो.

घ. सुनिश्चित करना कि ऋण खाता मानक श्रेणी में भी दबावग्रस्तता से मुक्त (स्ट्रेस-फ्री) रहे.

च. सुनिश्चित करना कि कम से कम ऋण खाते अवमानक श्रेणी में जाएं.

उक्त पृष्ठभूमि में यह जानना अति आवश्यक है कि वे कौन से टूल्स हैं जो इस कार्य के लिए आवश्यक हैं और उनके उपयोग से अनुश्रवण की प्रक्रिया पर कैसे प्रभावी नियंत्रण रखा जा सकता है. साथ ही इस प्रभावी नियंत्रण से कैसे हमारी आस्तियों की गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है और साथ ही कैसे हमारे उधारकर्ताओं पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सकता है.

जिस प्रकार ऋण खातों का अनुश्रवण एक सतत प्रक्रिया है, जिसे शाखाओं द्वारा सही परिप्रेक्ष्य में किये जाने की आवश्यकता है, उसी तरह सम्बंधित नियंत्रक कार्यालयों द्वारा शाखाओं का अनुश्रवण किया जाना भी आवश्यक है. शाखाओं में ऋण अनुश्रवण सम्बंधित दौरे, नियंत्रक कार्यालयों जैसे क्षेत्रीय कार्यालय/क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय के हाथों में, शाखा की प्रक्रिया का आंकलन करने के साथ-साथ ऋण मंजूरी, दस्तावेजीकरण एवं संवितरण सहित आस्ति के संवर्ग की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. ऐसे दौरे नियंत्रक कार्यालय को शाखा की दबावग्रस्त आस्तियों का मूल्यांकन करने और जहाँ भी कोई कमी दिखाई दे, वहाँ सुधार के लिए यथास्थान आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने का बेहतरीन अवसर देते हैं.

इसीलिए एक क्रेडिट अधिकारी के लिए यह जानना और समझना अत्यंत जरूरी है कि वे कौन से टूल्स हैं जिनकी मदद से हम यह कार्य संपन्न कर सकते हैं. ये टूल्स निम्नानुसार हैं:

2. शाखा स्तर पर मॉनिटरिंग:

क. ऋण वितरण पश्चात् निरीक्षण.

ख. निर्धारित समय-सीमा में स्टॉक एवं

उधारों का विवरण प्राप्त करना और उसका विवेकपूर्ण विश्लेषण.

ग. जहाँ आवश्यक हो, उन मामलों में, मासिक नकदी बजट का प्रस्तुतीकरण.

घ. समयावधि में कारोबारी स्थल, स्टॉक और उधारी तथा कारोबार की स्थिति का निरीक्षण. (Q-4 रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण एवं उनका अध्ययन)

च. जहाँ आवश्यक हो, बाहरी एजेंसी से स्टॉक का निरीक्षण करवाना.

छ. ऋण खातों में किये जा रहे लेन-देन के औचित्य की निगरानी.

ज. फैक्ट्री निरीक्षण एवं तकनीकी अधिकारी द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण और उसका विवेकपूर्ण विश्लेषण.

झ. समवर्ती ऑडिट रिपोर्ट एवं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट (QPR). चुनिंदा मासिक ऑपरेशनल डाटा (MSOD) व ऑडिटेड/प्रोविजनल वित्तीय विवरण.

ट. प्रमोटर्स/गारंटर्स पर अन्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों की विपरीत रिपोर्ट या न्यूज पेपर्स/बाजार की विपरीत खबरें.

ठ. कंपनी में दाखिल की गयी वार्षिक रिपोर्ट/सिबिल रिपोर्ट.

ड. जीएसटी टैक्स प्राधिकारियों को दाखिल किये गए विवरणों की प्रतियां.

ढ. उक्त सभी प्राप्त रिपोर्ट्स का विवेकपूर्ण विश्लेषण.

उक्त सभी टूल्स अलग-अलग तरीके से क्या सिग्नल देते हैं और हमें उनकी जरूरत क्यों है, यह समझने के लिए बैंक के एक अधिकारी को क्रेडिट विभाग में कार्य करने के पर्याप्त

अनुभव की जरूरत होती है, ताकि वह ऋण विभाग के विभिन्न पहलुओं को जान और समझ सके और उक्त टूल्स की उपयुक्तता को समझ सके.

उपर्युक्त समस्त टूल्स का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए हम हमारे ऋण खातों का बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं. साथ ही साथ बैंक के कॉर्पोरेट कार्यालय के दिशानिर्देशों के मद्देनज़र हमारे नियंत्रक कार्यालयों द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार शाखाओं द्वारा समयबद्ध रूप से की जाने वाली रिपोर्टिंग भी ऋणों के अनुश्रवण में अत्यधिक मददगार साबित होती है. इन रिपोर्टिंग के आधार पर नियंत्रक कार्यालय ऋण विभाग के प्रभावी प्रबंधन हेतु शाखाओं को समुचित सलाह दे सकते हैं.

3. उधार खातों के अनुश्रवण की जरूरत क्यों है? अनुश्रवण की महत्ता: आज की परिस्थितियों में यह अत्यधिक आवश्यक हो गया है कि हम अपने सीमित साधनों की उत्पादकता बनाये रखें और साथ ही उन्हें सुरक्षित भी रखें. अतः यह कवायद बैंक और उधारकर्ता दोनों के हित में है. इस कार्य से जहाँ एक ओर बैंक का निवेश सुरक्षित रहता है वहीं दूसरी ओर हमारी निधियों की उत्पादकता की गुणवत्ता और लम्बे समय तक उसकी लाभप्रदता को सुनिश्चित किया जाना संभव हो पाता है.

भारत सरकार और रिजर्व बैंक की बाध्यताओं के तहत बैंकों के लिए सांविधिक जरूरतों को पूरा करना भी आवश्यक है. क्रेडिट जोखिम प्रबंधन उनमें से एक है. अतः मॉनिटरिंग की कवायद इस जरूरत को पूरा करने में भी मदद करती है. यही नहीं, यदि मॉनिटरिंग की कमियों के फलस्वरूप, ऋणों से बैंक को हानि पहुँचने की संभावना बनती है, तो हम हमारे शेयर-होल्डर के प्रति भी उत्तरदायी बनते हैं और बाज़ार में हमारी छवि खराब होने की परिस्थितियां बनती हैं.

अतः आज की परिस्थितियों में ऋणों के मॉनिटरिंग की कवायद ना सिर्फ हमारी सामयिक जरूरत है, बल्कि बैंक की छवि को बनाये रखने एवं उसमें सतत उन्नयन हेतु, तथा हमारे उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु यह बैंक के लिए एक अति आवश्यक एवं अविरल कार्य है.

आज की परिस्थितियों में, ऋण अनुश्रवण की बढ़ती हुई महत्ता के मद्देनज़र, बैंक के युवा अधिकारियों को इस कार्य को चुनौती मानते हुए इसे आगे बढ़कर अपनाना चाहिए और इस कार्य में अनुभव प्राप्त करते हुए निपुणता प्राप्त करनी चाहिए. गौरतलब है कि ज्यादातर अधिकारी ऋण विभाग के कार्य को अत्यंत जोखिम भरा मानते हुए इस विभाग में आने और सम्बंधित कार्य करने से घबराते हैं. यह अत्यंत निराशाजनक रवैया है. किसी भी कार्य को लगातार करते और सीखते रहने का अनुभव ही व्यक्ति को निपुणता प्रदान करता है. अतः इस लेख के माध्यम से हमारे युवा अधिकारियों से भी आग्रह है कि वे आगे आकर इस कार्य में अपने को सहभागी बनायें और अपने बैंक कैरियर में निखार लाएं.

सुतापा सिन्हा
स्टा.प्र.के. भुवनेश्वर



Resolution of Stressed assets



Indian banking Industry is facing challenges due to increase in stressed assets. Asset of the banking system comprises of loans given and investment made by banks. Quality of the assets indicates how much of the loans taken by the borrowers are repaid in the form of interests and principal. The most important scale of stress asset quality is NPA. An NPA means interest or principal is not repaid by the borrower during a specified period of time. So bad assets are classified into substandard asset, doubtful asset and loss asset depending upon how long a loan remains as an NPA.

NPA alone doesn't tell the whole story of the bad asset quality of loans given by banks. Some of the loans are restructured by bank by giving a further opportunity to the borrowers if they default, in the form of an extended time period for repayment and a reduced interest rate. So we can say it is **PSA+SMA+NPA+Write off Accounts**.

In case of default in repayment of dues of ₹ 1 lac or more by the corporate borrower, Creditor can file an application before NCLT for insolvency resolution process. Similarly, insolvency resolution process can be started by any other creditor including sundry/trade creditors if the default

of the company is ₹ 1 lac or more. IBC Process involves restructuring of entire debts of the company under Resolution Plan by the majority of creditors.

Timeline for Resolution Plan process and approval by creditors are 180 days from the date of admission of petition. During this period none of the bank, and other creditors can take legal action against the company for recovery of dues, the period of 180 days can be extended by another 90 days.

If creditors do not agree and approved Restructuring/ Resolution plan of debts of company within 270 days, then NCLT will order liquidation of the company. Liquidation of company involves sale of all assets of the company and distribute the sale proceeds to all creditors.

- IBC 2016 is consolidated law relating reorganization/ restructuring, insolvency and winding up/dissolution of companies, partnership firms and individuals.
- It provides detail legal framework for winding up and dissolution for companies, bankruptcy of firms and individuals in all cases where the entities/persons are not solvent.
- It provides legal rights to banks and other creditors .It is apart from legal rights available exclusively to banks under DRT and SARFAESI Act.
- Entire process of insolvency and liquidation will be managed by professionals known as Insolvency Resolution Professional (IRP).
- IRPs are licensed by Insolvency and Bankruptcy Board of India (IBBI), a government regulatory body set up under IBC.
- IRPs are subject to supervision of NCLT and NCLAT with respect to specific cases of insolvency and liquidation handled by them and subject to code of conduct prescribed by IBBP.

Lenders will now have to work out a resolution plan individuals, effective default failing which the account would be referred to the bankruptcy courts. RBI will be structural streamlining, standardizing and harmonizing of

the resolution process for greater transparency, credibility and efficiency. Time line for Resolution plan is as follows

| | |
|--|---------|
| Admission of application | Day 0 |
| NCLT to appoint IRP | Day 14 |
| Public announcements | Day 17 |
| Appoint 2 registered valuers to calculate liquidation value | Day 21 |
| Submission of proof of claims | Day 28 |
| Verification of claims by IRP | Day 35 |
| IRP to constitute COC and file a report | Day 44 |
| Convene and hold 1st COC meeting And Appointment of resolution professional | 51 day |
| Preparation of complete IM | 65 day |
| Submission of resolution plan | 150 day |
| COC approval of resolution plan | |
| Approval of resolution plan by NCLT | 180 day |

The RBI has asked lenders to report credit Information, including classification of an account as special mention account (SMA) to Central Repository of Information on Large credits (CRILC) on all borrowers having an aggregate exposure of ₹ 5 Cr and above. The lenders will have to report to CRILC, all borrower entities in default on a weekly basis at the close of the business on every Friday or the preceding working day if Friday to be a holiday.

RBI has asked all lenders to put in place a policy for Resolution of stressed Assets encapsulating that a resolution plan be scripted immediately after the default.

RBI is establishing an ecosystem where NPA would get recognized on time and their resolutions are implemented quicker than before.

Hence, more than a regulation activity, Bankers need to adopt Resolution mechanism.

Since the stress asset qualities of banks are near their peak, Resolution plan will improve asset quality and A consequently balance sheet of bank.



Prabhat Singh Suman
STC Bhubaneswar

शुभमस्तु



श्री पंकज शर्मा
महाप्रबंधक



श्री आर. गणेशन
उप महाप्रबंधक



श्रीमती राजश्री बगलरी
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

शिखर की ओर



उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री वी.वी. टेम्भुर्णे
महाप्रबंधक



श्री कल्याण कुमार
महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

Sportingly Yours



श्री अनिकेत जायसवाल, शाखा प्रमुख, खराड़ी शाखा, पुणे ने दिनांक 18 से 20 जनवरी, 2019 के दौरान खराड़ी, पुणे में आयोजित 'तृतीय ओपन राष्ट्रीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2019' के 'सीनियर 85 बाईज़ श्रेणी' में हिस्सा लेते हुए तृतीय स्थान के साथ ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया.



स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 09 फरवरी, 2019 को आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता की विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान करते हुए प्राचार्य, श्री कल्याण कुमार.



Ms. Sarita Gokarn, SWO-B, Kabir Chaura Branch, Varanasi has become the Uttar Pradesh State Veterans' Table Tennis Champion in the 'Shri H. B. Lakhtakia Memorial U.P. State Veterans (Above 50) Table Tennis Championship Tournament' held in Prayagraj on 8-9 December 2018, Ms. Sarita became the number one Veteran! The Trophy was presented by Dr. Sundeep Lakhtakia, son of Shri H. B. Lakhtakia. Ms. Gokarn is also the hon. sports secretary for T. T. of Varanasi district and a T. T. selector for the Uttar Pradesh state.

DUE DILIGENCE

Whether only for Our Borrower or also for Debtors & Creditors of Borrowers

Introduction

Function of a Branch is not only to increase the volume of assets but also to keep them secure and in the performing category. In the wake of deteriorating asset quality in the banking system, which is hovering at record high, it is very important to strengthen due diligence, credit appraisal and post sanction loan systems to minimize and mitigate the problems of increasing NPA.

Meaning and importance

Due diligence is nothing but verification of facts and figures before considering a proposal either for credit facility or for opening an account or for entering any transactions. It is the process of examining all the material facts, financial, legal & compliance aspects of the borrower and guarantor also.

Due diligence to be carried on

- i. Party (Borrower, co-borrower & guarantor on 5 Cs i.e. character, capacity, capital, collateral & condition)
- ii. Property (value, ownership, possession, marketability, ascertainability, stability and transferability)
- iii. Activity/Business & Ability to repay loan
- iv. Confidential opinion given by other Bankers

Steps involved in due diligence

Though there are no certain rules/guidelines to follow the steps

chronologically but the following steps are required:

1) Selection of borrower/Interview with applicant: The first and foremost duty is to select good borrower

- i. Study the application and framing of proper questions before conducting an interview
- ii. No emotions, no sentiments. Be professional
- iii. Listen to the borrower carefully
- iv. Extract maximum information
- v. Assess credit worthiness of customer

Various due diligence tools are available to verify the genuineness of the information submitted on the borrower / guarantor. Some of these tools are

- CIBIL reports & CIBIL MORTGAGE CHECK report from the central electronic data base of CIBIL.
- CRILC (Central Repository of Information on Large Credits) for cross checking of credit data to lenders having aggregate fund based and non-fund based exposure of ₹ 5 crores and above and SMA status.
- Central Fraud Registry
- Ministry of Corporate Affairs (MCA) website: In cases of companies, it is mandatory to compare the balance sheet, profit & loss a/c filed along with application with the Balance Sheet, P&L filed with MCA website.

- CERSAI (Central Registry of Securitization Asset Reconstruction and Security Interest) is a central online security interest registry of India to check frauds in lending against equitable mortgages.
- ECGC (Export Credit Guarantee Corporation) SAL (Specific Approval List)
- List of Defaulters (Non-Suit Filed a/cs) of ₹ 1 crore & above
- List of Defaulters (Suit –Filed)
- List of Wilful Defaulters declared by Bank
- List of Wilful Defaulters (non-Suit Filed a/cs) of ₹ 25 lakhs & above
- List of Wilful Defaulters (Suit-Filed)

As per RBI Guidelines, Enhanced Due Diligence (EDD) needs to be undertaken for all the high risk customers of a bank. EDD is the combination of Know Your Customer (KYC), Know Your Customer Business (KYC-B) and Know Your Customer/s Business Risks (KYC-BR). So EDD=KYC + KYC-B + KYC-BR.

2) Industry research report: Industry reports compiled by professional agencies like CRISINFAC (a subsidiary of CRISIL) should be referred to. It is supported by various industry experts, industry associations and trade channels web-based platform, which helps regarding lending, investment and strategic decisions.

3) Market enquiries: Proper market enquiries about the bonafides/ antecedents of the borrower firm should be made before the connection is entertained from various sources as under:

- a. Bomons Our Existing customers
- b. Customers, suppliers, employees of the bomons.
- c. Competitors
- d. Govt. departments

- e. Media & Rating agencies
- f. Staff of Bank
- g. Old record of Branch etc.

Contact Point Verification (CPV) is introduced by banks to strengthen the process of due diligence and to improve the Turnaround Time (TAT) for retail loan proposals.

4) Scrutiny of financial statements:

In case of new connections as well the existing customers, this scrutiny can be achieved through

- a. Online verification of PAN, GST details
- b. The financials of the main company and its major associate / sister concerns should be reviewed.
- c. Scrutiny of IT returns/GST returns, assessment orders.
- d. Searches in the book of the ROC with regard to charges created
- e. All unusual transactions, heavy cash deposits & withdrawals without justifiable reasons should be properly scrutinized.
- f. In cash credit limit, it is very important to know whether the borrower is having unsecured creditors, age wise creditors, repaying patterns and arriving at the exact quantum of working capital gap.
- g. In case of term loan, the unsecured creditors are needed to be reimbursed as per the project so there is stringent due diligence of creditors is required.
- h. Prior to taking decision, leverage ratio of borrower has to be assessed. Highly leverage ratio refers to more quantum of unsecured creditors. The borrower has to repay the bank and unsecured liability also to be considered.

5) Pre-sanction inspection:

- a. Verification of unit location, office and residential address and security (primary/collateral)

should be inspected.

- b. Details of present borrowing from money lenders, co-operative society, commercial banks and means of the applicant / co-applicant / guarantor should be verified.
- c. Verification of genuineness of sale agreement entered into, background of builder, cross checking of title deed, search report, valuation of the property.
- d. Present and future source of income, whether he is in a position to discharge the financial obligation as and when required. A look into the past, an assessment of present & a peep into the future.
- e. Assessment of man, money, machine, market and material.

6) Credit rating: If the loan amount is more than ₹ 2 lakhs, there should be either scoring in retail & agriculture loans or rating in other loans is required. It helps in measuring and pricing the credit risk, frequency of review/renewal and providing triggers for action on portfolio management.

7) Take over norms: In case of 'Take-over' accounts, adherence to 'Take-over Norms' should be ensured and discussed in the credit proposal.

8) Banking arrangements: Present Banking arrangements of the new connections i.e. existing Bankers, nature of banking (sole/multiple/consortium) should be taken note of. Banks may obtain declaration from the borrowers about the credit facilities already enjoyed by them from other banks in the format prescribed & can be claimed in CIBIL.

9) During disbursement: The loan should be disbursed only

after obtaining the necessary documents. In case of demands or term loan facilities, direct payment can be made to the suppliers of machinery and equipment. In case of accounts such as overdraft and cash credits, the account should be scrutinized to ascertain that the funds are utilized for the business purpose only. Cash withdrawals should be discouraged.

10) Post disbursement: Prompt and effective post-sanction inspection should be carried out to ensure the end use of funds. Periodically the unit and the securities charged to the bank should be verified physically and the borrower should comply as per stipulated terms and conditions. Periodic scrutiny of cash credit accounts is necessary to ascertain as to whom the payments are made and to enable a banker to detect diversion of funds immediately.

11) Due Diligence of credits and debits of our borrower as explained above in para 1,2 & 3, in today's banking scenario, important aspect is to conduct due diligence of Borrower.

Conclusion:

Due diligence is a continuous process. Proper, scientific, professional, systematic and continuous monitoring and follow up should be carried out. Early symptoms of potential sickness should be identified and appropriate actions need to be initiated. Many problems relating to contaminated portfolio could be avoided if due diligence and monitoring of the unit is done in a structured manner.



Alekh Kumar Sahoo
STC Bhubaneswar

Vijay Shewale

Ban'King' with sound & touch



Friends, you all agree that we surrender even to a small failure in our lives and get disheartened easily. But there are a few fighters who never give up but carve out their own niche against all odds. Meet one such personality amongst us - **Mr. Vijay Dattatraya Shewale**, Assistant Manager at Regional Office Nasik. With the qualification of BA, D.Ed and B.Ed. to his credit, this blind youngster joined our Bank in 2017 as a Probationary Officer in the Credit Monitoring Dept. Coming from a big, yet supportive joint happy family of twelve, where his Father is a retired Senior Manager while mother and wife leading the home front, Vijay is blessed with two kids - Hitesh (8 yrs) and Mahi (10 months) - his stress busters! As a kid, he grew up with a dream of becoming a sports-person, be it football or athletics. He was excellent in every outdoor sport and a bunch of certificates prove it. Unfortunately, due to his diminishing visibility, he had to forego sports. However, he never ever gave up but found out a way, though tough, through audio books and tech aids to upgrade his knowledge and completed his graduation and is now also helping his peers in the society to stand tall instead of living at the mercy of others. This fighting soul is also interested in swing trading, numerology and listening to audio books. He is grateful to his Regional Head, Dr. Ajit Marathe who always motivates him and instills positive energy to perform while his Dy. Regional Head, Mr. PVJN Murthy never loses an opportunity of discussing with him regarding various monitoring tools etc. of the Bank. He is proud of his seniors and colleagues like Mr. Milind Joshi and Mr. Pradeep Kulkarni. During such a short stint, he has earned admirations from his Regional Head and Dy. Regional Head.

A Region gets its unique and character from the employees who work in it. I am fully amazed with this fighting spirit and tenacity of this differently abled officer. He is no less than an able bodied person. I firmly believe that Mr. Vijay Shewale can contribute and rise in the hierarchy to benefit both him and the organization. I wish him all the best in his world of sound and touch.

Dr. Ajit Marathe, Regional Head, Nasik

Mr. Vijay Shewale is very sincere and dedicated person. He is better than a fully able person. I wish him good luck in official and as well as personal life.

P.V.J.N. Murthy, Dy. Regional Head, Nasik

He aspires to be a performing quality asset for our Bank. Here, in this short dialogue with Mrs. Supriya Nadkarni, this braveheart reveals his life story for our readers.

• Tell us about your disability.

I have this rare disorder "Retinitis Pigmentosa" (Visual impairment). In layman's words it is an abnormal yet gradual death of the retinal cells, leading to black spots on the retina & hence the name.

• Please detail us about the hurdles in your educational journey from a school kid to Graduation.

As a curious kid, I was keenly interested in studies. I used to wear thick glasses (high number) since childhood as I faced difficulty in reading clearly. This kept shifting my focus away from studies. Despite this, I managed to pass SSC and HSC exams. After HSC, I started losing my vision drastically. My father left no stone unturned for my treatment, be it of any streams viz. Allopathic, Ayurvedic, and homeopathic, that too in different hospitals all over the country. But to my bad luck, none of these treatments helped. During my struggle for a few years, I came to know that this is not an end, even blind person can pursue higher education with the help of audio books and scribe. Using such tech facilities, I completed B.A, D.Ed & B.Ed and even learnt a few programming languages like C, C++, Java and Advanced Java using screen-reading tools. The journey was challenging and full of struggles.

• What is the function of Credit, its purpose and importance?

Credit is a trust which allows one party to provide funds or other resources to another party wherein the second party promises to repay those resources at a later date on a decided price. Credit is required for different purposes and by all sectors of the economy. Hence, there is a need for its proper allocation between different sectors and uses if the society has to achieve its objectives.

• What are the objectives of the credit management?

It is the process of monitoring and collecting payments from customers. A good credit management system minimizes the amount of capital tied up with loan book and is very important for efficient cash flow. Banks, therefore, need to follow these principles of lending capital - liquidity, safety, diversity, stability and profitability.

• How do OMC alert and other tools affect the growth of bank?

OMC alert is an early alert system for the branches for initiating necessary and timely corrective action with systematic approach. There are certain tools of monitoring of loan accounts viz: 1) Submission of Monthly Monitoring Reports (MMR):- Every branch has to submit MMRs of those loan accounts having Limit of ₹50.00 lakhs & above. MMRs portray full information/current status of that particular loan account; 2) Submission of BMDP (M-27):- Branch has to report newly sanctioned loan accounts on monthly basis through this statement, along with the loan accounts reviewed/ renewed in that particular month. The statement is supported by the copies of Sanction Advices of all newly sanctioned loan accounts & copies of Process Notes of Loan

accounts having limit of 10.00 Lakhs & above. This statement is scrutinized at RO level; 3) Generation of F-1 (fortnightly) statement at RO level :- This reveals present status of Excess Over Limit (EOL) or Over Draft (OD) granted in loans, especially all types of CC/OD accounts. Term loans are also reported here wherein excess amount is outstanding due to application of monthly interest; 4) Review/Renewals of Loan Accounts: Timely review/renewals of all types of loan accounts has vital importance. All loan accounts are to be reviewed/renewed every year. If the renewal of running accounts i. e. CC/OD accounts is not done for more than 180 days, it becomes NPA. If any discrepancy is found while review/renewal of an account, corrective steps can be initiated promptly. All these statements are scrutinized at RO and any discrepancy found in any of the loan accounts, is pointed out to branches immediately and followed up for rectification. Through scrutiny, we can immediately rectify the irregularities in documentation, securities, repayment of loan, etc. and thus save these accounts slipping into stressed category or Non Performing Asset. From the turnover figures of the account, we can properly assess the limit requirement of borrowers.

• How does your tech-savvy nature help you in overcoming your disability? Are you acquainted with CMRD Web Portal?

With the help of screen reading software, I am comfortably self-reliant to handle computers and cell phones like normal people. Curiosity to learn new things helped me a lot to groom my tech-savvy nature. But I still face challenges and need support when visuals/printed articles are involved. I use CMRD Web Portal extensively. Features here are accessible using the screen reader, thus helping me in monitoring all the tools at one place.

• Your experience while using the old 'Fin-7' & new upgraded version 'Fin-10'?

I operate the computer with 'JAWS' (the screen reading software) which supports only 10-20% of 'Fin-7' menu. For rest of the operations, I am totally dependent on others. On the other hand, 'Fin-10' is truly awesome as 'JAWS' support here has increased to 70-80%, thereby drastically reducing my dependency on others for daily work. Thanks to my colleagues, Rahul and Jitendra from the RCC team, who are very helpful in resolving any software or hardware issues on immediate basis.

• Your views on our traditional society.

Our society still needs to mature, understand and empathize with poor or disabled. It is true that they are different. People who seem to stay away from poor or disabled people are mostly disrespectful towards them. There are also a few people who keep no stone unturned to help others, like some NGO's and social activists who dedicate their entire life for making our world a better place to live in.

• How do you motivate others to help the needy people?

It truly gives solace to our heart when we selflessly help someone in need. It does not matter how much we earn or how luxuriously we live, what matters is the inner peace and the feeling of bringing a positive change in the people around you. I usually share such thoughts with people



around me and I believe that it inspires them.

• How do your family and friends help you in your endeavours?

I am very happy that my friends and family members treat me as a normal person without giving any special treatment (sympathy) for a disabled person. They have always motivated me to challenge my own limits. This not only increases my confidence but also challenges me to become better.

• It is a fact that praises and brickbats go hand in hand. How you handle such situations?

Usually we tend to forget the praise and remember the criticism. Personally, I try taking criticism positively and if it still doesn't seem logical to me, I rather prefer to ignore it with a smile. It works very well for me.

• How were you introduced to 'Numerology'? How numbers amuse you?

I had a great interest in maths. Out of curiosity, I searched for details on Numerology to understand how it works and this amused me greatly. For me, numbers are not just plain numbers, they hold a kind of magic and we can draw some logical inference when they are attached with anything.

• Who are your idols in the life?

My father, Mr. Dattatray Shewale and the other one is the chairman and largest shareholder of Berkshire Hathaway Mr. Warren Buffet who has been referred to as the 'Wizard', 'Oracle' or 'Sage' of Omaha by global media outlets. He is noted for his adherence to value investing and for his personal frugality despite his immense wealth - these two are my idols.

• Any message to our readers especially youngsters.

To youngsters, I appeal - we must understand the purpose of our life and push ourselves to achieve that aim. There will be multiple challenges and hurdles on this path that not only make us a better person but also give us lesson for lifetime. Especially, in down times, do keep faith in yourself and in God. Believe me, when one chapter is closed, a new one begins.

'Union Dhara' wishes him all the Best in his future banking endeavours!



Supriya Nadkarni
Union Dhara, C.O.

मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट – उचित अनुश्रवण का आधार

बीते दिनों में 'महत्त्वहीन' शब्द इस लेख के शीर्षक का पर्यायवाची बना रहा, अतः यह कहें कि इस मूल्यवान अनुश्रवण उपकरण का उपयोग हमारे द्वारा बिल्कुल नगण्य रहा, जो कि केवल एक गंभीर ही नहीं, चिंता का विषय भी है।

वर्तमान में भी इस अनुश्रवण उपकरण को हम में से कई अधिकारी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं जो कि एक गंभीर परिस्थिति का आगाज़ है। वक़्त रहते अगर हम सभी जागे नहीं तो वो दिन दूर नहीं जब हम इस उपकरण के फायदे बिल्कुल भूल जाएंगे एवं इसे नजर अंदाज करने से उत्पन्न कठिनाईयों का सामना हमें करना पड़ सकता है।

आईए, पहले इस मूल्यवान अनुश्रवण उपकरण के फायदे जाने या फिर यूँ कहें कि शीर्षक को समझें।

मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट शाखाओं द्वारा लैस में विभिन्न उच्च कार्यालयों को भेजा जाता है जो खातों में चल रही अनियमितताएँ, देख कर शाखा को आगाह करती हैं। चूंकि हम सब जानते हैं कि शाखा में कर्मचारी कभी कभार अत्यधिक कार्य के चलते खातों का अनुश्रवण नहीं कर पाते, जिसके चलते खाते में चल रही अनियमितताएँ विकराल रूप धारण कर लेती हैं और अंततः खाता हमारे लिए सिरदर्द बन जाता है। सीधे शब्दों में कहें तो खाता गैर निष्पादित आस्ति का रूप धारण कर बैंक की सफलता में रोड़ा बन जाता है।

इस समस्या से बचने के लिए यह उपकरण काफी फायदेमंद साबित होता है क्योंकि इसमें खाते से जुड़ी कई जानकारी उपलब्ध रहती है। जैसे कि खाते में क्रेडिट मूल्यांकन का चलन, नवीनीकरण संबंधी जानकारी, खाते में

लेन-देन संबंधी जानकारी, लेखा परीक्षा की टिप्पणी एवं अन्य कई जानकारी। यदि इस जानकारी का समयपूर्वक अनुश्रवण कर खाते की अनियमितताएँ शाखा को बता दी जाए तो समय रहते खाते को सुधारा जा सकता है। यह सब करने के लिए जरूरी है कि हम सब मिलकर यह निश्चय करें कि मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट का समयपूर्व आंकलन कर शाखा को खातों की अनियमितताओं से आगाह कराएँ।

कई शाखाएं ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट भेजती नहीं है या समयपूर्वक नहीं भेजती हैं। यदि भेज भी देती हैं। तो रिपोर्ट आधी अधूरी भरी रहती है जिसका कोई औचित्य नहीं है बल्कि ऐसी रिपोर्ट भविष्य में हमारे गले का फंदा भी बन सकती है क्योंकि वर्तमान में नियामकों द्वारा किए गए विभिन्न निरीक्षणों में मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट का आंकलन किया गया है, जिसमें बीते कई पुराने समय की मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट का आंकलन भी शामिल है। यह सब हमें इस रिपोर्ट के महत्त्व के बारे में बताता है।

इस कार्य को अति सुगम बनाते हुये वर्तमान सीएमआरडी महाप्रबन्धक के अथक प्रयासों से सीएमआरडी वेब पोर्टल आरम्भ हुआ। जिसमें कई बिखरे हुये महत्वपूर्ण रिपोर्ट एवं डाटा को एकत्रित किया गया है। यह इतना सुविधाजनक है कि कोई भी अधिकारी किसी भी कार्यालय से अपने अधीन शाखाओं एवं कार्यालयों के विभिन्न रिपोर्टों का आंकलन एक ही जगह से कर सकता है और उसे किसी अन्य कार्यालय पर निर्भर भी नहीं रहना पड़ता है।

वेब पोर्टल में हमें मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट का पूर्ण कच्चा चिट्ठा मिल जाता है।

वेब पोर्टल से हमें ना सिर्फ मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट के योग्य खातों की संख्या मिलती है बल्कि इसकी सिलसिलेवार जानकारी भी उपलब्ध रहती है। बस, अब जरूरत है तो हमारे अथक प्रयासों की! हम यह गाँठ बांध लें कि हर माह के एमसीएमआर योग्य खातों की सूची वेब पोर्टल से निकाल कर पूर्ण रूप से भर कर समयपूर्व भेजें तथा प्राधिकृत अधिकारी द्वारा समयपूर्व अवलोकन कर शाखा को भी अवगत कराएँ। मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट शाखा द्वारा भेजी जाती है परंतु उच्च कार्यालयों में पदस्थ अनुश्रवण अधिकारियों की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वे रिपोर्ट को समयपूर्वक मँगवाएँ।

यकीन मानिए, यह उपकरण लंबे समय के लिए लाभदायक साबित होगा। यह करके ना सिर्फ हम अपने कार्य को न्यायोचित करेंगे बल्कि परिणामस्वरूप हम अपने बैंक के तनावपूर्ण खातों में भी कटौती करने में सही साबित होंगे। अंततः शीर्षक को समाप्त करते हुये यही कहूँगा कि शाखा में खोला गया हर एक खाता एक नव रोपित पौधे के समान होता है जिसे समय-समय पर अनुश्रवण रूपी जल एवं निरीक्षण रूपी खाद की जरूरत रहती है। तभी यह पौधा समय आने पर फलरूपी वृक्ष बनेगा और इसके फलों का उपभोग ना सिर्फ उपभोक्ता करेगा बल्कि हमारा बैंक भी करेगा और ऐसे बहुसंख्यक फलरूपी वृक्ष जब हमारे बैंक में उगेंगे तो ना सिर्फ हमारे बैंक का गौरव बढ़ेगा बल्कि हम भी गौरवान्वित महसूस करेंगे।

विकास सिंह रावत
के.का., मुम्बई



अनुश्रवण एक सतत प्रक्रिया है जो ऋण देने से पूर्व से शुरू होकर ऋण की अदायगी तक चलती रहती है। बैंक ऋण अनुश्रवण पालिसी बनाता है, जिसकी अनुपालना कर प्रत्येक कार्यालय एवं शाखा अपनी आस्तियों की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है। एन.पी.ए. खातों को कम कर सकते हैं और ब्याज की आय में वृद्धि कर सकते हैं। किसी भी खाते का एन.पी.ए. होना ना केवल उस ऋणी बल्कि बैंक के लिए भी खराब है। इससे बचने का एकमात्र उपाय खातों का सही अनुश्रवण है। ऋण की सुविधा के लिए इसे दो भागों में बांटा जा सकता है।

- * ऋण वितरण से पूर्व अनुश्रवण
- * ऋण वितरण के पश्चात अनुश्रवण

ऋण वितरण से पूर्व अनुश्रवण

ग्राहक से निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र लेना चाहिए, जहां तक संभव हो आवेदन पत्र ग्राहक से ही भरवाया जाए। आवेदन पत्र के साथ क्या-क्या दस्तावेज चाहिए इसकी एक लिस्ट बनाकर ग्राहक को बता दें कि आवेदन पत्र के साथ यह देना आवश्यक है। बार-बार ग्राहक से दस्तावेज मांगना समय की बर्बादी है तथा इससे ग्राहकों को असुविधा व असंतोष पैदा होता है। ग्राहक से व्यक्तिगत रूप से अवश्य मिलना चाहिए तथा इस दौरान ऋणी की व्यक्तिगत आवश्यकता, प्रोजेक्ट के लिए उसका अनुभव, योग्यता एवं उसकी नियत जानना आवश्यक है। ऋणी से मिलने के दौरान ऋणी के बारे में पूर्ण जानकारी आवश्यक प्राप्त करें। समुचित सावधानी के लिए ग्राहक की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति, व्यवसाय का अनुभव, बाजार में उसकी स्थिति के साथ इनकम टैक्स चालान तथा सिविल रिपोर्ट से संबंधित सूचनाएं एकत्रित की जाएँ।

गारंटर के संबंध में भी कार्यवाही करें तथा उसे उसके दायित्व को समझाएं। अन्य बैंकों से संबंध एवं खाते के विवरण का अध्ययन करें एवं अगर अन्य बैंकों से ऋण खाता हो तो संबंधित बैंक से क्रेडिट सूचना मंगवाएँ। ग्राहक के प्रोजेक्ट की जगह पर जाकर जांच करें। ऋण के लिए बंधक रखी जाने वाली स्थायी संपत्ति की जांच, स्थान पर जाकर करें एवं आसपास से सूचना एकत्रित करें। प्रस्तावित संपत्ति को CERS-1 में चेक करें कि उस पर किसी और का चार्ज तो नहीं है। प्रस्तावित संपत्ति की सर्च रिपोर्ट एवं वैल्यूएशन रिपोर्ट प्राप्त करें यदि सब कुछ सही है और प्रोजेक्ट व्यवहार्य है, ऋण स्वीकार किया जा सकता है या स्वीकृति हेतु भेजा जा सकता है। स्वीकृति ऋण के स्वीकृति पत्र में निहित शब्दों एवं परिस्थितियों से ऋणी को अवगत कराएं एवं स्वीकृति पत्र पर ऋणकर्ता तथा गारंटर की स्वीकृति पावती लें। स्वीकृति पत्र की शर्तों का पूर्णतया अनुपालन किया जाए। शहरी क्षेत्रों में ₹50,00,000 से अधिक और ग्रामीण शाखा में ₹10,00,000 से अधिक खुदरा ऋण एवं एक करोड़ से अधिक के सभी ऋणों के वितरण से पूर्व बैंक द्वारा नामित अधिकारी से सीपीए करवाएं। ऋण राशि द्वारा कोई मशीन या अन्य वाहन खरीदे जाने की स्थिति में प्रस्तुत कोटेशन का सत्यापन विक्रेता से बात करके अवश्य प्राप्त करें। डॉक्यूमेंटेशन के पश्चात बैंक के वकील से दस्तावेजों

ऋण अनुश्रवण

की जांच करवाएं। स्वीकृत ऋण राशि को ऋण के प्रकार के अनुसार वितरित करें एवं राशि का सही उपयोग होना सुनिश्चित करें।

ऋण वितरण के पश्चात अनुश्रवण

ऋण से क्रय की गई संपत्ति के मूल बिल वाउचर प्राप्त कर उसका सत्यापन करें तथा फाइल में लगाएं। खाते की निगरानी करते रहें कि खाता ओवर लिमिट तो नहीं हो रहा है तथा मासिक किस्त समय पर जमा की जा रही है और बार-बार चेक रिटर्न तो नहीं हो रहे हैं, खाता मॉकरन श्रेणी में तो नहीं आ रहा है। स्टॉक स्टेटमेंट सही समय पर प्रस्तुत किया जा रहा है। स्टॉक स्टेटमेंट में देनदारी के विवरण 90 दिनों से पुराने तो नहीं हैं, स्टॉक स्टेटमेंट से ही डीपी निर्धारित हो सकती है। खाते की समीक्षा नवीकरण समय पर की जाए। लेखा परीक्षक तुलन पत्र समय पर जमा किया जा रहा है। बिक्री कर, आयकर जमा संबंधित चालान तथा इंश्योरेंस की प्रति समय पर बैंक में जमा किए जा रहे हैं। शाखा की सीएमआरडी विभाग की विजिट में सहयोग दें। अगर ऋणी का खाता मॉकरन या दबावग्रस्त में आए तो खाते को उस श्रेणी से निकालने का पूरा प्रयास करें। ₹50 लाख से अधिक सभी खातों की मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रस्तुत की जानी चाहिए।

| ऋण सीमा | खाते के श्रेणी | रिपोर्ट प्रस्तुति समय |
|--|-----------------------------|--|
| ₹50 लाख और अधिक | दबावग्रस्त खाता | मासिक आधार पर |
| ₹50 लाख और अधिक | दबावग्रस्त सहित / रहित खाता | तिमाही आधार पर मार्च की रिपोर्ट मई में प्रस्तुत जून की रिपोर्ट अगस्त में प्रस्तुत सितम्बर की रिपोर्ट नवम्बर में प्रस्तुत दिसम्बर की रिपोर्ट फरवरी में प्रस्तुत |
| मासिक रिपोर्ट भेजने हेतु अधिकार क्षेत्र | | |
| ₹50 लाख से ₹2 करोड़ तक-ऋण अनुश्रवण विभाग-क्षेत्रीय कार्यालय | | |
| ₹2 करोड़ से ₹5 करोड़ तक- ऋण अनुश्रवण विभाग-क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय | | |
| ₹5 करोड़ से अधिक ऋण अनुश्रवण विभाग-केन्द्रीय कार्यालय | | |

दीपक कुमार
क्षे.का., करनाल



सफलता की कहानी

किसान क्रेडिट कार्ड - स्लिपेज की कहानी

यूनियन बैंक में मॉनिटरिंग रोज नये आयाम स्थापित कर रहा है. जब नये आयाम स्थापित होते हैं तो नये चैलेंज भी आते हैं. हम मॉनिटरिंग में रोजाना सफलता और असफलता का सामना करते हैं. कुछ सफलताएँ ऐसी होती हैं जो सुखद एहसास लेकर आती हैं.

एक बार हमें मालूम पड़ा कि किसी शाखा में रूपये चालीस लाख के दो किसान क्रेडिट कार्ड स्लिपेज की दहलीज पर खड़े हैं. 2015 के इन किसान क्रेडिट कार्ड में एक बार भी राशि नहीं आई है. बहुत बार प्रयास किया गया लेकिन कोई भी समाधान नहीं हो पा रहा था. आखिरकार एक और कोशिश की गई और हमने ग्राहकों से फिर से बात करने का फैसला किया. एक टीम का गठन किया गया और किसानों से मिलें. किसानों से पूछा गया कि आखिर क्यों उन्हें दिक्कत आ रही है. किसानों ने बताया कि सरकार ऋण माफ कर देगी. किसानों से बात करने पर हमने पाया कि वो किसान सम्पन्न परिवार से हैं. गांव में अच्छा रसूख रखते हैं. जमीन भी अच्छी खासी है और बच्चे भी विदेश में हैं. हमने उन्हें समझाया कि बैंक आपकी मदद के लिए हमेशा तत्पर है अगर आप अपने खाते सही चलाते हैं तो! हमने उन्हें समझाया कि हरियाणा एक सम्पन्न राज्य है और हरियाणा सरकार ने कभी भी कर्ज माफी नहीं की है और ना ही अभी कोई ऐसा आश्वासन दिया

गया है. हमने उन्हें यह भी बताया कि अगर किसानों की कर्ज माफी होती भी है तो सिर्फ छोटे ऋण माफ होते हैं या छोटे किसानों की कर्ज माफी होती है. फिर हमने उन्हें सिबिल और गांव में उनके सम्मान का भी हवाला दिया और उन्हें हमारे क्षेत्र प्रमुख से भी बात करने के लिए समझाया. क्षेत्र प्रमुख ने भी उन्हें बहुत अच्छे से बैंकिंग और अर्थव्यवस्था के बारे में समझाया. अगले दिन वो दोनों किसान शाखा में आये और क्षेत्र प्रमुख की मौजूदगी में एक ऋण पूरी तरह से बंद कर दिया और दूसरे खाते को भी एडजस्ट करके यूनियन बैंक आफ इंडिया की सराहना की. आगे से अपना ऋण समय पर एडजस्ट करने का वादा किया. इन दोनों ऋणों को बिल्कुल अंतिम क्षण में एडजस्ट होना एक सुखद एहसास लेकर आया. सबसे बड़ी बात वह गांव ऋण की समय पर चुकौती ना करने के लिए प्रसिद्ध हैं. पर हमने यह पाया कि बहुत बार उचित व्यवहार करने से और अच्छे से समझाने पर बात बन जाती है और बैंक की छवि किसानों के लिए उभर कर आती है. हमें भी इस बात का एहसास हुआ और किसानों ने भी इस बात को माना कि 'अच्छे लोग अच्छा बैंक'.

जितेश कोठारी
क्षे.का., करनाल



Reduction in Stressed assets in Delhi Zone

In the process of transformation and bringing certain reforms with specific reference to NPA accounts, RBI vide its circular dt.12.02.18 has brought revolutionary changes which has impacted the recovery in big ticket accounts. One of the issue, which has impacted the position is treating the default even for one day under Stress category which has accelerated the stress assets in relation to total assets.

Our bank has implemented the Resolution Plans in the month of October 2018 and the zone was intimated about the Stress category.

Visualizing the repercussions of the above changes, Delhi Zone proactively followed up mainly focusing on recovery of default amount under SMA-0 by sensitizing the field functionaries and also educated them through a various Web conference. We have also appraised the situation to the corporate office and requested them that the default of amount even for a day will have adverse impact on the Credit scores. Under the able mentorship of our FGM at Delhi, the field was motivated and moved aggressively to educate the stakeholders. In this direction, it will be in order to state that the big corporates have made good the default amount of one day, which has considerably improved the position of the bank.

It was strategically decided to curtail the slippages, since slippages will enhance the stress assets and increase the burden. Accordingly, corrective measures were adequately taken and more focus was extended for the accounts appearing under technical grounds under Mock Run. The Zone always maintained its slippages beyond the targeted level and also enhanced the recovery efforts. Due to these factors, the zone has made tremendous improvement in reducing the stressed assets.

Presently, the zone is focusing on restricting the stressed assets in single digit.

T. V. Balakrishna
FGMO Delhi



पीएसए (संभावित दबावग्रस्त आस्तियां)

बैंक की प्राथमिकता एनपीए की रोकथाम है। एक स्वस्थ खाता एनपीए के रूप में वर्गीकृत होने तक कई चरणों से गुजरता है और इसी प्रक्रिया में पीएसए जिसे पहले ईडब्ल्यूएस (पूर्व चेतावनी संकेत) कहा जाता था, का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

ऋण खातों में ईडब्ल्यूएस की ट्रेकिंग को एक अतिरिक्त कार्य के रूप में न देखकर, उसे ऋण अनुश्रवण की प्रक्रिया के साथ समन्वित किया जाना चाहिए, ताकि यह सतत गतिविधि बन सकें और ऋण खातों में संभावित ऋण अनियमितता के लिए सूचक का भी काम करे।

बैंक के संबंध में बात करें तो यह बैंक के एमएसएमई (₹10 लाख से अधिक) रिटेल एवं केसीसी पोर्टफोलियो से संबंध रखता है।

क्षे.का. भोपाल ने इस टूल का खूबसूरती से प्रयोग कर शाखाओं को सहयोग एवं मार्गदर्शन देते हुए जनवरी से अप्रैल-19 तक निरंतर प्रयास से पीएसए की कुल राशि को ₹75.36 करोड़ से कम कर मई-19 में ₹40.03 करोड़ कर दी है। पीएसए वर्गीकृत खातों की गति पर नजर डाले तो कुल 125 खातों में राशि ₹121.83 करोड़ थी जिसमें से ₹1.83 करोड़ के 10 खाते बंद हो चुके हैं, एसएमए-1 एवं एसएमए-2 में ₹14.04 करोड़ के कुल 11 खाते वर्गीकृत हो गये और ₹60.00 करोड़ के कुल 15 खाते स्टैंडर्ड होकर सामान्य परिचालन कर रहे हैं। कुल खातों की संख्या 78 से कम होकर 56 तक आ चुकी है। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि लगातार अनुश्रवण से पीएसए खातों की संख्या को कम किया जा सकता है। टीम भोपाल का यह कार्य दूसरे क्षेत्रों को भी अवश्य प्रोत्साहित करेगा।

सीएमआरडी पोर्टल पर उपलब्ध पीएसए के सभी खातों की सूची को क्षे.का. स्तर पर शाखा वार, रकम वार अलग कर शाखाओं को भेजी जाती है। बार बार खातों को पीएसए सूची में लानेवाले सामान्य कारणों जैसे मूल राशि का अतिदेय होना, चेक बाउन्स होना आदि पर शाखाओं को विशेष मार्गदर्शन दिया जाता है और माह के अंत में स्ट्रेस में आने वाले खातों को कम किया जाता है। परिणामस्वरूप पिछले 4-5 माह में कोई भी पीएसए खाता एनपीए में वर्गीकृत नहीं हुआ है तथा दबावग्रस्त आस्ति में खातों का अंतरण भी कम हुआ है।

गुरतेज सिंह
क्षे. का., भोपाल



‘मॉकरन 110 प्रतिशत नहीं होगा’ विसनगर शाखा

मॉकरन 110 प्रतिशत नहीं होगा- विसनगर शाखा

क्षेत्रीय कार्यालय, महेशाणा की शाखा विसनगर, जो अनुश्रवण के नए आयाम पर है, यह मुझे इस संवाद के बाद पता चला, चूंकि मैं नया-नया क्षेत्रीय कार्यालय में आया था, दिन प्रतिदिन के अनुगमन में सभी शाखाओं से बात होती थी, इसी दैनिक अनुगमन के दौरान विसनगर शाखा के शाखा प्रबन्धक श्री जिनेश पटेल को फोन किया। मैंने कहा, “महोदय, दबावग्रस्त खातों की संख्या काफी है, थोड़ा इस पर भी अनुगमन किया कीजिये,” उनकी तरफ से जवाब आया, “श्रीमान, मैं विसनगर शाखा से बोल रहा हूँ और हमारे यहाँ पर 10 से कम खाते दबावग्रस्त में हैं, जिनमें से 5-6 नियमित भी हो गए हैं, बाकी 2-3 दिनों में मैं नियमित कर दूंगा.” संवाद खत्म हुआ, लेकिन मेरी जिज्ञासा बढ़ गयी कि कैसे विसनगर में इतने कम तनाव खाते हैं, हमेशा ही इतने कम होते हैं या इसी महीने हैं? इस क्रम में मैंने विसनगर शाखा के दबावग्रस्त खातों की पिछले 12 महीने की सूची निकाली। देखने पर पता चला कि अनुश्रवण पर उनके द्वारा की गयी मेहनत झलक रही थी क्योंकि कुल आस्ति की तुलना में तनाव खाते नगण्य ही थे और वो भी पहले सप्ताह में नियमित हो जाते थे।

उनकी तरफ से हर महीने के अंत में आने वाला वो अनुस्मारक जो इसका शीर्षक बनने के लिए पूर्णतः उपयुक्त है ‘अगले महीने मॉकरन 110 प्रतिशत नहीं आएगा’ अपनी मेहनत पर होने वाले भरोसे को और भी कड़ा कर देता है।

उनका इतना अच्छा अनुश्रवण देखकर मैंने उनको एक दिन पूछ ही लिया कि “महोदय, आप अनुश्रवण पर इतना अच्छा कार्य कैसे करते हो?”

उनका जवाब था, “इन दबावग्रस्त खातों के लिए निकाला हुआ आधा घंटा, जीवन के तनाव को काफी हद तक कम कर देता है” (हँसते हुए)।

मैंने भी पूछा, “वो कैसे?” तो उन्होंने उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया, जिससे वो दबावग्रस्त खातों को कम से कम रखने में सक्षम हुए।

ऋण खाते 2 ही प्रकार के होते हैं, मियादी और चालू खाते। खातों के हिसाब से कुछ रिपोर्ट निकाल लेता हूँ, वो इस प्रकार है।

1. अतिदेय सूची (मियादी खातों के लिए)
2. अपर्याप्त आवर्त (चालू खाते)

सबसे पहले इन सब की सूची सिस्टम से निकाल लेता हूँ, फिर जिसके भी संपर्क सूत्र होते हैं, वरीयता से उसे दूरभाष से संपर्क करता हूँ, चूंकि मैं गुजराती हूँ तो उनको सही से, जिसमें समझना चाहे, समझा देता हूँ। इसी क्रम में किसी के संपर्क सूत्र नहीं होते हैं तो, कोशिश करता हूँ कि उसके प्रत्याभूतिकर्ता से बात करके, इस बात को उधारकर्ता तक पहुंचाया जाये।

एक घंटे के बाद अपने ऋण अधिकारी से भी दबावग्रस्त सूची द्वारा संपर्क करवाता हूँ, इन सब से हम दोनों निश्चय करते हैं, किसके घर जाके दबाव बनाना होगा और हम ये सब पहले सप्ताह में ही कर लेते हैं।

हमारा एक ही लक्ष्य रहता है, खाता हो नियमित, चाहे उधारकर्ता, प्रत्याभूतिकर्ता या दोनों पर समयानुरूप दबाव बनाया जाये।

संक्षिप्त में, मैं यही कहना चाहता हूँ, विसनगर शाखा प्रबन्धक का एक ही विचार है पैसा दिया है तो लेना तो है ही।

जिनेश आर. मोदी
क्षे. का., महेशाणा





प्रावधान

सामान्य प्रावधान:

मानक आस्तियां:

| क्षेत्र | प्रावधान % |
|---|------------|
| कृषि और एसएमई क्षेत्र | 0.25% |
| वाणिज्यिक रियल एस्टेट (सीआरई) | 1.00% |
| वाणिज्यिक रियल एस्टेट के लिए अग्रिम-आवासीय आवास क्षेत्र | 0.75% |
| आवासीय ऋण(टिज़र दर पर) | 2.00% |
| अन्य | 0.40% |
| मानक पुनर्गठन आस्तियां | 5.00% |

विशिष्ट प्रावधान:

1) सब स्टैंडर्ड आस्तियां:

- * कुल बकाया ऋण का 15%
- * यदि ऋण असुरक्षित है, तो कुल बकाया ऋण का 25%

2) संदेहपूर्ण आस्तियां:

| अवधि | सुरक्षित | असुरक्षित |
|---------------|----------|-----------|
| 1 साल तक | 25% | 100% |
| 1 से 3 वर्ष | 40% | 100% |
| 3 साल से अधिक | 100% | 100% |

3) हानि संपत्ति:

राइट ऑफ आस्तियों के लिए 100% प्रावधान किया जाना चाहिए. डिफॉल्ट फंड के अलावा, बैंकों को भविष्य के दायित्वों (जैसे पेंशन, समयपूर्व सेवानिवृत्ति या कानूनी कार्यवाही) को कवर करने के लिए भी प्रावधान करने की आवश्यकता होती है. बैंक की बैलेंस शीट में इन फंडों को देयता पक्ष में प्रावधान शीर्षक के तहत मान्यता प्राप्त है.

इसके अलावा नियामक दबावग्रस्त आस्तियों पर प्रावधान के संदर्भ में सोच रहा है. इसलिए यह देखने की कोशिश की जानी चाहिए कि ऋण एनपीए श्रेणी में ना आए और समय-समय पर किश्त और ब्याज की वसूली करके खातों के स्वास्थ्य को मानक श्रेणी में बनाए रखा जाएं.

सभी कंपनियों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उनके पास अंतिम संपत्ति की हानि और संभावित दायित्वों दोनों को कवर करने के लिए आवश्यक धन है जो अभी भी मटेरियलाइज्ड नहीं हुए हैं. इन फंडों को आमतौर पर प्रावधानों के रूप में जाना जाता है. बैंक के मामले में, व्यापार की आंतरिक संरचना के कारण, डिफॉल्ट प्रावधान परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाला एक प्रमुख तत्व है. इससे भी महत्वपूर्ण बात है बैंक का मुनाफा.

बैंक की मुख्य गतिविधि ग्राहक जमा (देयता) के माध्यम से धन जुटाना और इन्हें या अन्य ग्राहकों को ऋण (संपत्ति) प्रदान करना है. लेकिन बैंकों के पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि जो धन उधार दिया गया है उसे वे वापस प्राप्त कर पाएंगे. उधारदाताओं को हमेशा इस बात का जोखिम रहता है कि उधारकर्ता डिफॉल्ट या अपने भुगतान दायित्वों में पीछे रह सकता है. इसे ऋण जोखिम के रूप में जाना जाता है.

जब भी कोई बैंक ऋण देता है, तो उसे उस ऋण की डिफॉल्टता को कवर करना होता है. दूसरे शब्दों में, बैंक के लाभ और हानि खातों में ऋण जोखिम को कवर करने के लिए दो प्रकार के प्रावधान शामिल हैं: ऋण आबंटन के समय किए गए सामान्य प्रावधान और ऋण चूक को कवर करने के लिए विशिष्ट प्रावधान या ऋण जोखिम.

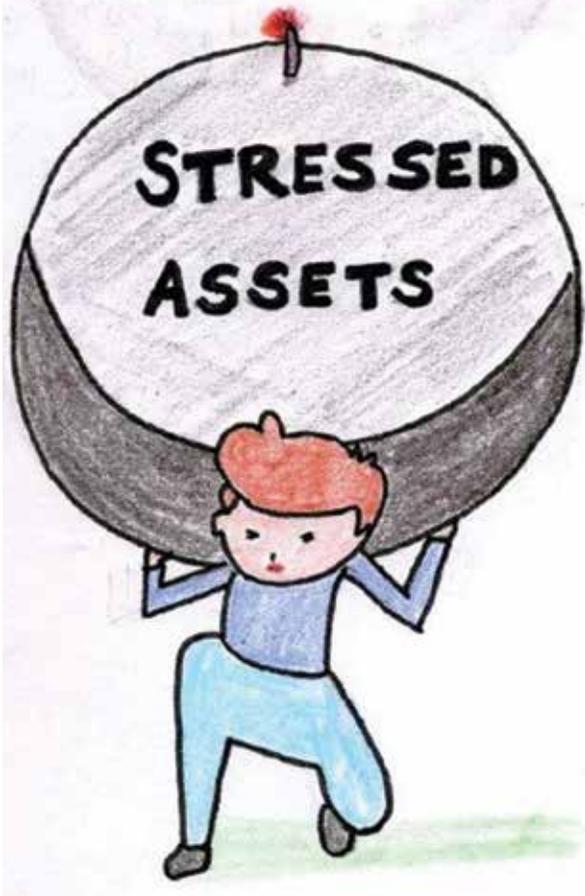
संक्षेप में, ऋण दाता बैंक को अपनी संपत्ति में, जो गैर निष्पादित आस्तियों में बदल जाती है, संभावित राइट-ऑफ को कवर करने के लिए अपनी बैलेंस शीट में एक डिफॉल्ट फंड (प्रावधान) स्थापित करना पड़ता है. एक बार प्रावधान फंड के रूप में मान्यता प्राप्त होने के बाद यह प्रावधान फंड 'ऋण और ग्राहक अग्रिम' के तहत बैलेंस शीट के संपत्ति पक्ष पर दर्शाया जाएगा.

संपत्ति पक्ष पर प्रावधान मुख्य रूप से ऋण परिसंपत्तियों की हानि के कारण होता है और इसे नियामक आरबीआई ने बकाया ऋण के % के रूप में निर्धारित किया है.

वर्तमान में मानक, सब स्टैंडर्ड, संदिग्ध और हानि आस्तियों के लिए निम्न मानदंडों का प्रावधान है:



शिवेंद्र नारायण त्रिपाठी
के.का., मुंबई



गुणवत्तापूर्ण आस्तियों में वृद्धि और खातों को एनपीए से बचाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम

से हस्ताक्षरित समस्त वांछित दस्तावेजों को पूर्णतः भरकर प्राप्त करने चाहिए एवं इनका नियमानुसार क्रेडिट प्रोसेस ऑडिट भी तत्काल किया जाना चाहिए. इन दस्तावेजों से संबंधित ग्राहक की यूनिट का निरीक्षण करना भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए. तदोपरांत प्राथमिक/संपार्श्विक प्रतिभूतियों पर चार्ज क्रिएट किया जाना चाहिए.

भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशानुसार यदि ऋण खातों में एक दिन की भी मूल राशि या ब्याज की राशि देय तारीख से बकाया है तो ये ऋण खाते एस एम ए खातों की श्रेणी में आ जाते हैं. अतः सर्वप्रथम हमें इस तरह के खातों की पहचान कर पूर्ण प्रयास के साथ अनुश्रवण सुनिश्चित करना चाहिए ताकि इस प्रकार के खातों को एन.पी.ए. श्रेणी में आने से रोका जा सके.

हमारे बैंक द्वारा विकसित सी.एम.आर.डी. पोर्टल में इस प्रकार के खातों की पहचान के लिए क्रमशः तीन लिंक्स एस.एम.ए.0, एस.एम.ए.1 एवं एस.एम.ए.2 दर्शाए गए हैं. यदि ऋण खातों का एस.एम.ए.0 स्तर से ही उचित एवं कड़ाई से अनुश्रवण सुनिश्चित किया जाए तो निश्चित रूप से बैंक के ऋण खातों के एक बड़े भाग को एन.पी.ए. होने से बचाया जा सकता है.

इस प्रकार बैंक द्वारा विकसित सी.एम.आर.डी. पोर्टल ऋण अनुश्रवण के लिए एक बहुत ही उपयोगी एवं यूजर फ्रेंडली सॉफ्टवेयर है क्योंकि इसी पोर्टल के सही इस्तेमाल से शाखाएँ-जिन खातों का रिव्यू, लीगल ऑडिट कम्प्लायंस लंबित है और जिन खातों की एमसीएमआर उच्च कार्यालय में भेजनी है, DEFAULTER लिस्ट आदि की जानकारी प्राप्त कर सकती है और समय पर उचित कदम उठाकर खातों को खराब होने से बचाया जा सकता है.

यह बात सर्व विदित है कि यदि बैंक के सभी पैमानों से गुजरते हुए कोई ऋण स्वीकृत किया जाता है तो उस ऋण खाते की एन पी ए होने की संभावना बहुत ही कम होती है. लेकिन कई बार जानकारी के अभाव में शाखाओं द्वारा बैंक के दिशानिर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित नहीं की जाती है जिसके कारण उक्त ऋण खाता शीघ्र ही एन.पी.ए. श्रेणी में आ जाता है. अतः बैंक शाखा द्वारा अपनी आस्तियों में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु निम्न उपाय एवं सावधानियाँ बरतने की नितांत आवश्यकता है:-

किसी भी ऋण की स्वीकृति से पहले शाखा द्वारा बैंक नियमानुसार उचित ड्यू डिलिजेंस किया जाना चाहिए एवं ग्राहक से ऋण संबंधी समस्त दस्तावेज प्राप्त कर उनकी गहनता से जाँच की जानी चाहिए. इस जाँच के दौरान बैंक के कानूनी सलाहकार से उक्त दस्तावेजों के विषय में उचित सलाह लेना भी आवश्यक है.

ऋण स्वीकृति के बाद ऋण वितरित करने से पहले शाखा द्वारा बैंक नियमानुसार ग्राहक

ऋण वितरित करने के पश्चात शाखा द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बैंक द्वारा दी गई राशि का उचित उपयोग हुआ है.

शाखा द्वारा बैंक नियमानुसार समय-समय पर ऋण खातों की प्रतिभूतियों का निरीक्षण किए जाते रहना चाहिए एवं खातों का ऑडिट भी समयानुसार होना चाहिए.

शाखा द्वारा रुपए दस लाख के ऊपर के समस्त ऋण खातों की मासिक ऋण अनुश्रवण रिपोर्ट बनाई जानी चाहिए एवं तनावग्रस्त खातों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हेतु आस्ति गुणवत्ता अनुश्रवण कमेटी में चर्चा करके इन खातों की आस्ति गुणवत्ता में अधिक से अधिक सुधार करने हेतु निरंतर प्रयास करने चाहिए.

निरंतर ऋण खातों का अनुश्रवण करते हुए हमें सर्वप्रथम उन ऋण खातों की पहचान करनी चाहिए जो कि बहुत ही सामान्य कारण के चलते एस.एम.ए. श्रेणी में आ जाते हैं. ऐसे खाते जरा सी लापरवाही या चूक के कारण भी एन.पी.ए. श्रेणी में आ जाते हैं. चूंकि



अशोक कुमार सिरोही
क्षे.का., दिल्ली (उत्तर)



CREDIT MONITORING NEED OF THE HOUR

Early Detection of Financial Distress



The robustness of a country's financial framework provides valuable insight into consumption and end-use patterns prevalent in the economy. Further, it aids in assessment of living standards prevailing within the nation. If the banking system is plagued with high delinquency levels in the form of Non-Performing Assets (NPAs), the same points to signs of financial distress amongst borrowers that may allude to inefficiencies of credit underwriting process (borrower selection), monitoring process, a major downturn of macroeconomic factors or a combination of the aforesaid.

"Know thy client- the devil is in the detail"

The most vital rule for safeguarding the banking assets entails understanding the client-starting from loan origination till the end of debt obligation.

A financial institute or company subjects prospective proposals to a generally acceptable credit appraisal process. The same mainly hinges upon the borrower's creditworthiness and capacity to payback or re-finance the loan at the time of maturity. A major premise behind it entails the borrower's credit integrity to remain constant as, or better than, at the time of extension of credit facility(es).

Risk management is an integral aspect of any business as most financial decisions centre around the corporate cost of risk. It is of particular relevance wherein major public investments of the incumbent government are rolled out through public-sector banking channels. The ability to predict a business failure is particularly important from both social and investor's viewpoint. The same is a pronounced indication of resource misallocation. Although corporate ethics and governance have incorporated mechanisms to prevent financial distress, early prediction of distress through monitoring is cardinal for investors or lending institutions to protect their

financial assets/investments.

Why monitoring has become an urgent requirement?



Regular monitoring is undertaken to ensure safety of the financiers' investment. After the loan is approved, the bank has to retain the borrower until the loan becomes due, which in some projects with longer gestation timelines, might not be for several years. During this period, the borrower is likely to undergo transition through different credit profiles, for example due to financial management decisions, industry trends or economic environment. Despite sound initial due diligence, things may go wrong before loan repayment commences. A good monitoring program, shall address, early identification of red flags that suggest critical aspects of the borrower's deteriorating financial health. Being able to detect these warning signals is critical, as it allows the bank to opt for steps for redressal of the situation. The bank may amongst a host of remedial actions, choose to re-price the loan to charge for the additional risk undertaken or in more detrimental circumstances, recall the advance made. Either way, if not captured early enough, the bank's options for course correction become more limited.

The old adage - 'Time is Money' is seldom true while dealing with underperforming assets in a loan portfolio.

'Bad news doesn't get better with age' is another relevant truism.

Banks also has to instill robust risk management processes to ensure proper underwriting standards and to put an effective monitoring regime in place. Timely monitoring ensures that a financial institution is not simply meeting bare-minimum regulatory compliances, but also adequately quantifying its risk appetite followed by calculating its capital requirements, consequently ensuring sufficient capital adequacy. It is self-evident that the most obvious reason to monitor a credit portfolio is

to avoid losses in the form of bad loans. The same can erode the bank's profitability over a gradual period of time if left unchecked.

Effective borrower monitoring is therefore, necessary to detect loans that are likely to become stressed and which amongst them might default and lead to financial loss. All banks, make losses on their loan portfolios to some extent, which is only natural when an element of risk is involved. However, the loan loss rate reflects on the lending institution itself. and determines how much shareholder's equity is needed to ensure avoidance of over-leveraging. Extensive losses may lead to a run on the bank by its shareholders on account of poor value generation. A more sophisticated monitoring approach, channeled vide the regulator, may aid in discriminating between a good risk that enhances the shareholders' investment value as opposed to a bad one, that may further dwindle it

An Early Warning System Framework

Our bank's Credit Monitoring and Recovery Department (CMRD) has recently introduced early warning signal-inform of Early stress signals (ESS) detection framework. It is a rule-based system to identify borrowers at risk of distress or default. The system has integrated a reliable database and rigorous statistics along with "soft" success factors such as collaboration among monitors, underwriters and the front line. Identified cases are assigned to different watch-list categories, depending on the nature and severity of the risk. Assignment to a watch-list category triggers a predefined set of risk-mitigating actions, including some that are mandatory and others that are optional. This model applies a micro-macro perspective to measure entity's vulnerability.

These models are estimated to derive probabilities of defaults, however a policy maker needs to know when

to act. It is not fanciful to imagine a loan monitoring system that can apply machine learning techniques to borrowers' financial data, alongside macro and micro economic information, behavioral metrics, and relevant industry key indicators to identify which borrowers might face financial distress. The use of non-traditional data for credit risk assessment is gaining traction in sections of lending. With an integrated monitoring and rating system and availability of historical data, significant analytics can now be performed to determine the effectiveness of financial and non-financial covenants. Early detection and identification of warning signals aid in reduction of the NPA-degenerative phenomenon.

Banks, that have sound risk-based systems to analyze and make adjustments to their loan portfolio ex-post, will be more willing to accept risk at the portfolio level ex-ante. To do so, they must transform their processes quickly and comprehensively, and develop a system for effectively monitoring risky accounts. This means gradually re-engineering monitoring processes from "quarterly or annual" to a continuous, "day-on-day" or "event-based" monitoring mode. Credit Monitoring Policy of the bank dictates the Credit Monitoring Strategy. These policies spell out the target markets, risk acceptance/avoidance levels, risk tolerance limits, prefer levels of diversification and concentration, credit risk measurement, monitoring and controlling mechanisms. The ever-improving monitoring management practices shall result in stronger and more-liquid banks. It should be noted that risk aversion is not the solution, instead acceptable risk in line with a financial institution's risk appetite is.



Ruchi Yadav
SARAL, Jaipur

Statement about Ownership and Other Particulars concerning "Union Dhara"

Form IV (See Rule-8)

- Place of Publication:**
Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
- Periodicity of Publication:** Quarterly.
- Editor, Publisher and Printer's name, nationality and address:**
DR. SULABHA KORE, Indian, Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
- Name and addresses of Individuals who own the newspaper:**
Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021

DR. SULABHA KORE, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Dr. Sulabha Kore
Signature of Publisher

March, 2019.



On 12.03.2019, 'UniOne Foundation' carried out Tree Plantation drive at V.K. Krishna Menon Academy & Junior College, Borivli, Mumbai. V.K. Krishna Menon Academy is run and managed by 'The Borivli Malayali Samajam' which is a registered Charitable Organization with the main objective of Promoting Education, Providing Medical Relief & extending Social Service. The Samajam lauded the initiatives undertaken by UniOne Foundation and thanked them for choosing their organization for carrying out Tree Plantation drive at the school premises.

UniOne is a Social Foundation formed with an intent i.e. 'United for a Good Cause' run by wives of Executives of Union Bank of India and has been in the forefront in carrying out social activities pertaining to upliftment of the needy and poor.

My Experience as an UniOne Member

A large section of our society is deprived of even the basic necessities of life like food, clothing, shelter, basic education, medical facilities, etc. The objective of Uni-One Foundation is to support them.

During my association with Uni-One, under the able leadership of Mrs. Sathyavati Rai, Uni-One donated water coolers and distributed school bags to children of 'V.D. Indian Society for Mentally Retarded'. Financial assistance was extended to the children of 'Bal Asha Trust', a home for destitute children apart from other charitable programs conducted by Uni-One.

While conducting these programs, I felt immensely happy to see the smile on the face of the children. All these programs give us a lot of satisfaction which encouraged us to do more and more for the society.

While doing these activities, I am sure that despite their household commitments, our future generations have also inculcated the sense of contribution to the society and get ahead of not only others but also themselves.

These activities were done with a nice mixture of cultural activities which made us enjoy them to fullest.

Thanks for the co-operation and love and affection showered on Uni-One members and wish everyone good wishes.

Suniti G. Padalkar
w/o Shri G.R. Padalkar
GM (DFB & IBD), C.O.



AAHAN The Child Prodigy



It is observed that 'mathematics' is the most unfavourable or nightmarish subject for most of the school kids, especially those in lower grades. But there are a few sharp minds who solve the mathematical problems within a few seconds while a few more, even challenge machines like

calculators/mini computers etc. with the dazzling speed with which they juggle with the numbers and arrive at the solutions within seconds. Meet Master **AAHAN**, son of Smt. Mazzima B. Sontakke, Asst. Manager of Jaripatka Branch under Regional Office, Nagpur - the ABACUS KID! He plays with numbers by just manipulating them. He is just a 11 year old kid.

Let us know something about Abacus! Primarily invented in China around 2500 years ago, Abacus was used for calculating numbers through basic arithmetic system in ancient times. When a child works on abacus it uses both its hand to move the beads. The finger movement of both hands activates the sensors of brain, the right hand co-ordinates with left brain and the left hand co-ordinates with right brain. This facilitates the functioning of 'The Whole Brain'. The abacus gives blind and visually impaired students a tool to compute mathematical problems.

A student of N.K. Academy, Koradi Road, Nagpur, Aahan earned his first Gold Medal in Maths Olympiad when he was a first standard student followed by a silver in the Science Olympiad in 3rd standard. He took the Abacus challenge in 2016 and successfully stood 3rd in National Competition in Sip Abacus in 3rd level at Mumbai in 2016. His winning campaign continued and he stood 2nd in Regional competition from Vidarbha in 5th level Vidarbha Region in 2017. He also captured 3rd rank in National Competition of Sip Abacus (level 5th) held at Coimbatore in 2017. In 2018, he was the Champion in Centre Competition (level 8) Sip Abacus at Nagpur, followed by winning the 'Regional Prodigy', Sip Abacus (level 8th) of Vidarbha region. Later he bagged the 2nd position in National Prodigy 2018, Sip Abacus, level Grand Master A in Hyderabad. Finally in November 2018, he clinched the 'International Performance Award' Sip Abacus, International Prodigy (Grand Master A level) held at Colombo, Sri Lanka from among the contestants of 10 countries.

Union Dhara wishes this Abacus Kid 'All The Best' in his future mathematical endeavours!!

PAULOMI The Performer



Ms. PAULOMI, daughter of Mr. Utpal Chatterjee, SWO 'B', Camac Street Chowringhee Road Branch, Kolkata is a musically inclined soul.

This B.A. final year student of Scottish Church College, Kolkata is trained in Indian classical dance

forms - Bharatnatyam and Kathak since her childhood and is performing on stage since the age of 6. Recalling her childhood, she affirms that as a kid she used to dance whenever she heard music and this spurred her mother to take her to a local dance academy and then there's been no looking back. 'Kathak', according to her, basically refers to the art of story telling or 'katha' while 'Bharatnatyam' traditionally has been a solo dance performance exclusively by women. It is noted for its fixed upper torso, legs bent or knees flexed out combined with spectacular footwork i.e. sign language based on gestures of hands, eyes and face muscles. Stylistically, the kathak dance form emphasizes rhythmic foot movements, adorned with small bells (ghungroo) and the movement harmonized to the music. Under the able guidance of her guru, Ms. Sangeeta Bhattacharya, she honed her dancing skills.

An important milestone for her was when her team got selected in the top five in Xavotsav 2018 (where she was the choreographer). In choreography, **Ms. Mamata Shankar**, the famous actress known for her work in Bengali cinema, a dancer and choreographer is her biggest inspiration.

Padma Shri Shovona Narayan, the famous recognized Indian Kathak dancer (disciple of Birju Maharaj); **Padma Bhushan Mallika Sarabhai**, the noted exponent of Kuchipudi & Bharatnatyam classical dance forms, choreographer, actress, writer & social activist and **Padma Shri Madhuri Dixit Nene**, the famous bollywood actress, producer & television personality with infectious smile and excellent dancing skills are her role models.

This avid dancer is equally interested in playing guitar, painting and travelling. She aspires to create her own dance troupe. She has also bagged scholarship for her academic excellence.

Union Dhara wishes her all the best in her career!!

बधाई



मास्टर दैविक, सुपुत्र श्रीमती प्रगति वीरवाल, एसपीएल निम्बाहेड़ा शाखा, उदयपुर ने दिनांक 13 से 17 फरवरी 2019 के दौरान जापान कराटे असोसिएशन द्वारा मुंबई में आयोजित 'नेशनल कराटे चैम्पियनशिप' में रजक पदक जीत कर ब्लैक बेल्ट प्राप्त किया।



कुमारी सुरभि, सुपुत्री श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल, क्षे.का., रायपुर को एमबीए (एचआर) में प्रवीण सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर दि. 04.03.2019 को छत्तीसगढ़ राज्य की राज्यपाल श्रीमती नंदीबेन पटेल के करकमलों से तथा छत्तीसगढ़ राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री श्री उमेश पटेल; वरिष्ठ पत्रकार श्री ओम थानवी; कुलपति श्री मानसिंह परमार एवं रायपुर शहर के महापौर श्री प्रमोद दुबे उपस्थिति में स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।



मास्टर प्रज्वल, सुपुत्र श्री नीरज मीणा, शाखा प्रबन्धक, भलगाम शाखा, राजकोट ने 8 से 10 मार्च 19 के दौरान द्वारका में आयोजित गुजरात राज्य स्तरीय वोडो-काई कराटे प्रतियोगिता 19 में कांस्य पदक जीता. मई 19 में आयोजित होनेवाली नैशनल वोडो-काई कराटे प्रतियोगिता 19 के लिए उनका चयन हुआ है।

हमें गर्व हैं



हमारी यशोदा नगर शाखा, कानपुर के खजांची श्री राजेश कुमार ने अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए ग्राहक द्वारा भूलवश अधिक जमा की हुई ₹ 60,000/- की राशि ग्राहक को लौटा दी।



हमारी सगुना मोड़ शाखा, क्षे.का. पटना के एस.डब्ल्यू.ओ (ई) श्री रमेश सिंह ने अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए ग्राहकों द्वारा भूलवश अधिक जमा की हुई लगभग ₹ 94,700/- की राशि ग्राहक को लौटा दी।

चरक का कोना



अनेक रोगों की दवा बावची

बावची, बाबची, बकुची या बाकुची नामों से जाने जानेवाले इस औषधि के छोटे-छोटे पौधे, वर्षा ऋतु में समस्त भारतवर्ष में अपने आप उगते हैं. इस पर शीतकाल में पुष्प लगते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु में पुष्प फलों में बदल जाते हैं. बावची स्वाद में थोड़ी मीठी, कड़वी और तीखी होती है. इसके बीजों में एक उड़नशील तेल, एक रेजिन, एक स्थिर तेल तथा दो क्रिस्टलाइन तत्व 'सोरोलेन' पाये जाते हैं. फल के छिलके से 'सोरोलिडीन' तत्व भी प्राप्त किया जाता है. बावची के 'कुष्ठघ्न' एवं 'कृमिघ्न' गुण इन्हीं दोनों तत्वों के कारण होते हैं. यह ज्वर, कृमी, कुष्ठ, बवासीर, खांसी, सूजन, पाण्डुरोग, वमन, दाँत के कीड़े, चर्म विकारों में गुणकारी है. तो देखते हैं बावची के उपयोग!

* सफेद दाग को दूर करने में बावची का उपयोग सदियों से होता आया है. 6 चम्मच बावची के बीज और 6 चम्मच खाने वाले काले तिल को पीसकर बनाए हुए चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में ठंडे पानी के साथ सुबह नियमित रूप से एक वर्षतक सेवन करने और बावची का तेल सुबह-शाम लगाते रहने से रोग में पूर्ण लाभ होगा.

* थोड़े से बताशे में 5 बूंद बावची का तेल डालकर कुछ दिनों तक खाने से कुष्ठ रोग या कोढ़ या चर्म रोग में आराम मिलता है.

* पेट में कीड़े होने पर रोजाना 1/4 चम्मच बावची के चूर्ण का सेवन करें.

* बावची की जड़ को पीसकर जरा-सी मात्रा में भुनी हुई फिटकिरी मिलाकर सुबह-शाम इससे मंजन करने से दाँत के कीड़े नष्ट तथा दर्द दूर होकर दाँत मजबूत हो जाते हैं. इसके नियमित उपयोग से मसूड़ों की सूजन व दाँतों का पीलापन भी दूर हो जाता है.

* आधा ग्राम बावची के बीजों का चूर्ण अदरक के रस के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है.

* दस्त या पेचिश पर बावची के पत्तों का साग, दही और अनारदाने के साथ सुबह-शाम सेवन करने से राहत मिलती है.

* मुहासे और दाद-खाज रोग को ठीक करने के लिए बावची के बीजों का तेल सुबह-शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते लगाते रहने से बहुत लाभ होता है.

* शरीर में कई जगह गांठें बन जाती हैं जिससे त्वचा खराब दिखने लगती है. बावची के बीजों को पीसकर गांठ पर लेप करने या बांधते रहने से गांठ बैठ जाती है.

* पीलिया रोग में 10 मिलीलीटर पुनर्नवा के रस में आधा ग्राम पीसी हुई बावची के बीजों का चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम प्रतिदिन सेवन करने से पीलिया में लाभ होता है.

* अर्श (बवासीर) में 2 ग्राम हरड़, 2 ग्राम सौंठ और 1 ग्राम बावची के बीज को पीसकर आधे चम्मच चूर्ण की मात्रा में गुड़ के साथ सुबह-शाम सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है.

अनीता भोवे
यूनियन धारा, कें.का.





पुरस्कार और सम्मान AWARDS & ACCOLADES



Our Bank has been awarded the **Finnoviti Award 2019** for '**Hyper Converged Private Cloud Security**' for innovative processes & best practices in Cyber Security under BFSI sector by '**Banking Frontiers**'. The Awards were received by the Bank during 7th **International Trade Fair and Conference on Banking Technology, Equipment & Services** held on 25.01.2019 at IBEX, MMRDA Ground, BKC, Mumbai. The award was received from the jury members headed by Shri M.Narendra, Former CMD, Indian Overseas Bank.

Our Bank won the **Golden Peacock National Training Award** for the year 2019 instituted by the Institute of Directors (IOD), New Delhi. The Award was given away by Dr. Tayeb Kamali, Director General for Education & Training Development at the UAE Ministry of Interior, Govt. of UAE, at a glittering function held at Hotel Habtoor Palace, Al Habtoor City, Dubai (UAE) and was received by Shri. Kalyan Kumar, Principal, Staff College, Union Bank of India along with Shri. Maniram Jithender CEO, DIFC, Dubai Branch. IOD instituted prestigious Golden Peacock Awards for Corporate Leadership & Institutional Excellence which is a hallmark of excellence globally.



On 26.02.2019, our Bank won the **Global Training & Development Leadership Award** announced by **World HRD Congress**, presented by ET Now at the glittering function held at Hotel Taj Lands End, Mumbai. Bank won the awards in three categories viz. Excellence in Training & Development Award (Overall Award for Best Results based Training); Best use of Technology for Training and Best Development Program in Public Sector for Top Management. These awards are in recognition towards the robust Training System of our Bank in place with high quality of global training methods adopted by the Bank. The Award was received by Shri Brajeshwar Sharma, General Manager (HR) & Shri Kalyan Kumar, Principal, Staff College, Bengaluru, Union Bank of India, from Shri Alistair Schofield, Director, MyBrain International Limited, U.K. at a glittering function held at Hotel Taj Lands End, Mumbai.



The Training System of our Bank won "Special Commendation Award" for its Innovative Training Practices in Public Sector Enterprises Category from Indian Society for Training & Development (ISTD) for the year 2018. This Award was received by Dr. Chetna Pandey, Vice Principal, Staff College, Bengaluru from Dr. R. Karthikeyan, National President, Indian Society for Training & Development (ISTD) at the 48th ISTD National Convention held on 02.03.2019 at Tech Mahendra, Hitech City, Hyderabad.





पुरस्कार और सम्मान AWARDS & GALLORE of Union Dhara

फिर एक बार पुरस्कारों का सिलसिला जारी..

'यूनियन धारा' को लगातार 31वें वर्ष असोसिएशन ऑफ बिज़नेस कम्यूनिकेटर्स ऑफ इंडिया (ए.बी.सी.आई.) से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यूनियन बैंक के इतिहास में लगातार आठवीं बार बैंक की द्विभाषिक गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' को सर्वोच्च पुरस्कार 'चैम्पियन ऑफ द चैम्पियन्स' पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 18.01.2019 को 'दी प्रेसिडेंशियल बॉल रूम, होटल विवान्ता बाय ताज, कफ़ परेड, मुंबई' में आयोजित ए.बी.सी.आई. के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. हर्षदीप कांबले, आई ए एस, सचिव (लघु और मध्यम उद्योग) तथा विकास आयुक्त (उद्योग), महाराष्ट्र सरकार के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किये गये। वर्ष 2017-18 के लिए अन्य कॉर्पोरेट प्रतिभागियों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा करते हुए 'यूनियन धारा' ने 'चैम्पियन ऑफ द चैम्पियन्स' ट्रॉफी के साथ-साथ फीचर्स (अंग्रेज़ी) और फीचर्स (भाषा) में एक-एक स्वर्ण; स्पेशल कॉलम (भाषा) में रजत; 'बाइलिंग्वल पब्लिकेशन' और 'स्पेशल कॉलम (अंग्रेज़ी) में एक-एक कांस्य - कुल मिलाकर 06 पुरस्कार प्राप्त किये। साथ ही बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका 'यूनियन सृजन' को 'इंडियन लेंगेज पब्लिकेशन' श्रेणी के अंतर्गत रजत पुरस्कार प्राप्त हुआ।



पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि, डॉ. हर्षदीप कांबले, आईएसएस, सचिव (लघु और मध्यम उद्योग) तथा विकास आयुक्त (उद्योग), महाराष्ट्र सरकार से 'चैम्पियन ऑफ द चैम्पियन्स' ट्रॉफी प्राप्त करते हुए (बायें से) श्री अशोक नायर, मुख्य प्रबन्धक, सीसीडी; श्री रामजीत सिंह, मुख्य प्रबन्धक (राभा); डॉ. सुलभा कोरे, संपादक, यूनियन धारा एवं यूनियन सृजन; श्री राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राभा); श्री ब्रजेश्वर शर्मा, महाप्रबंधक (मा.सं.) और श्री नितेश रंजन, महाप्रबंधक, ट्रेजरी. इस अवसर पर श्री योगेश जोशी, प्रेसिडेंट, ए.बी.सी.आई. भी उपस्थित थे.



'पब्लिक रिलेशन्स काउंसिल ऑफ इंडिया (पी.आर.सी.आई.), बेंगलूरु द्वारा आयोजित 'पी.आर.सी.आई. एक्सिलेंस अवार्ड्स 2019' में 'यूनियन धारा' ने ब्राँज पुरस्कार प्राप्त किया है। दिनांक 16 फरवरी, 2019 को 'मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर, राजस्थान' में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, जयपुर और सुश्री सोनिया चौधरी, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), क्षे.का., जयपुर ने बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण किया।

केंद्रीकृत समाचार



Shri Rajkiran Rai G, Managing Director & CEO, Union Bank Of India, flanked by Shri R.K.Verma & Shri Dinesh Kumar Garg, Executive Directors of the Bank of India at the press conference held in Mumbai on the occasion of announcement of Q-3 Financial Results for the Quarter/ Nine months ended December 31, 2018



On 11.02.2019, Shri Rajkiran Rai G., MD&CEO along with Shri Gopal Singh Gusain and Shri Dinesh Kumar Garg (both Executive Directors) and Shri R. Kandasamy, GM, DIT launched the Digital Solutions: "My CAG App"- Mobile Sales App and "CAG CONSOLE over Internet (End2End Digital Sales Pipeline Management Solution) at Central Office in the presence of Corporate General Managers, FGMs and RHs. Both these digital solutions are 1st's for the Bank and indeed a milestone in our journey to institutionalise and scale-up customer acquisition as part of Vision 2020.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन



Our Bank celebrated International Women's Day with gaiety and fervor at a glittering function held at Trident Hotel, Mumbai on 8th March 2019. On this occasion, Shri Rajkiran Rai G, Managing Director & CEO, extended warm welcome to Dr. Madhura Swaminathan, Director on our Bank's Board and Ms. Zarin Daruwala, CEO, Standard Chartered Bank, India, who were the Chief Guests for the function. A feeling of pride and sense of belongingness amongst the lady employees marked the event. On the occasion of International Women's Day, Union Bank of India felicitated Women Achievers viz. Ms. Pratima Joshi, Social Worker, Ms. Anuradha Prabhudesai, Founder-Lakshya Foundation & Ms. .Komolika Guha Thakurta, Founder-Srijon Foundation

70वें गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन

26 जनवरी, 2019 को देश का 70वां गणतन्त्र दिवस यूनियन बैंक भवन परिसर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. यूनियन बैंक भवन परिसर में हमारे कार्यपालक निदेशक महोदय, श्री राज कमल वर्मा एवं श्री दिनेश कुमार गर्ग द्वारा ध्वजारोहण किया गया. बैंक के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एम.वी.एस.एम. मूर्ति; महाप्रबंधक (मा.सं.) श्री ब्रजेश्वर शर्मा; मुख्य सुरक्षा अधिकारी, ब्रिगेडियर आशुतोष सीरौठिया, सेना मेडल (युद्धरंजीत); बैंक के कार्यपालक अधिकारी, स्टाफ सदस्यगण एवं उनके परिवार के सदस्यों ने इस समारोह में भाग लिया. ध्वजारोहण के पश्चात स्टाफ सदस्यों द्वारा देशभक्ति से सराबोर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया. इसके उपरांत विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों एवं परेड प्रतिभागी सुरक्षा रक्षकों को श्रीमती वर्मा व श्रीमती गर्ग द्वारा सम्मानित किया गया. तत्पश्चात सभी उपस्थित स्टाफ सदस्यों एवं अतिथियों को जलपान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया.



समाचार उत्तर



दिनांक 20.02.2019 को आयोजित ऋण वितरण शिविर के दौरान हितग्राही को ऋण वितरित करते हुए श्री राजकमल वर्मा, कार्यपालक निदेशक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई; साथ हैं श्री विनायक वी. टेंभुर्णे, क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल एवं श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर.



दिनांक 20.02.2019 को क्षे. का., इंदौर के कार्मिकों के लिए आयोजित बैठक में विभिन्न कारोबारी मापदंडों के अंतर्गत, उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों को श्री राजकमल वर्मा, कार्यपालक निदेशक द्वारा पुरस्कृत किया गया.



दिनांक 10.03.2019 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में 'दैनिक भास्कर विमन्स ट्रेजर हंट' रैली का आयोजन किया गया, जिसमें हमारे बैंक ने सह आयोजक के तौर पर वित्तीय सहायता प्रदान की. कार रैली का शुभारंभ श्री गुरतेज सिंह, क्षेत्र प्रमुख, भोपाल ने 'फ्लैग ऑफ' कर किया. हमारे बैंक से अरेरा हिल्स शाखा के स्टाफ सदस्य श्री टी.वी.आर. दत्ततारेय की धर्म पत्नी उज्वला राव दत्ततारेय इस कार रैली की प्रथम विजेता रहीं. क्षेत्र महाप्रबन्धक श्री विनायक वी. टेंभुर्णे एवं क्षेत्र प्रमुख, भोपाल श्री गुरतेज सिंह ने विजेता श्रीमती दत्ततारेय को सम्मानित किया.



दिनांक 30.03.2019 को करनाल क्षेत्र की 55वीं शाखा हंसी रोड, करनाल का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए श्री संजय शर्मा, क्षे.म.प्र., दिल्ली; साथ हैं, श्री नवनीत कुमार, क्षेत्र प्रमुख, करनाल एवं अन्य स्टाफ सदस्य और ग्राहक गण.



दिनांक 26.1.2019 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर गोपालबाग शाखा के प्रांगण में झण्डा फहराने के बाद उपस्थितों को संबोधित करते हुए श्री अरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख, जबलपुर.



दिनांक 18.01.2019 को क्षे. का., आगरा के अधीन मथुरा जिला के अंतर्गत तहसील स्टाफ के लिए बैठक का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में श्री रवीन्द्र कुमार, एडीएम (एफ़आर) मथुरा तथा श्री बसंत लाल, सिटी मैजिस्ट्रेट, मथुरा भी शामिल थे. साथ में हैं उनके विभाग के सदस्य एवं श्री के.एस. यादव, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा.



वित्तीय समावेशन के क्षेत्र की PMJY, PMJDY, PMSBY, APY आदि योजनाओं से भोपाल अंचल द्वारा दिए गए योगदान हेतु दिनांक 09.02.2019 को लोनावला में हुई बैठक में प्रशंसा की गयी एवं भोपाल अंचल प्रमुख श्री विनायक वी. टेंभुर्णे को इस अवसर पर शील्ड देकर सम्मानित करते हुए श्री दिनेशकुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक.



दिनांक 18.02.2019 से 28.02.2019 तक आगरा में आयोजित 'ताज महोत्सव' के दौरान दिनांक 22.02.2019 को श्री के.एस. यादव, क्षेत्रीय प्रमुख, आगरा को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए श्री अमित जी, निदेशक, पर्यटन विभाग, आगरा; साथ में हैं श्री ए.एन. सिंह, सहायक महाप्रबंधक, अंचलीय कार्यालय, लखनऊ; श्री गोविंद मिश्रा, सरल प्रमुख, आगरा; श्री बी.एन. पंडा, मुख्य प्रबंधक, क्षे. का., आगरा एवं श्री मुकेश कुमार बामिल, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षे. का., आगरा.



हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियों की रक्षा और संरक्षण के अभियान में कार्यरत 'गर्भनाल-न्यास' की 'इनस्क्रिप्ट की बोर्ड सीखो' कार्यशाला भोपाल के हिन्दी भवन में सम्पन्न हुई, जिसकी अध्यक्षता हमारे अंचल प्रमुख, श्री विनायक वी. टेंभुर्णे ने की. कार्यशाला में माखनलाल चतुर्वेदी, पत्रकारिता; विश्वविद्यालय के डॉ. अनुराग सीठा, आईटी विशेषज्ञ रविशंकर श्रीवास्तव ने भी जानकारी दी. विशिष्ट वक्ता कवि-कथाकार ध्रुव शुक्ल ने इस मुहिम को 'शब्द ब्रह्म' को बचाने की मुहिम बताया.



दिनांक 08.02.2019 को आईटीआई, गोविंदपुरा में आयोजित मेगा कैम्प में वित्त मंत्रालय से भोपाल जिले के प्रभारी अधिकारी श्री सचिन सिन्हा, आईएस, संयुक्त सचिव के साथ बैंकों के वरिष्ठ कार्यपालक एवं जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए. हमारे बैंक से शामिल शाखा के प्रबंधक ने मौके पर हितग्राहियों को चेक प्रदान किया.



दिनांक 22.02.2019 को इंडियन बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी सेमिनार- 'राजभाषा हिन्दी के सरलीकरण' में हमारे क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, भोपाल के अंचल प्रमुख श्री विनायक वी. टेंभुर्णे द्वारा विशेष अतिथि की भूमिका निभाई गयी.



दिनांक 14.02.2019 को संसदीय समिति की आलेख एवं साक्ष्य समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पलवल, हरियाणा की अध्यक्षता में हमारी पलवल शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया जिसमें पलवल शाखा प्रबंधक, श्री ओम प्रकाश चौधरी(वरिष्ठ प्रबंधक) एवं क्षेत्रीय कार्यालय से राजभाषा अधिकारी श्री संजीव कुमार(प्रबंधक, राभा) ने हमारे बैंक का प्रतिनिधित्व किया.



जबलपुर क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं द्वारा स्वच्छ भारत अभियान-स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान दिनांक 30.01.2019 को श्री अरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख, जबलपुर द्वारा नवीन विद्या भवन विद्यालय में विद्यार्थियों को स्वच्छता से संबन्धित जानकारी दी गयी एवं 'स्वच्छ भारत अभियान' में सभी को भागीदारी हेतु प्रेरित किया गया.



दिनांक 3.02.2019 को क्षेत्र.का. इंदौर द्वारा आयोजित ग्राहक बैठक में श्री पी. सत्यनारायण, महाप्रबंधक (मिड कॉर्पोरेट), केंद्रीय कार्यालय; श्री विनायक वी. टेंभुर्णे, क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल, एवं श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर शामिल हुए.



दिनांक 10.01.2019 को 'विश्व हिन्दी दिवस' के अवसर पर यूएलपी भिलाई, चरोदा, अहिवारा शाखा के स्टाफ सदस्यों हेतु राजभाषा एवं बैंकिंग विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.



दिनांक 10.03.2019 को क्षेत्र. का., जबलपुर द्वारा बैंक के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया. इस अवसर पर 'सा रे गा मा पा' की विजेता सुश्री इशिता विश्वकर्मा को सम्मानित किया गया.



दिनांक 11.01.2019 से 13.01.2019 तक आयोजित तीन दिवसीय 'गोरखपुर महोत्सव' में हमारे बैंक ने स्टॉल लगाकर बैंकिंग योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया. गोरखपुर महोत्सव का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक तथा समापन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी श्री आदित्यनाथ द्वारा किया गया. बैंक के स्टॉल का निरीक्षण करते हुये श्री संजय कुमार अग्रवाल, क्षेत्र प्रमुख, गोरखपुर. साथ में हैं. श्री गोविंद चन्द्र प्रधान, उप क्षेत्र प्रमुख, गोरखपुर.



दिनांक 4.02.2019 को क्षेत्र.का., इंदौर द्वारा आयोजित एम एस एम ई आउटरीच (ऋण वितरण) कार्यक्रम में हितग्राहियों को ऋण स्वीकृति पत्र वितरित करते हुए श्री पी. सत्यनारायण, महाप्रबंधक (मिड कॉर्पोरेट), केंद्रीय कार्यालय; साथ हैं श्री विनायक वी. टेंभुर्णे, क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल तथा श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर.



दिनांक 21.02.2019 को श्री संजय शर्मा, क्षेत्र महाप्रबन्धक, दिल्ली के लुधियाना दौरे के दौरान आयोजित शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक में श्री एच.एस. संधु, क्षेत्र प्रमुख, लुधियाना को 'सुड लाइफ बिज़नेस' उपलब्धि हेतु पुरस्कृत करते हुए श्री संजय शर्मा.



दिनांक 31.01.2019 को क्षेत्र.का., रायपुर में स्वच्छता पखवाड़े के दौरान क्षेत्र प्रमुख श्री एम.पी. सिंह की अध्यक्षता में क्षेत्र.का. के परिसर की साफ-सफाई की गई.



दिनांक 26.01.2019 को 70वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर के प्रांगण में क्षेत्र प्रमुख श्री एम.पी. सिंह द्वारा ध्वजारोहण किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

समाचार पूर्व



दि.14.01.2019 को सम्बलपुर क्षेत्र के बराईपालि करेंसी चेस्ट का श्री अतुल कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची द्वारा उद्घाटन किया गया.



दिनांक 08.02.2019 को क्षेत्र.का., मेरठ द्वारा बैंक के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थितों को संबोधित करते हुए श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ.



दिनांक 26.02.2019 को मानसरोवर पैराडाइज़ होटल में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री रोहित श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (नाबार्ड) एवं श्री मृदुल चौधरी, मुख्य विकास अधिकारी (मुरादाबाद) तथा श्री धनंजय सिंह, सहायक आयुक्त (उद्योग) जिला उद्योग केंद्र, मुरादाबाद ने हमारी बैंक की तरफ से एमएसएमई ऋण चेक प्रदान किए; साथ में हैं श्री के एस यादव, क्षेत्रीय प्रमुख, आगरा तथा श्री गोविंद मिश्रा, सरल प्रमुख, आगरा एवं सतीश गुप्ता, जिला अग्रणी प्रबंधक, मुरादाबाद तथा बैंक के स्टाफ सदस्य तथा एमएसएमई हितग्राही.



दि. 10.01.2019 को क्षेत्र.का., सिलीगुड़ी द्वारा 'विश्व हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस उपलक्ष्य में आयोजित 'प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

Shri Gopal Singh Gusain, ED visits Assam :

On 18.02.2019, Union Samriddhi Kendra, Barpeta Road (The First USK of North East India) was inaugurated by our Executive Director Shri Gopal Singh Gusain in presence of Shri M Venkatesh (GM RABD-RBMD) and Shri Ishraque Ali Khan (FGM Kolkata).



Inauguration of 1st USK of North East India, Barpeta Rd.



TABLET DISRIBUTION TO RDOs



At the Staff Meet



The MSME/MUDRA/LCV camp



दिनांक 19.02.2019 को बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स, पटना में पटना क्षेत्रांतर्गत पदस्थ शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री दिनेशकुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक; साथ हैं श्री पी.सी. पाणिग्रही, महाप्रबंधक (वित्तीय समावेशन), के.का., मुंबई; श्री अतुल कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची; श्री जी.बी.त्रिपाठी, क्षेत्र प्रमुख, पटना तथा अन्य गण-मान्य अतिथिगण.



दिनांक 18.01.2019 को सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, सहयोग और संपर्क कार्यक्रम के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ करते हुए श्री जी.बी. त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक, क्षे.का., पटना; साथ में श्री डी. के. पालिवाल, क्षेत्र महाप्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय, पटना; श्री पी. के. अग्रवाल, अध्यक्ष, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, पटना; श्री उमेश कुमार, महाप्रबंधक, जिला उद्योग केंद्र, पटना; डॉ. संधीर कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक, पटना एवं अन्य गणमान्य अतिथि.

श्री दिनेश कुमार गर्ग का रांची दौरा

दि. 20.2.2019 को बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री दिनेशकुमार गर्ग द्वारा रांची क्षेत्र का दौरा किया गया। इस दौरे में उनके साथ थे, श्री पी.सी. पाणिग्रही महाप्रबंधक (वित्तीय समावेशन) एवं श्री अतुलकुमार, क्षेत्र.म.प्र. रांची



‘एमएसएमई आउटरिच कार्यक्रम में महिला स्वयं सहायता समूह की लाभार्थी का वित्तपोषण



कॉन्फ्रेंस में स्थानीय मीडिया को संबोधित करते हुए



‘एमएसएमई आउटरिच कार्यक्रम’ में ऋणधारक को गाड़ी की चाबी मुहैया कराते हुए.



‘निलय एज्यूकेशनल ट्रस्ट ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स’ के कैशलेस कैम्पस का शुभारंभ.

श्री दिनेश कुमार गर्ग का समस्तीपुर दौरा



दिनांक 18.02.2019 को क्षेत्र.का., समस्तीपुर द्वारा समस्तीपुर के स्थानीय ‘नगर भवन’ में वित्तीय समावेशन के तहत आयोजित ‘लोकसंपर्क कार्यक्रम’ का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री दिनेश कुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक; श्री पी.सी. पाणिग्रही, महाप्रबंधक (वित्तीय समावेशन); श्री चन्द्रशेखर सिंह, जिलाधिकारी, समस्तीपुर एवं श्री वरुण कुमार, उप विकास आयुक्त, समस्तीपुर. इस अवसर पर श्री अतुल कुमार, अंचल प्रमुख एवं श्री जी.बी त्रिपाठी, क्षेत्र प्रमुख, पटना भी उपस्थित थे.



यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन के सौजन्य से कल्याणकारी योजना के तहत आयोजित कार्यक्रम में गरीबों एवं असहाय लोगों को कंबल वितरण करते हुए श्री दिनेश कुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक



स्टाफ बैठक को संबोधित करते हुए श्री दिनेश कुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक



प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए.



दिनांक 10.01.2019 को 'विश्व हिन्दी दिवस-2019' के अवसर पर क्षे. का., पटना में आयोजित 'स्वरचित हिन्दी कविता प्रतियोगिता' के विजेता श्री विवेक कुमार, प्रबंधक को पुरस्कृत करते हुए श्री जी.बी. त्रिपाठी, क्षेत्र प्रमुख, पटना तथा निर्णायक मंडल के सदस्य, श्री वीरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लि., क्षे.का. पटना तथा श्रीमती कृष्णा वशिष्ठ, राजभाषा अधिकारी, न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लि. केंद्रीय कार्यालय, मुंबई उपस्थित थे.



दिनांक 14.01.2019 को सिलीगुड़ी क्षेत्र की गेजिंग शाखा का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए श्री ईशराक अली, क्षेत्र महाप्रबंधक, कोलकाता; साथ हैं श्री बैज नाथ सिंह, क्षेत्र प्रमुख, सिलीगुड़ी एवं अन्य मान्यवर.



दिनांक 19.01.2019 को क्षे. का. सिलीगुड़ी द्वारा 'स्वच्छता पखवाड़ा' के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालय के निकटवर्ती इलाकों में क्षे. का., सिलीगुड़ी तथा सभी स्थानीय शाखा के स्टाफ सदस्यों द्वारा साफ-सफाई कर लोगों को जीवन में स्वच्छता के महत्व को बताया गया.



दिनांक 31.01.2019 को स्वच्छता अभियान के दौरान क्षे. का., हावड़ा द्वारा थीम रेसिडेंसी (जहां क्षेत्रीय कार्यालय स्थित है) को 6 कूड़ेदान प्रदान किए गए एवं परिसर के आस-पास के इलाके में भी साफ सफाई की गई. कार्यक्रम का नेतृत्व, उप क्षेत्र प्रमुख श्री शशिकांत प्रसाद द्वारा किया गया.

क्षे. का., हावड़ा के प्रांगण में गणतन्त्र दिवस, 2019 के अवसर पर ध्वजारोहण किया गया. इस अवसर पर श्री ईशराक अलीखान, महाप्रबंधक, कोलकाता; श्रीकुंदनलाल, क्षे. प्र. हावड़ा, श्री शशिकांत प्रसाद, उप क्षेत्र प्रमुख, हावड़ा एवं श्रीमती पूनम सहाय, मुख्य प्रबंधक के साथ-साथ क्षेत्रीय कार्यालय एवं विभिन्न शाखाओं के स्टाफ सदस्यों एवं नागरिकों की उपस्थिति रही.





मिड कॉर्पोरेट शाखा के उद्घाटन के अवसर पर होटल कोर्टयार्ड मैरिएट में ग्राहक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख ग्राहकों की उपस्थिति रही। इस दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री राजकिरण रै जी. ने सभी उपस्थित ग्राहकों से चर्चा की।



बैंक के 100 साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 15.03.2019 को पलासीओ हॉल, होटल सेंटर पॉइंट, रामदासपेठ, नागपुर में आयोजित शताब्दी वर्ष उत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए श्री रेवत कर, सेवानिवृत्त महाप्रबंधक; साथ में हैं श्री जी. के. सुधाकर राव, क्षेत्र प्रमुख, नागपुर तथा श्री उत्पल कर, उप क्षेत्र प्रमुख, नागपुर।



दिनांक 1-2 फरवरी, 2019 को क्षे.का., बड़ौदा में आयोजित 'शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक' में 'करेंट अकाउंट ओपेनिंग कैम्पेन' में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखाओं को पुरस्कृत करते हुए श्रीमती मोनिका कालिया, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद; श्री राजीव कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री रवि शंकर, सहायक महाप्रबंधक (सरल)।



दिनांक 05.01.2019 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री राजकिरण रै जी द्वारा मिड कॉर्पोरेट, अंधेरी शाखा का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में कार्यपालक निदेशक, श्री राज कमल वर्मा; महाप्रबंधक मिड कॉर्पोरेट श्री पी. सत्यनारायण, क्षेत्र महाप्रबंधक, मुंबई डॉ. के. एल. राजू एवं क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (पश्चिम), श्री अमरेन्द्र कुमार भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर यूनियन 24X7 कम्फर्ट का भी उद्घाटन किया गया।



दिनांक 24.01.2019 को क्षे.का., नागपुर ने स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए 'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रतिभागी बच्चों के साथ हैं, क्षेत्र प्रमुख श्री सुधाकर राव; प्रमुख वरिष्ठ विधि अधिकारी, श्री सिंह; मुख्य प्रबंधक, नरेंद्र नगर शाखा श्री बिजली सन्तु एवं अन्य मान्यवर।



विश्व हिन्दी दिवस 2019 के अवसर पर क्षे. का., कोल्हापुर द्वारा श्री वसंतराव जयवंतराव देशमुख हाईस्कूल, कोल्हापुर में 'हिन्दी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।



दिनांक 22.03.2019 को डॉ. मदनेश कुमार मिश्रा, सरकार द्वारा नामित निदेशक ने क्षे.का., बड़ौदा का दौरा किया। निदेशक महोदय की अध्यक्षता में स्टाफ बैठक का आयोजन किया गया एवं एपीवाई तथा वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शाखाओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर श्रीमती मोनिका कालिया, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद भी मौजूद थीं।



क्षे. का., कोल्हापुर एवं कोल्हापुर नगर शाखाओं के स्टाफ सदस्यों द्वारा दिनांक 31.01.2019 को स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान स्टेशन रोड, कोल्हापुर शाखा के समीप स्वच्छता अभियान चलाया गया।



दिनांक 26.01.2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय/क्षे.का. पुणे में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्र महाप्रबंधक श्री एच. सी. मित्तल द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे के क्षेत्र प्रमुख श्री अशोक कुमार दाश, उप अंचल प्रमुख श्री अजय श्रीवास्तव, उप क्षेत्र प्रमुख श्री सुरेश कुंभार सहित क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं के स्टाफ सदस्य एवं उनके परिवार जन उपस्थित थे।



दिनांक 29.01.2019 को क्षेमप्रका, पुणे द्वारा केंद्रीकृत प्रोसेसिंग कक्ष 'यूनियन समृद्धि केंद्र (यूएसके) का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर श्री एम. वेंकटेश, महाप्रबंधक, ग्रामीण एवं कृषि कारोबार विभाग; श्री योगेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक, कारोबार प्रक्रिया परिवर्तन विभाग; श्री एच.सी. मित्तल, क्षेत्र महाप्रबंधक, पुणे अंचल एवं श्री ए. के. दाश, क्षेत्र प्रमुख, पुणे सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।



दिनांक 20.03.2019 को क्षे.का., नागपुर के परिसर में स्टाफ सदस्यों के साथ 'होली मिलन समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री जी. के. सुधाकर राव, क्षेत्र प्रमुख, नागपुर उपस्थित थे।



क्षे.का., नासिक की दोंडाईचा शाखा, धुले के नए परिसर का उद्घाटन कार्यक्रम दोंडाईचा की नगराध्यक्ष माननीय श्रीमती नयनकुंवरजी जे. रावल द्वारा क्षेत्र प्रमुख डॉ. अजित मराठे एवं शाखा प्रमुख श्री बी.एस. ठाकुर की उपस्थिति में दिनांक 22.02.2019 को संपन्न हुआ।



क्षे.का., नागपुर द्वारा सिविल लाइन्स शाखा परिसर में 70 वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ध्वजारोहण समारोह में उपस्थित श्री जी. के. सुधाकर राव, क्षेत्र प्रमुख, नागपुर; श्री उत्पल कर, उप क्षेत्र प्रमुख, नागपुर; श्री अमरनाथ मिश्रा, सहायक महाप्रबंधक, श्री भोला प्रसाद गुप्ता, सहायक महाप्रबंधक, सिविल लाइन्स शाखा; श्री अरविंद कुमार सुसरला, धंतोली शाखा; श्री जैन, सहायक महाप्रबंधक, गांधीबाग शाखा.



‘स्वच्छता पखवाड़ा-2019’ के अंतर्गत दिनांक 30 जनवरी, 2019 को समा शाखा, बड़ौदा द्वारा नवयुग इंग्लिश मीडियम स्कूल में ‘स्लोगन लिखो प्रतियोगिता’ का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत करते हुये श्री शिव दयाल मिश्र, शाखा प्रमुख एवं श्री निशांत दवे, प्रबन्धक (विपणन).

समाचार दक्षिण



दिनांक 06 फरवरी, 2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा कार्यपालकों हेतु आयोजित अंचलीय राजभाषा संगोष्ठी का संचालन करते हुए श्री कृष्ण कुमार, राजभाषा प्रभारी, बेंगलूरु अंचल. इस संगोष्ठी में उप अंचल प्रमुख, बेंगलूरु श्री अजय कुमार (बैठे हुए, बाएँ से प्रथम); क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु श्री आलोक कुमार (बैठे हुए, सबसे दायें) के साथ-साथ सिंडीकेट बैंक के पूर्व मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एस. के. पाण्डेय, सहायक महाप्रबंधक (राभा), (सेवानिवृत्त) भी उपस्थित थे.



दिनांक 25.01.2019 को क्षे. का., मद्रुरै में अग्नि सुरक्षा पर सभी स्टाफ सदस्यों को श्री प्रवीण कुमार एम, क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण की शुरुआत श्री बेन्नी स्टीफन, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा की गयी.

बेंगलूरु क्षेत्रांतर्गत दिनांक 26 जनवरी, 2019 को आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में तिरंगा फहराते हुए श्री एस. एन. कौशिक, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु. इस अवसर पर श्री आलोक कुमार, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु के साथ समस्त कार्यपालक, स्टाफ सदस्य व उनके बच्चे उपस्थित थे.





दिनांक 26.02.2019 को नो.क्षे.का., एर्णाकुलम के अंतर्गत एडापल्ली शाखा के नये परिसर का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा श्री ए. पी. एम. मोहम्मद हनिश, कोच्चि मेट्रो के प्रबंध निदेशक; साथ में श्री ए कृष्णस्वामी उप महा प्रबंधक, नो. क्षे. का. एर्णाकुलम, श्री शाजी, शाखा प्रबंधक, एडापल्ली शाखा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण.



स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 29 दिसम्बर, 2018 को ध्यान कक्ष का उद्घाटन करते हुए श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ.



स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 02 जनवरी से 05 जनवरी, 2019 तक आयोजित संकाय सम्मेलन का उद्घाटन करती हुई उप प्राचार्या, डॉ. चेतना पाण्डेय; साथ में हैं स्टाफ महाविद्यालय के प्राचार्य, श्री कल्याण कुमार.



स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में शताब्दी वर्ष वॉल का उद्घाटन करते हुए श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी.



दिनांक 10 जनवरी, 2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु व नो.क्षे.का., बेंगलूरु द्वारा संयुक्त रूप से 'विश्व हिन्दी दिवस-2019' के अवसर पर स्टाफ सदस्यों के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. हिन्दी व हिंदीतर भाषी दो श्रेणियों में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्र महाप्रबंधक श्री एस.एन.कौशिक ने की. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु श्री आलोक कुमार के साथ कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.



Swatch Bharat Campaign has been conducted in Sri Krishna Vidya Mandir High School, Dwaraka Nagar, Visakhapatnam by our Bank. On this occasion, Mr. KSN Murthy, DGM, RO, Visakhapatnam, Mr. Dayanand Choudhary, DyRH, RO, Vishakhapatnam, Mr KVSSL Narasima Rao, CM (PBOD), RO, Vishakhapatnam seen alongwith staff members of RO, Vishakhapatnam and students of the school.



The Annual Felicitation Function of 75 years Super Senior members of Union Bank Retiree's Welfare Association was held on 16th Feb., 2019 at Amar Hind Mandal Auditorium, Dadar, Mumbai, which was attended by around 200 members. President Shri. R.K. Powar, D.S.Tripathi, Chief Guest (Retd. GM) & now MD, Aadhar Housing Ltd.; O.P. Dua (Retd. GM); Ashok Patil (Dy. Gen. Secretary, AIBRF) were present on the occasion while the retired executives Shri A.B. Bopate, Shri Vivek Kamat, Shri. Dikhole graced the occasion. Shri Dinesh Vengurlekar, Joint General Secretary of State Association and 47 other eligible super senior members were felicitated.

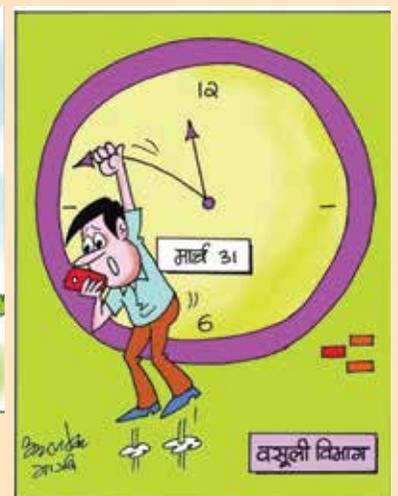
Special CMRD Cartoon stripe for you:



कैसे भी करते बैंक का मृण बुकाने में ही अलार्म है. अबमया तुम्हारी संघर्षों तो अच्छे हो ही जायेंगे, अनजानी होने के जाने मेरे मिर और पेशानी खड़ी हो जायगी.



आलोक भार्गव
दिल्ली से सेवानिवृत्त



हैले, पैसा जल्दी जमा कराओ ... नहीं तो खाता स्न.पी.ए. हो जायगा.



बैंक के 'शताब्दी वर्ष' पर स्लोगन भेजें

हमारी गृहपत्रिका का मार्च 2019 अंक 'बैंक का शताब्दी वर्ष' इस विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता का ऐलान करता है.

हम सभी यूनियनाइट्स को गर्व है कि हमारा बैंक अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है. 100 वर्ष मात्र एक संख्या नहीं है बल्कि यह इससे कहीं ज्यादा है. बदलते परिवेश को दक्षतापूर्वक अपनाने में हमारे बैंक का अपना ही महत्व है. अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप, हमारा बैंक पारंपरिक और रूढ़िवादी बैंकर से आक्रामक और प्रगतिशील बैंकर बनने के लिए बैंकिंग की नई पद्धतियों, ग्राहकों की सेवा के लिए नए तरीके और नई तकनीकियों को अपना रहा है.

कृपया, अपने सोच को एक नई दिशा दें और हमारे बैंक के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी अथवा अंग्रेजी में स्लोगन बनाएं. याद रखें, यह स्लोगन आकर्षक, रचनात्मक होने चाहिए स्लोगन 10 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए.

हमें खुशी होगी यदि आप अपने स्लोगन 'संपादक, यूनियन धारा, 11वीं मंजिल, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई' को प्रेषित करें या uniondhara@unionbankofindia.com पर मेल करें. जल्दी करें, प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 जुलाई, 2019 है.

संपादक

Send Slogan on Bank's 'Centenary Year'

March 2019 issue of our House Magazine is carrying a Slogan Contest on 'Bank's Centenary Year'.

We Unionites are proud witnesses of our Bank entering into its Centenary Year. 100 Years is not just a number but it is really much more than that! Our Bank has a reputation for being agile and adaptive to changing environment. True to its reputation, our Bank has emerged from the traditional and orthodox Banker to the aggressive and progressive Banker by adopting new methods of Banking, new ways of customer services and new technology.

Please put on your thinking caps and create a slogan for our Bank's Centenary Year in Hindi or English. Remember, it should be catchy, creative and should not be more than 10 words!

We shall be happy to receive your memorable masterpieces of slogans at 'The Editor, Union Dhara, 11th floor, Central Office, Mumbai' or by e-mailing your entry to 'uniondhara@unionbankofindia.com' immediately. Hurry up, the last date is 30th July, 2019 !

EDITOR

प्रतियोगिता के परिणाम

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्र. 147 'राजभाषा हिंदी' पर कविता लिखें

पुरस्कार

प्रथम
द्वितीय
तृतीय
प्रोत्साहन

हिन्दी खण्ड

श्री राजकुमार कोरी 'राज़', बेतुल शाखा
सुश्री प्रीति शिरे, क्षे.का., बड़ौदा
श्री भरत परिहार, संसरोद शाखा, बड़ौदा
श्री अमित महतो, राभाकाप्र, के.का.
डॉ. श्याम बाबू सागर, क्षे.का., आगरा

अंग्रेजी खण्ड

पर्याप्त मात्रा में प्रविष्टियाँ प्राप्त न होने की वजह से प्रतियोगिता निरस्त

सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई !!!



छोटे-से राजगिरे में ऐसा क्या है जो व्रत के दिनों में यह सभी को प्रिय है? वनस्पति-शास्त्र के अनुसार भले ही यह 'नॉन-सीरियल', लेकिन उपवास में तो यह अनाज से भी बढ़कर साबित होता है. तभी तो अमेरिका से भारत में आया यह राजगिरा, हमारे उपवास-अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है. इसे 'अमरनाथ या रामदाना' के नाम से भी जाना जाता है. चोलाई या राजगिरा एक पत्तेदार पौधा होता है जिससे एसेशियल ऑयल, आटा, आदि प्राप्त होता है. राजगिरा को दानों या आटे के रूप में आसानी से प्राप्त कर सकते हैं. जब यह फूल जाता है तब इससे खीर या चिक्की बहुत अच्छी बनती है. इसके आटे को गुंद कर पराठा या पूरी बना सकते हैं या हलवे में भी बदल सकते हैं. राजगिरा हल्का होने के साथ-साथ प्रोटीनयुक्त होता है तथा इसमें डाएटरी फाइबर, मिनरल में आयरन, मैग्नीशियम, फोस्फोरस, कॉपर और विशेषकर मैगनीज़ पर्याप्त मात्रा में रहता है. राजगिरा लाइसिन से भरपूर होता है और इसमें ज़रूरी अमीनो एसिड रहता है जो किसी भी सब्ज़ी के प्रोटीन के स्रोत में मिलना मुश्किल है. इसे खाने से हड्डियों की बीमारी नहीं होती क्योंकि इसमें दूध के मुकाबले

दोगुना कैल्शियम होता है. इसलिए जिसे केवल नवरात्रि और गणेश चतुर्थी के दौरान हम याद करते हैं, उसे हमारे नियमित आहार में शामिल किया जाना चाहिए. आइये जानते हैं इसके अन्य गुणों के बारे में...

* इसमें भरपूर मात्रा में एंटी-ऑक्सीडेंट होने से यह अर्थराइटिस, गठिया और सूजन जैसी बीमारियों से राहत देता है. साथ ही आंखों की रोशनी बढ़ाने में सहायक होत है.

* नई सेल्स और नए अंगों के निर्माण में प्रोटीन काफी महत्वपूर्ण होता है. राजगिरे में प्रोटीन मुक्त राजगिरा खाना लाभकारी होता है.

* राजगिरा एकमात्र ऐसा अनाज है जिसमें 'विटामिन सी' होता है.

* फाइबर पर्याप्त मात्रा में होने की वजह से यह पाचन तंत्र के लिए लाभकारी होता है. इसे खाने से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं नहीं होती.

* वेरिजोस वेंस की समस्या में राजगिरा का फ्लेवेनॉइड नाडियों की दीवारों को तथा ब्लड वैसेल्स को मजबूत करता है.

* अगर आपको ग्लूटन एलर्जी होती है तो आप इस टेस्टी आहार को अपनी डाइट में शामिल

करें. इसमें गेहूं के मुकाबले 5 गुना आयरन और 3 गुना फाइबर होता है.

* राजगिरे के आटे में मौजूद मैग्नीशियम माइग्रेन से राहत दिलाता है. यह धमनियों को सिकुड़ने से रोकता है.

* राजगिरा में मौजूद अमीनो एसिड पचने में आसान है और भूख को कम करता है.

* यह मधुमेह रोगियों के लिए उपयुक्त है क्योंकि यह हाइपरग्लेसेमिया को कम करने में मदद करता है. राजगिरा एक अद्भुत औषधि के रूप में भी काम करती है!

लेकिन, गॉलस्टोन और किडनी स्टोन (पथरी) की परेशानी से जूझ रहे लोगों को राजगिरा का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें ऑक्सलेट होता है जिससे किडनी स्टोन बढ़ सकती है. राजगिरा का सेवन करने से कुछ लोगों को एलर्जी भी हो सकती है, इसलिए इसका सेवन करते समय सावधानी बरतें.



सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का.



सामग्री : (4 व्यक्तियों के लिए) धुली हुई उड़द की दाल-1 कप, धुली हुई मूंग की दाल 1/2 कप, किशमिश-3 चम्मच, काजू (बारीक कटे हुए)-1 चम्मच, दही (फेंटा हुआ)-3 कप, इमली-1/4 कप, खजूर-1 कप, गुड़-1/2 कप, तेल-तलने के लिए, भुना जीरा पाउडर-2 चम्मच, काला नमक-स्वादानुसार, नमक-स्वादानुसार, लाल मिर्च पाउडर-1 चम्मच, हिंग-1 चुटकी, कटा हुआ ताजा हरा धनिया पत्ता-2 चम्मच और हरे धनिये की चटनी.

इमली-खजूर एवं गुड़ की मीठी चटनी बनाने की विधि : सबसे पहले गुड़ को एक कप पानी में गला लें. प्रेशर कुकर में खजूर और इमली के बीज निकाल कर, एक कप पानी में डालकर 2 से 3 सिटी लगाए. जब प्रेशर कुकर का प्रेशर निकल जाए, तो खजूर और इमली को ठंडा होने दें, फिर इन्हें मिक्सी में डालकर पेस्ट बना

दही बड़ा

लें और उसे छननी से छान लें. अब इस पेस्ट को एक पैन में डालकर धीमी-धीमी आंच पर पकाएं, इसमें उबाल आने पर गुड़ डालें, 2 चम्मच किशमिश, साथ में थोड़ा-सा नमक, भुना जीरा पाउडर, लाल मिर्च पाउडर डालें, अच्छे से मिला लें और धीमी-धीमी आंच पर 10 मिनट तक पकाएं. फिर गैस को बंद कर लें और इसे ठंडा होने दें. इमली-खजूर की खट्टी-मीठी चटनी तैयार है, इसे ठंडा होने के लिए फ्रिज में रखें.

बड़ा बनाने की विधि : उड़द दाल और मूंग दाल को अच्छी तरह धोकर रात भर के लिए भिगो दें. सुबह पानी निकालकर, उसे दरदरा पीस लें. दाल को पीसते समय बहुत ही कम पानी का प्रयोग करें. बिना पानी के आसानी से पीस जाएं तो और भी अच्छा है. पीसी हुई दाल में स्वादानुसार नमक और एक चुटकी हिंग डालकर बैटर तैयार करें. बैटर को अच्छे से फेंटे अब कड़ाही में तेल को गरम करें और बैटर से बड़े बनाएं. बड़ों को मध्यम आंच पर हल्का सुनहरे भूरे रंग का होने तक तलें. अब

एक पतिले में हल्का गुनगुना गरम पानी लें और तले हुए बड़ों को उसमें डाल दें. 5 मिनट बाद बड़ों को पानी से निकाले और पानी अच्छी तरह निकल जाए, इसके लिए दोनों हथेलियों के बीच रखकर दबाएं.

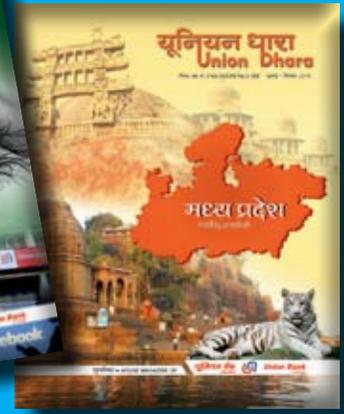
परोसने की विधि: एक प्लेट में 4 से 5 बड़े रखिए तथा ऊपर से 6 से 7 चम्मच फेंटा हुआ दही (स्वादानुसार चीनी डाले और बेहतर स्वाद के लिए दही को ठंडा कर लें) डालें जब तक की बड़े पूरी तरह से कवर हो जाएं. अब ऊपर से 2 चम्मच हरे धनिये की चटनी डालिए, 2 चम्मच इमली-खजूर की मीठी चटनी, दोबारा 2 चम्मच दही, स्वादानुसार नमक, जरा-सा काला नमक, जरा-सा भुना हुआ जीरा पाउडर, जरा-सा लाल मिर्च पाउडर, थोड़ी किशमिश, थोड़े-से बारीक कटे हुए काजू और हरे धनिये से दही बड़े को सजा कर परोसें.



सुधीर प्रसाद
पीबीओडी, कें.का.

आपकी पाती

Opinion Gallery



" Thanks for sending the Union Dhara October/December 2018 issue copy at my residence... happy to read all the articles... very informative....old days were back...when I contributed to union Dhara..... kudos to all of you in Union Dhara! Regards."

Dadlani Ramesh

" I am very thankful to receive our house magazine "Union Dhara" of July-September 2018. It is miracle that you have accepted my single request on Face Book and I received the 'Union Dhara'. Although I have not opened yet cause I received just now but apparently it's seems it would be entirely Hindi issue except few. I am very glad and thankful to you.Again and again so kind of you madam. I wish all the best. Regards."

Madhusudan Rathod

" Madam,
A BIG THANK YOU !
Today I have received Union Dhara July-Sept 2018. Hoping for same action in future. Regards..."

**R D VANIYA
Ahmedabad**

"I was extremely delighted to receive a copy of Union Dhara in the Post. How I wait to receive it. And I devour it in the next ten minutes. It brings back sweet memories of the times I spent in Union Bank and some of the instances shared like the one by Shri Ajit Marathe about his experiences in Jalandhar & Belgaum also made me recall my times in various branches. Keep up the good work Team Union Dhara! MORE POWER TO YOUR PENS ! (or should I say to your Keyboards)."

Daphne DMonte Mumbai

"Dear Editor, thanks for remembering me for this issue. I received the subject issue by courier service. I am very glad that my Bank is still remembering the retired staff . Thanks and regards."

-Dinkar Wagh

"Thank you very much for sending copy of 'Unon Dhara' July - Sept. 2018 by post at my residential address in Bhopal. While in service (Security Dept.) in the Bank, each Union Dhara had been my companion. This kind gesture of yours has helped me to traverse down the memory lane. I congratulate Mr. Mihir Patnaik, ex-DGM(P) for wonderful write up as appeared in this issue 'BLACK FOREST & THE BLUE SKY BEYOND' penned by him and it has given a chance to reminiscence of our association in the North East when he was the Regional Head, Guwahati, Assam. I trust that you will keep me obliged by sending the Union Dhara issues regularly in future too. I look forward for the same. With good wishes..."

A.K. ROY (Bhopal)

फोटो : सीएच माधवी
क्षे.का., विशाखपट्टणम

Union Dhara, R.N.27989/76

टहनियां सूखी सूखी सी फिर भी जीवन रस लिए हुए हैं
माहौल में तंज है, रंज है, तपते सूरज की उगलती गर्मी है
ना हरी पत्तियों की सौगात है, ना पानी का एहसास है
फिर भी सुख लाल रंगों के फूलों से जिंदगी सुखरू है.

डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा, के.का., मुंबई